अली आदिल शाह

का

काव्य-संग्रह

प्रधान संपादक

डा० विश्वनाथ प्रसाद

संपादक

श्रीराम शर्मा

मुबारिजुद्दीन 'रफ़त'

क० मुं० हिन्दी तथा भाषाविज्ञान विद्यापीठ

आगरा विश्वविद्यालय

आगरा

प्रकाशक—
संचालक,
क० मुं० हिन्दी तथा भाषाविज्ञान विद्यापीठ
आगरा विश्वविद्यालय, आगरा ।

प्रथम संस्करण, १९५८ ई०
मूल्य ४॥)

मुद्रक
एच० के० कपूर
आगरा यूनीवर्सिटी प्रेस,
आगरा

अली आदिल शाह का काव्य-संग्रह

अनुक्रमणिका

*सूचना—भूमिका में मुद्रित शीर्षक "दीवान" के स्थान पर "काव्य-संग्रह" होना चाहिए। कृपया यह सुधार कर लें।

प्रस्तावना

"दक्खिनी" को मैं हिन्दी का अभिन्न अंग मानता हूँ। उसके बिना न तो हिन्दी के और न उर्दू के उद्गम, विकास और प्रसार का विवरण पूरा हो सकता है। वस्तुतः हिन्दी ही उत्तर से दक्खिन जाकर और कुछ नये साज-सिंगार से सँवर कर 'दक्खिनी' बन गई। मूल 'हिंदी' या 'हिन्दवी' को ही कालान्तर में एक दूसरा नाम "दक्खिनी" दे दिया गया था। सोलहवीं-सत्रहवीं सदी तक मुस्लिम लेखक और कवि इसके लिए 'हिन्दी जबान,' 'हिन्दी बोल,' या 'हिन्दवी' नाम का ही प्रयोग करते रहे। पर जब १४वीं शताब्दी में दिल्ली के अधिकार से मुक्त होकर दक्खिन स्वतंत्र हो गया, तब वहाँ बहमनी राज्य, विजयनगर साम्राज्य और तदुपरान्त १५वीं सदी में बीजापुर में आदिलशाही, गोलकुण्डा में कुतुबशाही, बीदर में बरीदशाही, बरार में इमादशाही तथा अहमदनगर में निजामशाही सल्तनतें कायम हुईं। बहमनी राज्य का संस्थापक हसन गंगो (१३४७–७५ ई०) गंगू ब्राह्मण का चेला था। इसलिए उसके राज्य में ब्राह्मणों का बहुत आदर और प्रभाव था। यहाँ तक कि बहमनी सुल्तान इब्राहीम आदिलशाह ने हुकूमत के लिए दक्खिन के ब्राह्मणों को मुकर्रर करना शुरू किया और जो हिसाब-किताब पहले फारसी में लिखे जाते थे, वे अब उसके हुक्म से 'हिन्दवी' में लिखे जाने लगे। इसके अतिरिक्त १५वीं से १७वीं सदी तक के उपर्युक्त इन सभी केन्द्रों में हिन्दी के कवियों को सदैव आश्रय और प्रोत्साहन मिलता रहा। हिन्दी को ही वहाँ की सल्तनतों में राज-भाषा का पद मिला, क्योंकि उत्तर-भारत से गये हुए मुस्लिम अमीर, सैनिक, सिपाही, पदाधिकारी तथा विद्वान् पूर्वी पंजाब, दिल्ली और मेरठ की भाषा से ही परिचित थे, मराठी-तेलुगु आदि दक्खिनी भाषाओं से नहीं। मुस्लिम सुल्तानों ने अपने दल-बल के साथ १३वीं सदी में विजेता के रूप में जब दक्षिण में प्रवेश किया था तो वे अपनी इसी पूर्वार्जित तथा अभ्यस्त भाषा को अपने साथ ले गए थे। मुस्लिम सुलतानों के साथ उनके मुसाहिब, परिजन और सहचर रूप में हिंदू कर्मचारी, व्यापारी, योद्धा और हिसाब-किताब रखने वाले मुसद्दी आदि भी वहाँ गए। मलिक काफूर के समय से ही गूजरों की काफी बड़ी संख्या उधर पहले ही जा चुकी थी, जिसके कारण दक्खिनी को उसके कवि गूजरी भी कहते थे। इसके अतिरिक्त उसके लिए कभी-कभी 'भाका' या 'भाखा' नाम का भी प्रयोग हुआ करता था। उधर दक्खिन के लोग मुस्लिम शासकों की फ़ारसी भाषा से बिल्कुल अनभिज्ञ थे। इसलिए संस्कृत, प्राकृत तथा अपभ्रंश की परम्परा से विकसित हिन्दी ही उन्हें अपनी भाषाओं के समीप और परिचित सी लगी। अपनी संस्कृतमूलक शब्द-सम्पत्ति की उन्होंने हिन्दी में समानता पाई। इसके अतिरिक्त पुरातन सांस्कृतिक सम्बन्धों, तीर्थ-स्थानों, साधु-सन्तों, वाणिज्य-व्यवसाय आदि के सम्पर्कों के कारण हिन्दी से उनका पहले से परिचय था। इसलिए इस भाषा को वहाँ जमते देर न लगी। फलतः वहाँ के दरबारों के आश्रय और संरक्षण में दक्खिनी हिन्दी में एक समृद्ध

साहित्य का विकास हुआ । मुल्ला वजही ने अपनी मसनवी 'कुतुब मुश्तरी' में लिखा है:—

"दखिन में जो दखिनी मिठी बात का
अदा ने किया कोई इस धात का ।"

और सच पूछिए तो दक्खिन में ही क्यों, मुस्लिम अमीर या फकीर और सूफी सन्त जहाँ-जहाँ गए, अपने साथ पूर्वी पंजाबी और दिल्ली मेरठ की इसी खड़ी हिन्दी को लिए गए और पूरब में अवध या बिहार तक अपने नये निवास-स्थानों की बोल-चाल की भाषाओं के साथ इसका मिश्रण करते हुए नई-नई सूक्तियाँ (दोहे और गीत) जन-साधारण की मंडली में सुनते-सुनाते गए । उन रचनाओं और सूक्तियों की भाषाओं के लिए उन्होंने बराबर हिन्दी ही नाम का व्यवहार किया, परन्तु दक्खिन में जब मुस्लिम-दरबारों के संरक्षण में इस भाषा को सर्वाधिक प्राधान्य और 'सरकारी ज़बान' का पद मिला तब इसका एक स्वतन्त्र नाम भी पड़ गया । "दक्खिनी" विशेषण से विशेष्य बन गया ।

लगभग तीन-चार शताब्दियों तक स्वतन्त्र रूप से दक्खिन में विकास प्राप्त करती हुई इस भाषा में वहाँ के जन-साधारण में प्रचलित मराठी तथा तेलुगु, कन्नड आदि द्रविड़ भाषाओं के प्रभाव भी स्वाभाविक रूप में पड़ते गए । यह आश्चर्य की बात नहीं है । इसका अध्ययन होना चाहिए कि हिन्दी पर ये प्रभाव किन-किन रूपों में पड़े हैं । साथ ही इसका भी ध्यान रहे कि इन कई शताब्दियों में उत्तर भारत में जो प्रवृत्तियाँ हिन्दी, उर्दू के निर्माण में काम करती रहीं, उनसे यह दक्खिनी हिन्दी रूप विच्छिन्न-सा रहा । परिणाम स्वरूप उसमें कई ऐसी विशेषताओं का विकास हुआ, जो उत्तर की हिन्दी या उर्दू में नहीं मिलतीं हैं । अपने उपर्युक्त संसर्गों के प्रभाव से दक्खिनी का शब्द-भण्डार उर्दू की तरह अरबी-फारसी के दबाव में नहीं पड़ने पाया । उसमें परम्परा-सिद्ध संस्कृत तथा प्रचलित भाषा के ठेठ देशी शब्दों का ही व्यवहार होता रहा । स्वतन्त्र, इन्द्रिय, ज्योत्स्ना, विकार, तन, मन, चेष्टा तथा पिउ इत्यादि जैसे संस्कृत शब्दों का प्रयोग उसमें बहुतायत से हुआ करता था । इस प्रकार वह भाषा नाम से ही नहीं रंग-रूप से भी हिन्दी ही थी ।

इस ग्रंथ के रचयिता अली आदिल शाह सत्रहवीं सदी में (१६५६ ई०) जब बीजापुर के बादशाह हुए तो उनके फारसी-प्रेम के कारण उनके दरबार में हिन्दी के अतिरिक्त फारसी काव्य की चर्चा जोरों से शुरू हुई । उन्हीं के राजकवि नुसरती थे, जिनके लिखे हुए तीन आख्यान ग्रंथ-मिलते हैं—गुलशने इश्क़, तारीखे सिकन्दरी और अलीनामा । इनमें से अलीनामा में आदिल शाह के दस वर्ष (१६५६–१६६५) तक के शासन का वर्णन है । यह ग्रंथ आज भी आदर से देखा जाता है । इसी नुसरती ने दक्खिनी से हिन्दवीपन को दूर करके उसे फारसी रूप देने का सिलसिला खड़ा किया । फिर भी हम देखते हैं कि १८वीं सदी के प्रारम्भ तक दक्खिनी में हिन्दी काव्य-परम्परा का क्रम निर्मूल नहीं हुआ था । यहाँ तक कि वली औरंगाबादी के भी (जिनके दिल्ली-आग-

मन से (१७०० ई०) उर्दू-काव्य की परम्परा दिल्ली में शुरू हुई) पहले के, कई ऐसे शेर हैं, जिनमें हिन्दी का रूप स्पष्ट है ।

आज भी अपनी अनेक विशेषताओं के साथ दक्खिनी आंशिक रूप में हैदराबाद, मैसूर, बरार, बम्बई, गुजरात आदि में बसे हुए मुस्लिम और कुछ हिन्दू-परिवारों में बोली जाती है । ग्रियर्सन के 'लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ़ इंडिया' में दक्खिनी बोलने वालों की संख्या ३६५४१७२० आँकी हुई है । इस प्रकार हिन्दी भाषा-भाषी जनसमूह के साथ दक्खिनी का अटूट सम्बन्ध है । उत्तर और दक्खिन के भाषायी सम्बन्ध की वह एक सुनहरी शृंखला है । दक्खिनी इस बात का प्रमाण है कि हिन्दी के विकास में उत्तर की ही नहीं, दक्खिन की भी महत्त्वपूर्ण देन है और उसमें दक्खिनी भाषाओं का भी योगदान है । वस्तुत: यदि दक्खिनी के रूप में हिन्दी का प्रसार और विकास नहीं हुआ होता तो आज राष्ट्र-भाषा या राज-भाषा के रूप में उसमें उस व्यापकता का समावेश नहीं हो पाता, जिसे उसने अपने शताब्दियों के इन सुदूर सम्पर्कों से अर्जित किया है । क्या भाषा और क्या साहित्य, दोनों ही दृष्टियों से हिन्दी के इतिहास के अन्तर्गत दक्खिनी का विशिष्ट स्थान है । उसके यथावत् विवरण के बिना हिन्दी का कोई भी इतिहास पूर्ण नहीं कहा जा सकता । इस ग्रंथ के प्रकाशन में इसी अपूर्णता की पूर्ति की ओर हमारा ध्यान है ।

जैसा कि उल्लेख किया जा चुका है, इस संग्रह का रचयिता अली आदिल शाह [द्वितीय] फारसी का बड़ा प्रेमी था । कहा जाता है कि फारसी पढ़ने में वह इस कदर मशगूल था कि हिन्दुस्तानी बोलना तक भूल गया था । परन्तु इस संकलन को देखने से यह स्पष्ट हो जाता है कि ऐसी बात हरगिज नहीं थी । अपने फारसी-प्रेम के बावजूद भी वह हिंदी को भूला नहीं और हिंदी में भी चमत्कार पूर्ण रचनाएँ कीं । एक ओर जहाँ उसने अपना उपनाम 'शाही' रखा था वहाँ दूसरी ओर हिंदी उपनाम 'मदन और' मदन रूप' का भी प्रयोग किया । एक ओर जहाँ उसन कसीदा, मसनवी, गजल, मुखम्मस और मुसम्मन, रुबाई आदि में रचनाएँ कीं तो दूसरी ओर कवित्त, दोहा (दोहरा) झूलना, आदि प्रचलित हिंदी छंद तथा भूपाली, आसावरी, नट, विहागरा, केदारा, देशी, टोड़ी, काँगड़ा, सारंग, श्री गौड़ी, भैरूं, अड़ाना, गोंड़मल्लार, यमन (ईमन) रामकली, पूरवी, बिलावल आदि शास्त्रीय तथा लोकप्रिय राग रागनियों के हिंदी गीत भी लिखे । एक ओर जहाँ उसने अरबी-फारसी के शब्दों का प्रयोग किया है वहाँ दूसरी ओर हिंदी के "अखंड" "अधर" "अलक" "मुक" (मुख) "दरपन" "नयन" "निरमल" "भूषण" "नद्याँ" (नदियाँ) "तिरलोक" (त्रिलोक) "कलंकी" "परताब" (प्रताप) 'सजन' 'पीव' आदि जैसे परम्परागत शब्दों का भी स्वाभाविक और निधड़क प्रयोग किया है । भाषा-विज्ञानियों के लिए यह भी एक ध्यान देने की बात है कि उसकी भाषा के अनेक प्रयोगों में मराठी का प्रभाव भी स्पष्ट लक्षित है । अली आदिल शाह की अनेक रचनाएँ और अनेक वर्णन फारसी काव्यों की परिपाटी को तोड़कर सर्वथा भारतीय वातावरण म रंजित हैं ।

इस संकलन में अली आदिल शाह की रचनाओं को इस प्रकार प्रस्तुत किया गया है कि कवि की पूरी रचना-शैली का परिचय पाठकों को एकत्र प्राप्त हो जाय। इस संग्रह (कुल्लियात) की मूल हस्तलिखित प्रति हैदराबाद के सरकारी संग्रहालय में सुरक्षित है, वहाँ से उसकी फोटो प्रतिलिपि प्राप्त करके श्री श्रीराम शर्मा और श्री मुबारिजुद्दीन 'रफ़त' ने उसका नागरी रूपान्तर तैयार किया है। मूल रचना के साथ उसके शाब्दिक विकास का क्रम प्रकट करते हुए अर्थ भी दे दिया गया है। इसके अतिरिक्त कठिन शब्दों के अर्थ तथा उनके तत्सम और व्युत्पत्तिगत रूपों का निर्देश भी कर दिया गया है, जिससे पाठकों को इस कृति का पूरा आनंद प्राप्त करने में सुगमता हो।

मूल पुस्तक की हस्तलिखित प्रति को देखने से इस बात का ठीक-ठीक पता नहीं चलता कि उसका पहला पत्र और अन्तिम पत्र कौन सा है। इसलिए पुस्तक के बीच से एक पत्र और अन्तिम अंशों से एक पत्र लेकर उनके चित्र, लिखावट के नमूनों के तौर पर दिए जा रहे हैं। कवि के इतिहास आदि के सम्बन्ध में सम्पादकों ने विस्तार से प्रकाश डालकर आवश्यक जानकारी सुलभ कर दी है। इसके लिए वे हम सब की ओर से साधुवाद के पात्र हैं।

यह संग्रह (कुल्लियात) उर्दू में भी अब तक नहीं छपा है। हमें इस बात का हर्ष और गौरव है कि यह महत्त्वपूर्ण संग्रह पहले पहल हिंदी में ही छप रहा है और इसे प्रथम-प्रथम प्रकाश में लाने का श्रेय हिंदी विद्यापीठ को ही प्राप्त हो रहा है। इसके संकलयिता प्रिय श्री श्रीराम शर्मा अनुसंधान और अनुशीलन के कार्यक्रम में विधिवत् हमारे विद्यापीठ-परिवार के अंग बन चुके हैं। मुझे विश्वास है कि इस पुस्तक में साहित्यानुरागियों तथा भाषाशास्त्र के प्रेमियों को एक समान मनोरंजन और अध्ययन-अनुशीलन को महत्त्वपूर्ण सामग्री मिलेगी।

क० मुं० हिन्दी तथा भाषाविज्ञान विद्यापीठ,
आगरा विश्वविद्यालय,
आगरा,
धन्वन्तरि त्रयोदशी, २०१५ वि०

विश्वनाथ प्रसाद
संचालक

अली आदिल शाह

का

काव्य-संग्रह

भूमिका

बहमनी साम्राज्य किसी समय दक्षिण भारत का सर्वाधिक शक्तिशाली राज्य था। १५वीं शती के आरंभ में यह साम्राज्य उन्नति की चरम सीमा पर पहुँचा हुआ था। इस शती की समाप्ति के साथ-साथ यह साम्राज्य नष्ट हो गया। गुलबर्गा और बीदर में जो विशाल राजभवन बनाये गये थे, वे खँडहरों में परिवर्त्तित होने लगे। इन दोनों नगरों में बहमनी वंश के नरेशों के जो बड़े-बड़े मकबरे बने थे वे निर्दीप रहने लगे। गुलबर्गा और बीदर दोनों नगर उजड़ गये किन्तु बीजापुर, गोलकुण्डा और अहमदनगर में नये दुर्गों की दीवारें उठने लगीं, खाइयाँ खुदने लगीं। मनीषियों और कवियों के लिए नया आश्रय मिला। गुलबर्गा और बीदर के खंडहर आज भी विद्यमान हैं, किन्तु इन नगरों में संस्कृति और ज्ञान-दान के जो आयोजन प्रारंभ हुए थे वे समाप्त नहीं हुए। इन अनुष्ठानों के यजमान और पुरोहित दोनों दक्षिण के नवोदित तीन नगरों बीजापुर, गोलकुण्डा और अहमदनगर—में चले गये और कुछ ही दिनों में शान्त वातावरण ने उस अनुष्ठान की पूर्ति में सहायता प्रदान की।

पन्द्रहवीं शती के उत्तरार्द्ध में बहमनी साम्राज्य बुरी तरह लड़खड़ा रहा था। राजवंश के महत्वाकांक्षी किन्तु अदूरदर्शी वंशधरों की प्रतिस्पर्द्धा और सामन्तों के षड्यन्त्रों और गुजरात के शाहों के आक्रमणों ने जब इस साम्राज्य को जर्जर बना दिया था तो उन दिनों साम्राज्य की सेवा में कुछ महत्वपूर्ण व्यक्ति दत्तचित्त थे और शुभ अनुष्ठानों का संकल्प किया जा रहा था। साम्राज्य का संचालन उन दिनों प्रधान मंत्री महमूद गावान के हाथ में था। महमूद गावान ने बीदर में एक विद्यालय की स्थापना की थी। इस विद्यालय में अध्यापन-कार्य के लिए दूर-दूर से विद्वानों को निमंत्रित किया गया था। महमूद-गावान सामन्तों के षड्यन्त्र के फलस्वरूप प्राणदण्ड का भागी बना किन्तु उसके निमंत्रण पर जो विद्वान बीदर में एकत्रित हुए थे उन्हें बहुत दिन तक निराश्रित नहीं रहना पडा। दक्षिण के नवोदित मुस्लिम राज्यों मे उन्हें आदर के साथ बलाया गया।

बीजापुर : गोलकुण्डा : अहमदनगर :

जिन दिनों बहमनी साम्राज्य जर्जरित अवस्था में लड़खड़ा रहा था, साम्राज्य को ऐसे सामन्तों की सेवाएं उपलब्ध थीं जिन पर किसी भी राजवंश को गौरव प्राप्त हो सकता था। बहमनी साम्राज्य को इससे पूर्व इतने वीर, दूरदर्शी और योग्य सामन्त प्राप्त नहीं हुए थे। महमूद गावान का उल्लेख ऊपर किया जा चुका है। यूसुफ़ आदिल, कुली क़ुतुब और निज़ामुलमुल्क तीन ऐसे सरदार थे जो सम्पूर्ण साम्राज्य की बागडोर संभाले हुए थे। यह आश्चर्य की बात थी कि इन सुयोग्य सामन्तों के रहते हुए भी साम्राज्य की रक्षा न हो सकी। इन दूरदर्शी सामन्तों ने भविष्य को पहचान लिया था, अतः उन्होंने स्वतंत्र राज्यों की स्थापना की। सब से पहले यूसुफ़ आदिल साम्राज्य की सेवा से पृथक हुआ। यूसुफ़ आदिल को महमूद गावान बहुत चाहता था। उसका पालन-पोषण भी महमूद गावान की देख-रेख में हुआ था। महमूद गावान उसे पुत्र तुल्य मानता था। जब महमूद गावान को प्राणदंड दिया गया तो यूसुफ़ को बहुत बुरा लगा। समय पाकर उसने बीजापुर में स्वतंत्र राज्य की स्थापना की। इसी तरह क़ुली क़ुतुब ने गोलकुंडा और निजामुल मुल्क ने अहमदनगर को राजधानी बनाकर नये राज्यों की नींव डाली। यद्यपि तीनों सामन्तों ने बहमनी साम्राज्य के तीन बड़े भागों पर शासन स्थापित किया था; किन्तु बहुत दिनों तक बहमनी वंश के प्रति उनकी आस्था बनी रही। जिस समय इस वंश के उत्तराधिकारी बड़ी विपन्नावस्था में थे, यूसुफ़ आदिल ने उन्हें अपने यहाँ आश्रय दिया और उनके साथ ऐसा बर्ताव किया जैसा सेवक स्वामी के साथ करता है।

क़ुली क़ुतुब ने जीते जी कभी अपने को शासक नहीं माना। उसके मरने के बाद ही क़ुतुब शब्द के साथ 'शाह' शब्द जुड़ा और क़ुतुब वंश के स्थान पर क़ुतुबशाह शब्द का प्रयोग होने लगा।

बीजापुर के अधीन वह कन्नड भाषी प्रदेश था जो उन दिनों विजय नगर के शासन में नहीं था। आन्ध्र के कुछ भाग पर विजय नगर का आधिपत्य था और कुछ भाग पर गोलकुंडा का। अहमदनगर का शासन मराठी भाषी क्षेत्र पर था। बीजापुर राज्य के अन्तर्गत कुछ मराठी भाषी क्षेत्र भी शासित होता था। बीदर में कुछ दिनों के लिए बरीद-शाही राज्य रहा किन्तु इस वंश का अधिकार-क्षेत्र बहुत सीमित था। बीदर का बरीदशाही वंश अधिक समय तक शासन न कर सका।

विजयनगर साम्राज्य

इन तीनों राज्यों को सबसे अधिक भय विजयनगर साम्राज्य से था। अलाउद्दीन खिलजी और उसके सेनापति मलिक काफ़ूर के सामने देवगिरि के यादव, वरंगल के काकतीय और द्वारसमुद्र के होयसला अपने राज्यों की रक्षा न कर सके किन्तु इन तीनों राज्यों के पतन के पश्चात् शीघ्र ही विजयनगर साम्राज्य की स्थापना हुई और इस साम्राज्य ने दक्षिण भारत की जनता में नई आस्था और नया विश्वास उत्पन्न किया। भूमि के सम्बन्ध में नई व्यवस्था काम में आई। व्यापार में वृद्धि हुई। कला और साहित्य

के सम्बन्ध में इस साम्राज्य के संचालकों ने जो कुछ प्रयत्न किये उन्हें भुलाया नहीं जा सकता। इस साम्राज्य की छत्र-छाया में तेलुगु के अष्ट दिग्गजों ने साहित्य की उस मेदिनी को अवलम्बन दिया जो दुर्दिनों में भी हरी-भरी बनी रही। कन्नड साहित्य को पुनर्जीवन मिला। वैदिक वाङ्मय के उद्धार के लिए इस साम्राज्य ने जो प्रयत्न किये उनकी तुलना पूर्ववर्ती किसी राजवंश से नहीं की जा सकती। विजयनगर साम्राज्य और दक्षिण के नवोदित मुस्लिम राज्यों में सदैव संघर्ष चलता रहा। अन्त में तीनों राज्यों के संयुक्त प्रयत्नों ने विजय नगर की शक्ति को तालीकोटा के युद्ध क्षेत्र में परास्त किया। कुछ समय के लिए दक्षिण भारत में बीजापुर, गोलकुण्डा और अहमदनगर बहुत शक्तिशाली राज्य बन गये। यह प्रश्न हो सकता है—यदि मुगल साम्राज्य इन तीनों राज्यों का विरोधी न बनता, महाराष्ट्र में शिवाजी जन्म न लेते और तीनों राज्यों में विजयनगर से लड़ते समय जो एकता उत्पन्न हुई थी वह बनी रहती तो दक्षिण भारत का इतिहास किस तरह लिखा जाता? ये तीनों राज्य भारतवर्ष के इतिहास पर क्या प्रभाव डालते? आज इन प्रश्नों का उत्तर कौन दे सकता है?

इन प्रश्नों का उत्तर चाहे कोई न दे सके, किन्तु यह कहा जा सकता है कि इन राज्यों ने कुछ नई परम्पराएँ स्थापित की थीं। बहमनी शासकों ने अनुभव किया था कि स्थानीय जनता की संस्कृति और उसके साहित्य में कुछ उत्कृष्ट तत्व विद्यमान हैं। उस समय अकबर का जन्म नहीं हुआ था। फीरोजशाह बहमनी का जो मजार गुलबर्गा में बना हुआ है वह मुस्लिम और हिन्दू स्थापत्य-कला के मिश्रण का अच्छा उदाहरण है। अकबर ने जो रंग ढंग और नीति अपनाई थी वह अकबर के साथ समाप्त हो गई किन्तु दक्षिण भारत में जिस परम्परा का सूत्रपात फ़ीरोजशाह बहमनी ने किया था वह गोलकुण्डा में मुहम्मद क़ुली क़ुतुबशाह के युग में पूर्णतया विकसित हुई और अबुल हसन तानाशाह के समय में भी विद्यमान रही और बीजापुर ने भी उसे विकसित करने के लिए पूरा योग दिया। इन दोनों राज्यों के नरेशों को संगीत तथा साहित्य से बड़ा प्रेम था। इब्राहीम आदिलशाह (द्वितीय) ने भिन्न भिन्न राग-रागिनियों में गीत लिखे जो 'नवरस' नामक संकलन में संकलित हैं। उसने 'जगद्‌गुरु' की उपाधि स्वीकार की थी। उसके दरबार में दूर-दूर के संगीतज्ञ आते और समादृत होते। हिन्दुस्तानी संगीत में गोलकुण्डा और बीजापुर के नरेशों की समान रुचि थी। बीजापुर और गोलकुण्डा के पुराने भवनों का निरीक्षण किया जाये अथवा यहाँ के पुराने संगीतज्ञ घरानों के गवैयों से गीत सुने जायें, हम समन्वय की प्रवृत्ति को शक्तिशाली रूप में देखते हैं।

दक्खिनी भाषा

समन्वय की यह प्रवृत्ति पूरी तरह प्रतिफलित हुई भाषा के क्षेत्र में। निस्सन्देह इन राज्यों में कुछ सामन्त और राज्याधिकारी तथा धर्मोपदेष्टा ऐसे थे जिनकी मातृभाषा तुर्की, ईरानी अथवा अरबी थी। राज्य का कार्य फ़ारसी में होता था, किन्तु साधारण कर्मचारी या तो दिल्ली, जौनपुर और अहमदाबाद से आये थे या फिर दक्षिण भारत के निवासी थे। दक्षिण भारत के बहुत से हिन्दू बड़े-बड़े पदों पर नियुक्त थे और कुछ

हिन्दुओं ने धर्म-परिवर्त्तन भी किया था। जो लोग दिल्ली, जौनपुर और अहमदाबाद से यहाँ आये थे वे घरेलू बोलचाल में हिन्दी के उस रूप का प्रयोग कर रहे थे जो क्षेत्रीय प्रभावों को लिये हुए था। जो हिन्दी, क्षेत्रीय बोलियों के प्रभावों को ग्रहण कर वर्त्तमान बिहार, उत्तर प्रदेश, राजस्थान और पंजाब के बड़े भाग की सांस्कृतिक भाषा बनने जा रही थी, जिसमें अमीर खुसरों ने पहेलियाँ लिखीं, जिसमें विद्यापति ने गद्य लिखा और जिसमें कबीर दिव्य चिन्तन को शब्दों का रूप दे रहे थे। निस्सन्देह इस भाषा में उस समय तक फ़ारसी के समान उच्चकोटि के काव्य नहीं लिखे गये थे, अरबी के समान उसमें चिन्तन-सामर्थ्य नहीं था, फ़ारसी और अरबी की तरह भावों की अभिव्यक्ति नहीं थी; इतना होने पर भी इस हिन्दी के अपने गुण कम नहीं थे। उसमें साहित्यिक भाषा बनने की क्षमता थी। संस्कृत, प्राकृत और अपभ्रंश के विकास में योग देने वाले दाक्षिणात्य साक्षर व्यक्ति हिन्दी के इस स्वरूप से परिचय प्राप्त करने में कठिनाई अनुभव नहीं कर रहे थे। यह भाषा दक्षिणी भाषाओं से विशेष कर मराठी से शब्दावली ले सकती थी। बीजापुर और गोलकुण्डा के शासकों ने इस भाषा के विकास में उल्लेखनीय योग दिया। फ़ारसी के बड़े से बड़े लेखक और कवि के समान इस बोली के कवि और लेखक दरबार में आदर पाते थे। शासक स्वयं इस बोली में कविता लिखने लगे। बड़े-बड़े धर्मोपदेष्टाओं ने इस बोली में उपदेश देना प्रारंभ किया। धार्मिक विषयों पर टीकाएँ लिखी जाने लगीं। इस भाषा ने शीघ्र ही सांस्कृतिक भाषा का पद ग्रहण किया और जीवन के सभी क्षेत्रों में उसका व्यवहार होने लगा। यह बोली हिन्दी की एक विशेष शैली है। हिन्दी की अन्य शैलियों और विभाषाओं से इसका पार्थक्य प्रकट करने के लिए इस बोली को दक्खिनी कहा जा सकता है। इस विभाषा के लिए आजकल यही नाम प्रयुक्त होता है।

तीनों राज्यों का अन्त

विजय नगर साम्राज्य की समाप्ति के पश्चात दक्षिण के ये तीनों मुस्लिम राज्य बहुत दिनों तक शक्तिशाली नहीं रहे। दिल्ली के मुगल शासक इन राज्यों को अच्छी दृष्टि से नहीं देखते थे। अहमद नगर उत्तर भारत के निकट था। उसकी सीमाएँ मुगल साम्राज्य की सीमा से मिलती थीं। अकबर ने सबसे पहले इसी राज्य पर आक्रमण किया। अहमदनगर का अस्तित्व समाप्त हो गया। अहमदनगर का शासन-क्षेत्र मुगल साम्राज्य में चला गया। जहाँगीर और शाहजहाँ के समय में बीजापुर और गोलकुण्डा फलते-फूलते रहे। औरंगजेब ने ज्यों ही घरेलू झंझटों से छुटकारा पाया उसने दक्षिण के शेष दो मुस्लिम राज्यों को समाप्त करने का निश्चय किया। इन्हीं दिनों महाराष्ट्र में शिवाजी का उदय होता है। शिवाजी का पिता बीजापुर में एक बड़े पद पर था। शिवाजी ने महाराष्ट्र के मुगल राज्य को पहले ज्यों का त्यों छोड़ दिया और बीजापुर के ग्रामों तथा दुर्गों पर अधिकार करना प्रारंभ किया। यह स्पष्ट दिखाई देता है, औरंगजेब पहले शिवाजी से नहीं बीजापुर के आदिलशाहों से निपटना चाहता था। इस स्थिति का लाभ शिवाजी ने पूरी तरह से उठाया। औरंगजेब ने बीजापुर पर आक्रमण किया और जो

प्रदेश शिवाजी ने नहीं लिया था उस पर उसने अधिकार कर लिया। बीजापुर के पश्चात औरंगजेब ने गोलकुण्डा पर आक्रमण किया। जब बीजापुर और गोलकुण्डा के स्वतंत्र राज्य न रहे तो दक्षिण भारत का शक्ति-सन्तुलन जाता रहा। औरंगजेब को सीधे मराठों से लड़ना पड़ा। वह औरंगाबाद में बस गया। राजधानी दिल्ली के बहुत से परिवार औरंगाबाद में आये और अन्त में औरंगजेब की अन्त्येष्टि भी औरंगाबाद के निकट ही हुई।

यहाँ इतना और उल्लेख करना आवश्यक है कि बीजापुर और गोलकुण्डा के शासक शिया थे। धर्म के बारे में इस सम्प्रदाय के लोग सुन्नी तथा अन्य सम्प्रदायों से सम्बन्धित मुसलमानों की तरह आस्था रखते हैं, किन्तु उनमें कुछ विशेष बातें हैं जो उन्हें दूसरे मुसलमानों से पृथक करती हैं। रहन-सहन में भी उनकी कुछ विशेषताएँ स्पष्ट दिखाई देती हैं। ईरानी साहित्य के सम्बन्ध में इन लोगों की रुचि स्पष्ट है। ईरानी परम्परा के बहुत से चिन्ह इन लोगों में विद्यमान हैं। ये ऐसे चिन्ह हैं जो बीजापुर और गोलकुण्डा के शासकों को भारतीय जनता के निकट किन्तु दिल्ली के मुगलों से पृथक करते थे।

अहमदनगर का निजामुलमुल्क वंश अधिक समय तक शासनारूढ न रह सका। आदिलशाही वंश और कुतुबशाही वंश लगभग दो सौ वर्ष तक राज्य करते रहे। इन दोनों राज्यों ने इन दो शतियों में बहुत से उल्लेखनीय कार्य किये। संगीत, स्थापत्य आदि के अतिरिक्त दक्खिनी बोली के विकास में भी इन दोनों राजवंशों ने समान रूप से योग दिया।

प्रस्तुत संकलन आदिलशाही वंश के सातवें राजा अली आदिलशाह (द्वितीय) का लिखा हुआ है। इस वंश के नरेशों की तालिका निम्न प्रकार है—

	शासन काल
(१) यूसुफ आदिलशाह	(१४९० ई०–१५२८ ई०)
(२) इस्माइल आदिलशाह	(१५२८ ई०–१५३४ ई०)
(३) इब्राहीम आदिलशाह (प्रथम)	(१५३४ ई०–१५५७ ई०)
(४) अली आदिलशाह (प्रथम)	(१५५७ ई०–१५८० ई०)
(५) इब्राहीम आदिलशाह (द्वितीय)	(१५८० ई०–१६२६ ई०)
(६) मुहम्मद आदिलशाह	(१६२६ ई०–१६५६ ई०)
(७) अली आदिलशाह (द्वितीय)	(१६५६ ई०–१६७३ ई०)
(८) सिकन्दर आदिलशाह	(१६७३ ई०–१६८६ ई०)

बीजापुर : साहित्य-साधना

यूसुफ आदिल महमूद गावान का धर्म-पुत्र था, उसने सबसे पहले बहमनी साम्राज्य के कुछ भाग पर स्वतंत्र शासन स्थापित किया था अतः बीदर के मुस्लिम विद्वान और कवि बीजापुर चले आये। इब्राहीम आदिलशाह (द्वितीय) के शासनकाल में बीजापुर साहित्य, संगीत और धार्मिक चिन्तन का केन्द्र बन गया। उसकी उपाधि 'जगद्गुरु' थी। संगीत के साथ साथ उसमें साहित्य के प्रति रुचि थी। स्वयं ब्रज भाषा में गीत लिखता

था। इसके शासनकाल में एक महत्वपूर्ण घटना घटित हुई जिससे बीजापुर का महत्व बहुत बढ़ गया। गुजरात में बहुत दिनों से मुसलमानों का स्वतंत्र राज्य था। दिल्ली में आये दिन कोई न कोई उत्पात होता रहता था। गुजरात में बहुत दिन तक शान्ति बनी रही। उन दिनों अहमदाबाद सूफी सन्तों का एक अच्छा केन्द्र था। ये सूफ़ी सन्त पश्चिम भारत, राजस्थान और दिल्ली की यात्रा किया करते थे और कभी कभी दक्षिण में भी धार्मिक चर्चा तथा धर्म-प्रचार के लिए पहुँचा करते थे। अकबर ने जब राज्य विस्तार की नीति अपनाई तो गुजरात का राजवंश समाप्त हो गया। इसी तरह अहमदनगर भी परास्त हुआ। गुजरात और अहमदनगर के पतन से बहुत से विद्वान और कवि निराश्रित हो गये। इब्राहीम आदिलशाह (द्वितीय) ने अपने दूत भेजकर इन विद्वानों और कवियों को बीजापुर में निमंत्रित किया। नित्यप्रति राजधानी में किसी न किसी विद्वान का आगमन होता रहता था। इसके शासनकाल में नूरुद्दीन, जहूरी, रफ़ीउद्दीन शीराजी और मुहम्मद अबुल कासिम फरिश्ता जैसे विद्वान तथा कवि दरबार में थे। फरिश्ता ने फारसी में भारत का इतिहास लिखा।

अली आदिलशाह (द्वितीय) का राज्यकाल

ऊपर जो विवरण दिया गया है, उससे यह स्पष्ट हो गया कि अली अदिलशाह (द्वितीय) के सिंहासन पर आसीन होने से पहले बीजापुर में साहित्य और कला के लिए उपयुक्त वातावरण तैयार हो चुका था। अली आदिलशाह (द्वितीय) केवल समृद्ध राज्य ही नहीं एक समृद्ध साहित्यिक परम्परा का उत्तराधिकारी भी था। उसने अपने पिता से बीजापुर की साहित्यिक परम्परा और मां से गोलकुण्डा की सांस्कृतिक निधि उत्तराधिकार के रूप में प्राप्त की थी। इसके पिता मुहम्मद आदिलशाह का विवाह गोलकुण्डा के मर्मज्ञ कवि तथा प्रसिद्ध शासक मुहम्मद कुली कुतुबशाह के भतीजे मुहम्मद कुतुबशाह की पुत्री और अब्दुल्ला कुतुबशाह की बहन खदीजा सुलताना शहरबानू (बड़े साहब) के साथ हुआ था। जब खदीजा बीजापुर पहुँची तो उसने साहित्यिक आयोजनों में बड़ी रुचि ली। उसके पिता, चाचा और भाई आदि या तो कवि थे या कवियों के आश्रयदाता थे। उसके दहेज में जहाँ बहुत-सी सामग्री दी गई, खुशनूद नामक कवि भी दिया गया।

बीजापुर दरबार के लेखकों ने अली आदिलशाह (द्वितीय) को मुहम्मद आदिलशाह और खदीजा का औरस पुत्र माना है, किन्तु औरंगजेब के साथ जो लेखक बीजापुर के अभियान में सम्मिलित थे उन्होंने इस बात का उल्लेख किया है कि आदिलशाह (द्वितीय) मुहम्मद आदिलशाह का औरस पुत्र नहीं था। खदीजा ने किसी दरिद्र परिवार से उसे देने का अनुरोध किया था, खदीजा ने ही उसका पालन-पोषण किया था। मुहम्मद आदिलशाह के देहान्त होने पर सामन्तों ने अली आदिलशाह को गद्दी पर बैठा दिया। इसके बारे में बीजापुर के लेखक ही अधिक प्रामाणिक प्रतीत होते हैं। जो लेखक गोलकुण्डा के अभियान में औरंगजेब के साथ थे उन लेखकों ने गोलकुण्डा के तत्कालीन शासक अबुलहसन के सम्बन्ध में भी अली आदिलशाह (द्वितीय) से मिलती-जुलती कहानी लिखी है। इन

लेखकों ने बताया है कि अबुल हसन एक मामूली घराने में पैदा हुआ था और संयोगवश गद्दी पर बैठा दिया गया था।

अली आदिलशाह (द्वितीय) जब गद्दी पर बैठा तो चारों ओर शान्ति थी, किन्तु कुछ समय पश्चात् ही विपत्ति के बादल घिर आये। शिवाजी ने बीजापुर के कई किलों पर अधिकार कर लिया। अली आदिलशाह का एक विश्वस्त सरदार अफजलखां शिवाजी के बघनख का शिकार हुआ। मुगल सम्राट औरंगजेब बीजापुर पर अधिकार करने का प्रयत्न करता है। बीजापुर राज्य के पतन के सभी साधन उपस्थित हो चुके थे, किन्तु संयोगवश अली आदिलशाह (द्वितीय) आदिलशाही वंश का अन्तिम नरेश बनने से बच गया।

चारों ओर विपत्ति ही विपत्ति दिखाई देती थी। इस विपरीत परिस्थिति में भी अली आदिलशाह (द्वितीय) के कला-प्रेम में कोई अन्तर नहीं आया। उसने अपने दादा की परम्परा को निभाने का प्रयत्न किया। अन्य आदिलशाही नरेशों की तरह इसे भी भवन निर्माण का शौक था। इसका मकबरा पूरा नहीं बन सका किन्तु जो हिस्सा बना था वह आज भी विद्यमान है। इस मकबरे के घेरे को देखते हुए कहा जा सकता है, यदि मकबरा पूरा बन जाता तो वह बीजापुर की विश्वविख्यात गोल गुंबज से भी विशाल तथा भव्य होता।

अली आदिलशाह (द्वितीय) कवि था, कवियों का आश्रयदाता था। उसके दरबार में दक्खिनी के कई बड़े कवि विद्यमान थे, जिनमें नुसरती, अमीन, हाशमी और अयागी उल्लेखनीय हैं। नुसरती का स्थान दक्खिनी के श्रेष्ठतम कवियों में किया जाता है। इस कवि की दो पुस्तकें—'गुलशने इश्क' और 'अलीनामा' फारसी लिपि में छप चुके हैं। इसने बहुत सी गजलें और कसीदे लिखे हैं। वीर रस और शृंगार रस में इसे बहुत सफलता मिली है। यह अली आदिलशाह के बचपन का मित्र था। दोनों बचपन में साथ साथ खेलते थे। युवा और वृद्धावस्था में भी दोनों साथ साथ रहे। फारसी के कवियों में मंगलाचरण के लिए जो पद्धति काम में लाई जाती है, उसके अनुसार समकालीन शासक की मदह (प्रशंसा) करना आवश्यक होता है। नुसरती ने अपने काव्यों में अली-आदिलशाह की मदह लिखी है। मदह अथवा नृपति-प्रशंसा से सम्बन्धित कविता से अली आदिल के सम्बन्ध में बहुत कुछ जानकारी प्राप्त हुई है। नुसरती ने औरंगजेब के प्रथम आक्रमण का वर्णन भी बहुत सुन्दर ढंग से किया है। अली आदिलशाह (द्वितीय) ने नुसरती को 'मलिकुश्शोअरा' (कवि सम्राट) की उपाधि प्रदान की थी।

नुसरती ने अपने आपको अली आदिलशाह का शिष्य बताया है—

मुजे यू सुख़न बादशाह याद है
पिछे पीर के वस्फ़े उस्ताद है
मुज उस्ताद उस्तादे आलम अछे
जिता इल्म अजवर जिसे जम अछे
तुजे जद[1] इब्राहीम अवला बली
तू सुलताँ मुहम्मद का जाया अली (गुलशने इश्क)

१. दादा

यदि नुसरती की रचनाओं को ध्यान में रखकर इस कथन पर विचार किया जाय तो ऐसा प्रतीत होता है कवि ने अपने आश्रयदाता के प्रति अत्यधिक सम्मान प्रकट करने के लिए ये पंक्तियाँ लिखी होंगी। इसमें कोई सन्देह नहीं कि नुसरती अली आदिलशाह को अपेक्षा कविता के क्षेत्र में बहुत ऊंचा स्थान रखता है, किन्तु उपर्युक्त पंक्तियाँ केवल अत्यधिक सम्मान के लिए ही नहीं है। उसमें सचाई अवश्य है। बचपन में अली को अधिक सुविधाएँ प्राप्त रहा होंगी। अनेक विषयों में नुसरती ने उससे सहायता ली होगी। कवि के नाते अली आदिलशाह नुसरती की तुलना में नहीं आता किन्तु जहाँ तक साहित्य शास्त्र का सम्बन्ध है वह नुसरती की सहायता करता रहा होगा।

नुसरती और अली आदिलशाह (द्वितीय) की मित्रता को लेकर बहुत-सी कथाएँ प्रचलित हैं। आजीवन दोनों व्यक्तियों में सौहार्द बना रहा। इस सौहार्द में न जाने कितनी घटनाएँ चिरस्मरणीय हो गईं। कई बार दोनों कविता में ही बातचीत करते। एक समय अली और नुरसती उद्यान में घूम रहे थे। फव्वारा चल रहा था। फवारे की असंख्य बूँदों को देखकर अली ने कहा—

उड़ना सो यो फव्वारा पानी का क्या निछल है

नुसरती ने तत्काल उत्तर दिया—

तुझ शाह पर उड़ाने मोती का मोरछल है

नुसरती के 'अलीनामे' से बीजापुर, वहाँ के राजवंश और विशेषकर अली आदिलशाह (द्वितीय) के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त होती है। उसने अली आदिल का बखान बड़े उत्साह से किया है—

जे हे शाहे आदिल मुसम्मी वली
अली इब्ने सुलताँ मुहम्मद वली
तेरे दिल के दरिया का शेर यक है मौज
फ़लक पस्त जान तुझ ख़यालों की औंज
तेरा शेर हर मुर्दा दिल कूँ जनम
करे खिज़्र बहर ख़ुश मसीहा का दम
सिके शायराँ शेर ते तुँज शऊर
धर्या तब ए मौज़ूँ ते तुज नज़म नूर

अली आदिल का कविता संग्रह

अली आदिल कवि था, उसमें उच्च कोटि की कल्पना शक्ति थी, साहित्य-शास्त्र से उसका परिचय था, इन सब बातों का परिचय नुसरती के वर्णनों से मिलता है। प्रस्तुत कविता संग्रह नुसरती के कथन को पुष्ट करने के लिए पर्याप्त है। कविता संग्रह की

हस्तलिखित प्रति आन्ध्र राज्य के केन्द्रीय अभिलेखालय में सुरक्षित है। लिखित पुस्तक के २३७ पृष्ठ हैं। प्रत्येक पृष्ठ ६'' × ३·३'' आकृति का है। सामान्यतया प्रत्येक पृष्ठ में छह पंक्तियां हैं। कुछ पृष्ठों में पंक्तियाँ कम भी हैं। पुस्तक पर लिपिकाल अथवा लेखन-काल नहीं दिया गया है। अब तक इस संकलन की अन्य प्रति कहीं नहीं मिली। इस संकलन को देखते हुए ज्ञात होता है, यह कवि की उत्कृष्ट रचनाओं का संग्रह है। उसकी अन्य रचनाएँ भी अवश्य होनी चाहिएँ, किन्तु इस संकलन के अतिरिक्त उसकी कोई दूसरी रचना उपलब्ध नहीं हुई। इस संकलन में अली आदिलशाह (द्वितीय) ने अपना काव्य नाम 'शाही' प्रयुक्त किया है। गीतों में उसने 'शाही' के स्थान पर 'मदन' अथवा 'मदन-रूप' काव्य नाम लिखा है। दो-तीन स्थानों पर उसने 'अली आदिल' का प्रयोग भी 'भोग' के रूप में किया है। कवि ने बीजापुर के महलों का विस्तार से वर्णन किया है। यह वर्णन एक कवि का वर्णन ही नहीं है। गृहपति अपने घर का वर्णन कर रहा है। हस्त-लिखित प्रति के देखने से यह ज्ञात नहीं होता कि पुस्तक कहाँ से आरंभ हुई है और कहाँ उसकी समाप्ति है। उस पर जो अंक डाले गये हैं, वे उस समय के नहीं हैं जब पुस्तक लिखी गई थी। संकलन को आद्योपान्त पढ़ने के पश्चात् यह ज्ञात होता है कि संकलन अधूरा नहीं है। दक्खिनी के कवियों ने मंगलाचरण के सम्बन्ध में फ़ारसी काव्यों का अनुकरण किया है। फ़ारसी काव्यों की तरह आरंभ में ईश-स्तुति की जाती है। यह ईश-स्तुति 'हम्द' कहलाती है। ईश स्तुति के पश्चात् हज़रत मुहम्मद की प्रशंसा की जाती है। इस प्रकार की प्रशंसा के लिए 'नात' शब्द का प्रयोग होता है। 'नात' के पश्चात् हजरत मुहम्मद के साथियों और उत्तराधिकारियों का वर्णन रहता है जो मुनाजात कहलाता है। शिया कवि मुनाजात में हज़रत अबूबकर आदि खलीफाओं का बखान न करके केवल हज़रत अली का वर्णन करते हैं। हज़रत अली सहित १२ इमामों की प्रशंसा की जाती है। मुनाजात के बाद समकालीन शासक की प्रशंसा —मदह—रहती है। और फिर कवि अपना परिचय देता है। इस परिचय के पश्चात् वास्तविक विषय प्रारंभ होता है। हम्द, नात, मुनाजात और मदह लिखने का ढंग बहुत कुछ रूढिबद्ध हो चुका है। किसी भी कवि का मंगलाचरण सम्बन्धी अंश देखा जाय तो उसमें शब्दों का हेरफेर अवश्य दिखाई देता है, किन्तु भावों में अधिक अन्तर नहीं रहता। हिन्दी के प्रेममार्गी कवियों—मुहम्मद जायसी आदि ने भी इस रूढि का अवलम्बन किया है। प्रस्तुत संकलन का आरंभ क़सीदों से हुआ है। पहला क़सीदा ईश्वर से सम्बन्धित है, दूसरा हजरत मुहम्मद से, तीसरा अली से और चौथा अली सहित बारह इमामों से। इस तरह हम्द, नात और मुनाजात से संकलन प्रारंभ हुआ है। कवि स्वयं शासक है अतः मदह का प्रश्न नहीं उठता। फुटकर कविता में कवि के आत्म-परिचय के लिए स्थान नहीं होता। इससे यह ज्ञात होता है कि आरंभिक पृष्ठ नष्ट नहीं हुए हैं। उर्दू काव्य की विभिन्न शैलियों को ध्यान में रखकर संकलन तैयार किया गया है। आरंभ में कसीदे हैं, फिर मसनवियाँ, उसके पश्चात् गज़ल आदि। ब्रज भाषा के कवित्त, दोहे और गीत एक स्थान पर हैं। अन्त में फ़ारसी की कविताएँ हैं। फारसी की कविता किसी विषय से सम्बन्धित न होकर केवल 'तारीख़' से सम्बद्ध है। फ़ारसी और अरबी कविता में तारीख़ कहने की विशेष प्रथा है। फ़ारसी

वर्णमाला के प्रत्येक अक्षर के कुछ अंक निश्चित हैं। भारतीय ज्योतिष-विद्या में भी कुछ शब्दों के अंक निश्चित कर दिये गये हैं। इन शब्दों से संख्या का काम लिया जाता है। कवि एक या दो शब्द अथवा एक वाक्य में किसी व्यक्ति के जन्म-मरण अथवा किसी घटना से सम्बन्धित संवत्सर का उल्लेख करता है। इस प्रकार की कविता का महत्व काव्य की दृष्टि से कुछ भी नहीं है, किन्तु इतिहास के लिए इस प्रकार की कविता बहुत सहायक सिद्ध होती है। इस संकलन की फ़ारसी कविता का इसीलिए महत्व है। इन कविताओं में जो सवंत्सर दिये गये हैं वे ऐतिहासिक दृष्टि से भी प्रामाणिक हैं। इस तरह संकलन में क्रमशः काव्य के सभी अंग आ गये। इस बात की संभावना नहीं की जा सकती कि संकलन के कुछ अन्तिम पृष्ठ नष्ट हो गये होंगे। पुस्तक के मध्य में कुछ पृष्ठ नष्ट हो गये हैं। दो-चार पृष्ठ ऐसे हैं जिनके अक्षरों को कीड़े चाट गये। ऐसे स्थलों में (—) रेखा अंकित की गई है। जहाँ पृष्ठ का पृष्ठ दीमक खा गई है, वहाँ भी इस बात का उल्लेख कर दिया गया है।

दक्खिनी की बहुत सी पुस्तकें फ़ारसी और नागरीलिपि में छप चुकी हैं। यह संकलन अब तक उर्दू में भी नहीं छपा है। यह पहली बार छप रहा है और वह भी नागरीलिपि में, हिन्दी की टिप्पणियों के साथ। हस्तलिखित पुस्तक में फारसी लिपि का जो रूप प्रयुक्त हुआ है, उसके पढ़ने में कठिनाइयाँ उठानी पड़ी हैं। उसमें स्थान-स्थान पर अलंकरण के लिए बिन्दुओं का उपयोग किया गया है और चिन्ह लगाये गये हैं। संकलन के सभी स्थल पढ़ लिये गये हैं। दो-चार पंक्तियाँ ऐसी रह गईं जिन्हें प्रयत्न करने पर भी नहीं पढ़ा जा सका। इन पंक्तियों को जैसा पढ़ा जा सका उसी रूप में लिखा गया, उन्हें रेखांकित किया गया है और बड़े अक्षरों में छापा गया है।

संकलन का विषय

प्रस्तुत संकलन की कविताएं किसी एक विषय से सम्बन्धित नहीं हैं। उन दिनों दक्खिनी में कविता लिखने की जितनी प्रवृत्तियाँ विद्यमान थीं, उन सबका समावेश इस संकलन में है। विषय के अनुसार कविता का वाह्य रूप बदला है। दक्खिनी में कविता का जो वाह्य रूप लिया गया है वह गीतों को छोड़कर पूरे का पूरा फारसी काव्यों से मिलता-जुलता है। आगे चलकर जब उर्दू एक स्वतंत्र साहित्यिक भाषा के रूप में विकसित हुई तो उसने इस वाह्य रूप को ज्यों का त्यों अपना लिया किन्तु हिन्दी में रीति-बद्ध कविता का ऐसा प्रभाव पड़ा कि उसने इन वाह्य तत्त्वों को बहुत अंशों में स्वीकार नहीं किया। उर्दू की ग़ज़लें उसके क़सीदे और मर्सिये दक्खिनी की ग़ज़लों और मर्सियों आदि से परवर्त्ती हैं। मुहम्मद क़ुली कुतुबशाह की गजलें बहुत विकसित दिखाई देती हैं। वजही ने अपने 'सबरस' में एक ग़ज़ल दी है जो ग़ज़ल के पूर्ण-विकास का परिचय देती है। नुसरती के क़सीदे, यदि भाषा पर ध्यान न दिया जाय तो आधुनिक उर्दू के क़सीदों से बहुत मिलते-जुलते हैं। यही बात मसनवी के बारे में कही जा सकती है।

प्रस्तुत संकलन छोटा-सा है किन्तु इस संकलन में उस समय की सभी प्रवृत्तियों का समावेश हो गया है। सत्रहवीं शती में दक्खिनी ने कितना विकास कर लिया था,

इसका पूर्ण परिचय इस छोटे से संकलन से मिल जाता है। काव्य के स्वरूप में ही नहीं भाषा की दृष्टि से भी यह संकलन अपना महत्व रखता है। फ़ारसी और अरबी के ज्ञाता दोनों भाषाओं के शब्द इस भाषा में सम्मिलित कर रहे थे किन्तु उसका मूल रूप सर्वथा स्वस्थ था। संस्कृत और हिन्दी के शब्द त्याज्य नहीं माने जाते थे। मराठी का प्रभाव इस बोली पर पड़ रहा था, भाषा की शब्दावली स्थिर नहीं थी किन्तु उसका बहुत कुछ परिमार्जन और परिष्करण हो चुका था। व्याकरण पर भी ध्यान दिया जाता था।

काव्य-सौन्दर्य

दक्खिनी के बहुत-से काव्यों का महत्व केवल भाषा सम्बन्धी विकास की दृष्टि से है, किन्तु यह संकलन भाषा के साथ साथ काव्य की दृष्टि से भी महत्व रखता है। संकलन कसीदे से प्रारंभ हुआ है। क़सीदा प्रशंसात्मक कविता का एक स्वतंत्र रूप है। प्रशंसा किसी राजा की भी हो सकती है, किसी महात्मा की भी और किसी स्थान अथवा वस्तु को भी। अली आदिलशाह (द्वितीय) ने काव्य के विभिन्न अंगों में अपना कौशल दिखाया है, किन्तु उसे क़सीदा लेखन में भी अधिक सफलता मिली है। क़सीदा लिखने की रीति निश्चित हो चुकी थी। उसकी बँधी बँधाई शैली फ़ारसी से ली गई है। आरंभ में कवि एक भूमिका बाँधता है, ऐसा प्रतीत होता है जैसे उस भूमिका का मूल विषय से कोई सम्बन्ध नहीं है, किन्तु कवि बड़े नाटकीय ढंग से उपयुक्त अवसर पर भूमिका और वर्ण्य विषय का सम्बन्ध जोड़ता है। क़सीदे की सफलता बहुत कुछ भूमिका पर निर्भर होती है। 'शाही' शिया सम्प्रदाय से सम्बन्ध रखता था, अतः हज़रत मुहम्मद के पश्चात् उसने हज़रत अली का क़सीदा लिखा। दोनों कसीदे उत्कृष्ट हैं। 'शाही' उस महल से प्रेम करता है; जहाँ वह रहता है। चारों ओर के वातावरण से उसका रागात्मक-सम्बन्ध है। इसीलिए हज़रत मुहम्मद और हज़रत अली की प्रशंसा के पश्चात् वह अपने अलीदाद महल, अपने उद्यान और अपने जल-कुण्डों का वर्णन करता है। मनोभाव को व्यक्त करने के लिए उपमा, रूपक आदि अलंकारों का उपयोग किया गया है।

पहले बताया जा चुका है, क़सीदा भूमिका से प्रारंभ होता है। हज़रत मुहम्मद के क़सीदे में एक उद्यान का वर्णन भूमिका के रूप लिया गया है। उस काल्पनिक उद्यान के हौज़ को देखकर कवि कल्पना करता है—

उदक जल थल भरे हौज़ाँ नहीं है जानो भूमी पर
चन्दर का मुख दिखाने तईं सुरज अरस्याँ मँगाया है

हौज़ों में पानी नहीं है। चन्द्र का मुख दिखाने के लिए सूर्य ने पृथ्वी तल पर दर्पण जड़े हैं!

अबर शरबत के मश्काँ कर दरख्ताँ तईं पिलाया है
मयराँ नाचते ठारे बदल बिरदंग बजाया है

पाताँ मने डाल्याँ दिसें नारंज की मुज यूँ
तरुन सुन्दर के जोबन पर सबज़ वाला उढ़ाया है

हरे पत्तों में ढकी हुई नारंगी ऐसी लगती है जैसे हरे वस्त्र में ढके हुए तरुणी के स्तन। उद्यान का वर्णन करने के पश्चात कवि ने हज़रत मुहम्मद की प्रशंसा प्रारंभ की है। उद्यान का वर्णन पढ़ते समय पाठक का हृदय अलौकिक सौन्दर्य से ओत-प्रोत हो जाता है और तब—

खया माली न कर दावा वड़ा वो नावँ पाया है
——(बड़ा) वो इस्म अहमद का जिने दीं अप निपाया है
दिस्या जो नूर का झलका चन्दर तुम सम पड़्या हलका
सुरिज ने कान भा हल्क़ा बँद्याँ में अप लिखाया है

हज़रत अली के क़सीदे में सुरा की माधुरी भूमिका के रूप में दी गई है। यह सुरा न तो लौकिक है और न साधारण। इस मधु का पान सामान्य व्यक्ति नहीं कर सकता। कवि सूफ़ी साधक की तरह हज़रत अली के सम्बन्ध में कहता है—

हँस चाल ले पिया ने आते लटकते देखे
परदा नयन के म्याने राखूँ न तूतिया का

अपने प्रिय (हज़रत अली) को देखने के लिए उसे सुरमे का आवरण भी प्रिय नहीं! प्रिय यदि अपने हाथ से मधुपान कराये तो क्या बात है—

पिय सात रात जागूँ प्याला पिया सूँ माँगूँ
प्याला सजा वही है पिव हात के दिया का

और—

अंम्रित अधर पिलावे होवे कलप कया का

हज़रत अली विद्वान थे और परम पराक्रमी भी। उनके पराक्रम का वर्णन करते समय कवि की वाणी का ओज इस तरह व्यक्त होता है—

तुज क़हर के आतिश कने इस्पन्द होय हासिद जिते
शमशीर के पानी मने दुश्मन के सिर हैं बुड़बुड़े
रज तज के सट घरबार सब
चकपक गँवा दुश्मन अड़े

जहाँ-जहाँ वीर रस का उद्भव है, कवि की भाषा बहुत सरल है। उसने दक्खिनी के प्रचलित शब्दों और मुहावरों का प्रयोग किया है। ये शब्द देखने में ग्राम्य प्रतीत होते हैं किन्तु उनमें भावों को व्यक्त करने की पर्याप्त क्षमता है।

अलीदाद महल के क़सीदे में कवि अपने महल, उद्यान और जल-कुण्डों का इतना अच्छा वर्णन करता है कि पाठक के मन में उन सब का चित्र अंकित हो जाता है। अलीदाद महल के वर्णन में उसने दिन और रात का प्रभावशाली वर्णन किया है—

हुआ परकास जो दिनकर दिखाया मुक का झलक
लाजों ते दीस के अंगे होती है रात वझल

दिन पूरी तरह नहीं निकला। कुछ कुछ अँधेरा है। सान्ध्यवेला का हल्का सा अँधेरा कितना सुहावना है—

दिसावे दीस के आगे सियाही रात की यूँ
थोड़ा ज्यूँ साफ़ नयन में पैने हैं नार कजल

रात सुन्दर लजीली नववधू है। दिवस वर की भाँति उपस्थित हुआ है—

देखे जब दीस के नौशो कूँ बना आता है
लिये है रात अरूसी लाजे है दिन के अगल
उसी के दुक ते चली रात में होलर से ढलक
देखो यू दीस लटकता आता समदुर सा उबल

कवि उद्यान का वर्णन करते समय फ़ारसी काव्यों की परिपाटी को तोड़ता है। वह भारतीय फल-फूलों में सौन्दर्य का दर्शन करता है। आम की इस सुन्दरता का साक्षात्कार कितने कवियों ने किया होगा—

देखो कारीगरी किस भाँत की कीता है बहार
अंब के ज़र्फ़ में सनअत सूँ भर्या है ज़र हल
ख़ुश नज़र अम्ब की ख़ूबी दिसे तन में दो रंग
कहरुबा सार का नीमा नीमा है ज्यूँ के पवल

उसके उद्यान की अंजीर के आगे शहद क्या है? उन अंजीरों को देखकर लाजों ते मोम के परदे में छिपा जाके असल[1]? कवि का ध्यान आम और अंजीर तक ही सीमित नहीं रहा। दक्षिण भारत में ताड़ी से मिलता जुलता एक मादक पेय होता है जो 'सेंधी'

---

१ शहद।

कहलाता है। सेंधी के पेड़ पर एक फल लगता है—मुंजल। मुंजल खाने में शीतल और मधुर होता है। इस फल में जल का अंश अधिक होता है। मुंजल गर्मियों में होता है। यह प्यास बुझाने के काम भी आता है। इस फल का इतना सौभाग्य कहाँ कि नागर जन साहित्य में उसका नाम भी लें। किन्तु 'शाही' ने उसका भी वर्णन किया है। आम और अंजीर के पश्चात् उसकी दृष्टि मेवों के ऊँचे वृक्ष पर गई—

दिसे शरबत के यू कूज़े जिते नारियल के कपर
मीठे कइ नीर के चश्मे ते भर्या है मुंजल

मुंजल क्या हैं शर्बत के कूजे हैं। इन्होंने नारियल को भी जीत लिया है। शाही एक मनुष्य के नाते कहता है यह महल रहती दुनियाँ तक रहे—

जो लगों नूर सूँ दिनकर अछे होर चांद व गगन
तो लगों रात दिन व पहर घड़ी उसन मने
वजो आनन्द सूँ इस घर में सदा ताल मँदल

फिर वह कवि के नाते स्वार्थ से ऊपर उठता है—

जान होर दिल थे उचा हात दुआ मंगता है
ता अछे असन में सुख चैन ते यू खल्क सकल

पाँचवां क़सीदा शृंगार रस से सम्बन्धित है। कवि की दृष्टि में प्रेम का बड़ा महत्व है। प्रेम एक रहस्य है, जो उसकी थाह लेने गया वही उलझ गया। कवि के विचार में—

गर इश्क के पंजाँ मने अबूअली उलझे कधीं
ना खोल सक इस गिरह कूँ बेताब हो अक्सर अड़े

इस प्रेम में वेदना भी मधुर हो उठती है। आँसू मोती का रूप धारण करते हैं—

गर कोई नज़र कर इश्क की दर्पन में देखेगा नयन
साया दिसे आँसू का यूँ ग़ल्तान मोती जूँ लड़े

शृंगार रस सम्बन्धी कसीदे में प्रेमिका मान किये बैठी है। प्रेमी उसका मान भंग करता है। प्रेम की जिस वाटिका में प्रेमी और प्रेमिका विहार करते हैं, वह—

तहाँ का माली पिरम का पानी
नयन मडयाँ में सदा पिलावे

जिते अरूसाँ चमन के ऊपर
खिले-फुले हो करे झकारा

प्रेमिका का अतिरंजित सौन्दर्य देखने योग्य है। केवल उसके नख को देखकर चन्द्रमा छिप गया और अमावस्या हो गई, नख के सौन्दर्य का वर्णन सुनकर ही ध्रुव नक्षत्र लंगड़ा होकर उत्तर दिशा में पड़ा हुआ है—

हरे अँचल में सुंदर वो मुक यू चंदर गगन बिच झलक दिसे ज्यूँ
हँसी में तिसके अधर दिसे यूँ हुआ शफ़क मिल सबा का पारा
सुंदर नखाँ कूँ चंदर ने देख्या वझल हुआ तब अमास में छप
ख़बर यू सुनकर गँवा गया पग लिया है कोना क़ुतुब का तारा

मसनवी

संकलन में दो मसनवियाँ हैं। मसनवी एक प्रकार का कथात्मक काव्य होता है। मसनवी प्रेम-कथा को आधार बनाती है, किन्तु यह आवश्यक नहीं कि मसनवी का विषय प्रेम कथा से ही सम्बन्ध रखता हो। वीर रस तथा अन्य रस से सम्बन्धित इतिवृत्त पर भी मसनवी लिखी जा सकती है। मसनवी की रीति बहुत पुष्ट हो चुकी है। वह एक प्रकार से स्वतंत्र रचना होती है और उसके आरंभ में हम्द, नात, मुनाजात और मदह रहती है। इस संकलन में एक मसनवी 'खैबर नामा' हज़रत अली के एक युद्ध से सम्बन्ध रखती है और दूसरी मसनवी शृंगार रस से सम्बन्धित है। मसनवी का संक्षेप में कहना संभव नहीं है। संक्षेप में न तो घटना का वर्णन किया जा सकता है और न पात्रों का चरित्र-चित्रण हो सकता है। संकलन की छोटी-छोटी मसनवियों में 'शाही' को उल्लेखनीय सफलता नहीं मिली।

ग़ज़ल लिखने में कवि सफल रहा है। उस समय दक्खिनी में ग़ज़ल का विकास हो चुका था। इसी लिए शाही की ग़ज़ल में प्रौढ़ता है ग़ज़ल का मुख्य रस है शृंगार। एक ही ग़ज़ल में विप्रलंभ और संयोग दोनों प्रकार के शृंगार रस की सृष्टि की जा सकती है। ग़ज़ल का प्रत्येक शेर स्वतंत्र होता है किन्तु ग़ज़ल के सभी शेर मिल-कर श्रोता अथवा पाठक के मन पर एक सुन्दर, सम्पूर्ण और उभरा हुआ चित्र अंकित करते हैं। ग़ज़ल का निर्माण कवि की दक्षता और साधना का प्रतिफल होता है। दक्खिनी और आगे चलकर उर्दू में जो ग़ज़लें शुरू शुरू में लिखी गईं उनमें क्रम निर्धारित नहीं होता था। आगे चल कर फ़ारसी वर्णमाला के प्रत्येक अक्षर के अन्त्यानुप्रास तथा वर्ण-समान्य के आधार पर ग़ज़लों को दीवान में संकलित किया जाने लगा। यह प्रवृत्ति इतनी बढ़ी कि समस्त अक्षरों के अन्त्यानुप्रासों और वर्णसामान्य के लिए जबर्दस्ती ग़ज़लें लिखी जाने लगीं और कृत्रि-मता बहुत आ गई। महाकवि ग़ालिब ने इस प्रकार के ग़ज़ल संकलन की बुराई अनुभव की थी। दक्खिनी में कुछ कवि ऐसे हुए हैं जिन्होंने प्रत्येक अक्षर के अन्त्यानुप्रास पर ग़ज़लें

लिखी हैं, किन्तु शाही तक यह पद्धति पूरी तरह स्वीकृत नहीं हुई थी। शाही की ग़ज़लों का विन्यास और वाह्यरूप ईरानी है, किन्तु उनके वर्ण्य विषय पर भारतीयता का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। फारसी काव्य के शृंगार के साथ साथ भारतीय ढंग का शृंगार रस भी इन ग़ज़लों में दिखाई देता है। कहीं प्रेमिका का सौन्दर्य प्रेमी को बन्दी बनाता है—

फाँदे करे दो ज़ुल्फ़ घुँघरवाल रखबाले
मुज नैन पखेरू के बदल तिल रखे चारा

कई स्थलों पर भारतीय नारी का दिव्य और साधनारत रूप मूर्तिमान हुआ है। वह भारतीय नारी जो अपनी अलकों से प्रिय को बन्दी बनाने की बात तो दूर अपना सर्वस्व समर्पण करने में ही अहोभाग्य मानती है। तप में अपने आपको गला देती है, जिससे जन्म जन्मान्तरों तक वह अपने प्रिय की दासी बन सके। उसे अपना पृथक और वरिष्ठ पद अभीष्ट नहीं, वह अर्द्धाङ्गिनी के गौरवमय पद पर आसीन होकर तृप्ति अनुभव करती है--

अर्दंग हो में पिया की दिसती हूँ छावँ सम हो
कइ भाव ते रिझा कर लेती हूँ मन में जम जम

रूँ रूँ छकी हुई हूँ पी वस्ल का पियाला
पिव जीव हो के हरदम बसता हमन में जम जम

कीती हूँ चक कसौटी रंग रूप जो परखते
पिव सूर-सा झलकता बत्तिास लच्छन में जम जम

प्रिय प्रेमिका को स्मरण कर ले तो प्रेमिका निहाल हो जाए और सिर के बल प्रेमी के पास पहुँचे—

सजन मिलने बुलावे जो
चलूँगी पाँव कर सिस सूँ

कई कवियों ने कवित्त, दोहे अथवा शेर में दो भाषाओं का प्रयोग किया है। एक, दो अथवा तीन चरणों में संस्कृत अथवा हिन्दी होती है तो एक चरण में फ़ारसी या हिन्दी। रहीम की इस तरह की कविताओं से हिन्दी भाषी परिचित हैं। अली आदिल ने इस तरह एक द्विभाषी ग़ज़ल लिखी है। एक शेर यहाँ दिया जाता है—

वो मनवसी आने की धुन सुनते हुआ मुज काम सुक
अत शौक़ सूँ पीने बदल पुर[1] मी कुनम पैमाना रा

ब्रजभाषा के कवियों ने रूपकों का निर्वाह दूर दूर तक किया है। हिन्दी की रीतिकालीन कविता का यह प्रभाव शाही पर भी दिखाई देता है। एक पूरी ग़ज़ल वृक्ष पर लिखी गई है जिसमें वृक्ष को एक संन्यासी के रूप में चित्रित किया गया है।

मुखम्मस और मुसम्मन

फारसी में पाँच चरणों और छह चरणों की कविता के लिए अलग अलग नाम हैं। इस संकलन में एक मुखम्मस और एक मुसम्मन है। मुखम्मस सुनने में गीत प्रतीत होता है। मुखम्मस में विरहिणी की वेदना किस सफलता से ध्वनित हुई है—

ला दीपक बिरहा अपने में
तन जाली झुक-झुक जपने में
तुज याद कर तलमलती हूँ
ल्हउ तेल में दिल तलती हूँ
तन मोमवत्ती हो जलती हूँ

ख़ाजा बन्दे नवाज और गुलबर्गा

मुसम्मन में कवि ने दक्षिण के एक प्रसिद्ध सूफ़ी साधक ख़ाजा बन्देनवाज़ की प्रशंसा लिखी है। शाही अपने आसपास के वातावरण से बहुत प्रभावित है। वह इस प्रभाव को अपनी कविता में व्यक्त करता है। उसके समय तक गुलबर्गा के ख़ाजा बन्दे-नवाज गेसू दराज की कीर्ति दूर-दूर तक फैल चुकी थी। उनके मजार पर आज की तरह सहस्रों नर-नारी एकत्रित होते थे। मुसम्मन में ख़ाजा का यही महत्त्व मुखरित हुआ है।

स्वर्गीय ख़ाजा की मजार के कारण गुलबर्गा की मिट्टी भी—

पाक है काफ़ूर ते जाँ तूँ समाया सो ज़मी

मर्सिया

कवि ने एक मर्सिया भी लिखा है। मर्सिया शोक को व्यक्त करता है। हज़रत अली के दो सुपुत्रों—हज़रत हसन और हुसेन को लेकर अनेक मर्सिये लिखे गये। मर्सिया उर्दू काव्य साहित्य का विशेष अंग है। प्रस्तुत संकलन में जिस पृष्ठ पर मर्सिया लिखा गया था उसे दीमक चाट गई, अतः 'शाही' की मर्सिया सम्बन्धी दक्षता का परिचय पाने का कोई साधन नहीं है।

दक्खिनी कविता के अन्त में फुटकर रुबाइयाँ और शेर संकलित हैं।

१. सुरापात्र पूर्ण रूप से भरा।

कवित्त-दोहा-पहेली

दक्खिनी के आरंभिक लेखक ब्रज तथा हिन्दी की अन्य विभाषाओं के साहित्य से अच्छी तरह परिचित थे। वजही ने 'सबरस' में स्थान-स्थान पर ब्रजभाषा के दोहों को उद्धृत कर अपना मत पुष्ट किया है। दक्खिनी के इन कवियों की तरह 'शाही' भी ब्रजभाषा की परम्परा से अच्छी तरह परिचित था। उसके कुछ दोहे, कवित्त और पहेली इस संकलन में एक स्थान पर दी गई हैं। इसमें कोई सन्देह नहीं कि इन दोहों और कवित्तों में ब्रजभाषा के कवियों जैसा प्रवाह नहीं है, किन्तु इन दोहों तथा कवित्तों से इतना परिचय मिलता है कि सुदूर दक्षिण में रहते हुए भी दक्षिण के कवि उस भाषा से कितने प्रभावित थे, जो उत्तर भारत के बहुत बड़े क्षेत्र की सांस्कृतिक भाषा बनी हुई थी, और यह भी पता चलता है कि शाही की कविता में जो भारतीय तत्व दिखाई देते हैं उनका उद्गम ब्रज-भाषा की कविता से हुआ।

गीत

बीजापुर के शासक संगीत में रुचि रखते थे। इब्राहीम आदिलशाह (द्वितीय) हिन्दुस्तानी संगीत का बहुत प्रेमी था। संगीत के कारण बीजापुर दरबार में ब्रजभाषा को अच्छा स्थान मिल गया था। शाही ने जिन राग-रागिनियों में गीत लिखे हैं वे इस प्रकार हैं—

झूलना, भूपाली, आसावरी, नट, बिहागरा, देसी टोड़ी, केदारा, काँगड़ा, सारंग, श्रीगौड़ी, भैरूँ, अडाना, गोंड मलार, यमन, रामकली, पूरबी, पूरिया, मलार, बिलावल।

राग-रागनी में स्वर और ताल पर ध्यान रखना पड़ता है। फलतः काव्य-सौन्दर्य उस मात्रा में दिखाई नहीं देता जितना काव्य के अन्य अंगों में देखने को मिलता है। शाही ने अपने गीतों में शब्द चयन करते समय विशेष रुचि से काम लिया है। न तो उनमें व्याकरण का उल्लंघन है, न शब्दों की तोड़ मरोड़। वर्ण मैत्री पर पर्याप्त ध्यान रखा गया है।

'शाही' की प्रतिभा बहुमुखी है। यह छोटा सा संकलन उनकी प्रतिभा के सम्बन्ध में पर्याप्त प्रकाश डालता है।

छन्द

हिन्दी के छन्दों के अतिरिक्त शाही फ़ारसी के छन्दों पर पर्याप्त अधिकार रखता है। शाही ने अपनी प्रत्येक कविता नये छन्द में लिखी है। दक्खिनी के प्रारंभिक कवियों में शाही जैसे बहुत कम कवि हैं, जिनके छन्दों में शिथिलता नहीं है। एक अव्याहत नाद जिनके छन्दों में मुखरित हो रहा है। जिनके छन्दों की लय विषय को स्वयं व्यक्त करती है। शाही ने कुछ अन्त्यानुप्रास और वर्णसाम्य ऐसे चुने हैं, जिनमें कविता लिखना आज भी कठिन माना जाता है। कवि का एक क़सीदा लकारान्त वर्णसाम्य पर है। इस प्रकार का वर्णसाम्य अत्यन्त कठिन माना जाता है। कवि अपने छन्द-कौशल से स्वयं परिचित है—

बँध्या हर बैत में कई लफ़्ज़ यू सनअत के नवल

भारतीयता

शाही ने जिस तरह की भाषा अपनाई है, भावों की अभिव्यक्ति के लिए जो शैली स्वीकार की है, उसे देखते हुए यह कहा जा सकता है कि वह भारत की साहित्यिक परम्परा, काव्य-रूढि, कवि-मान्यता और हिन्दुओं की पौराणिक गाथाओं से अच्छी तरह परिचित है। उसने कुछ छन्दों और वाह्य रूपों में फ़ारसी का अनुसरण किया है किन्तु उसके काव्य की आत्मा भारतीय है। उसने प्रेम और सौन्दर्य के लिए पूरी तरह भारतीय उपमानों से काम लिया है। वह चातक, चकोर और कमल के द्वारा प्रेमी तथा प्रेमिका की अदयता और तल्लीनता को प्रकट करता है—

चातिक हुआ है मुज दिल कहता है पीव पिव कर
सेवक हुआ हूँ दायम तू साईं मुज जिया का
× ×
सजन सूँ दिल यू लग्या है मेरा
चकोर चन्दर रहे जनम भर

वह खंजन से भी परिचित है—

खंजन जैसे नयन म्याने
दिसे काजल सूँ सूका जब
सफ़ा काग़ज़ ये इस ख़ूबी सूँ
में जदवल नहीं देख्या

शाही ने ऐसे शब्दों और मुहावरों का प्रयोग किया है जिनके पीछे दीर्घकालीन परम्परा है—

तू सूर कुलदिपक है माता-पिता भया का

हिन्दी साहित्य में न जाने कितने स्थानों पर वीर का खड्ग और भाला शेष नाग के पात समान फनों को विदीर्ण कर चुका है। शाही भी इस कवि-मान्यता से परिचित है और उसका प्रयोग हज़रत अली के लिए करता है—

जब रन में खींचे खडग तूँ
फिर होय दशहत मर्ग[1] कूँ
उस वार की झनकार ते
भू नाग के फन झड़ पड़े

---

१. मृत्यु

शेष नाग का स्मरण कवि ने एक दूसरे स्थान पर भी किया है। उसके उद्यान में अंगूर ऐसे रसीले हैं कि एक अंगूर फूटता है तो उसकी मिठास शेष नाग को भी मिलती है—

सारे अंगूर की बेलाँ पे पके यूँ ख़ोशे
मिठाई सेस कूँ अँपड़े पड़े गर भुइँ पे पिघल

पौराणिक देवताओं और घटनाओं का उपयोग भी शाही ने अपनी वाणी को सजाने में किया है। गौतम ऋषि ने इन्द्र को सहस्रलिंगी (भग) होने का शाप दिया। तप के कारण इन्द्र सहस्रलिंगी से सहस्राक्ष हो गये। कवि ने सहस्राक्ष इन्द्र और अप्सरा रंभा का उपयोग अपने महल की शोभा को चित्रित करने में कितनी कुशलता से किया है——

यथी अरायश हुई महल में इंदर ने देखन नयन किया तन
रँभा ते जेती हुसन में आली बँधी अपस तो बिरद अपारा

एक अन्य स्थान पर इन्द्र की सामर्थ्य से लाभ उठाया गया है——

इन्दर सँवार्या आरती तुज मुख सलौने के बदल
चंद-सूर दो दीपक दिसें आकास सो थाला हुआ

दक्खिनी के बहुत से कवियों ने भारतीय उपमानों, आख्यानों और काव्य-रूढ़ियों का उपयोग किया है किन्तु 'शाही' की कविता में इन सब का जैसा समुचित प्रयोग हुआ है, वह अन्यत्र नहीं दिखाई देता।

भाषा

इस संकलन में फ़ारसी के समासित तत्सम शब्दों और समासित शब्दों का प्रयोग हुआ है, किन्तु उनकी संख्या अधिक नहीं है। धार्मिक आस्था को प्रकट करने के लिए ही इस प्रकार के शब्द आये हैं। समासित शब्द द्वन्द समास और षष्ठी तत्पुरुष में ही आये हैं। जैसे हूरोपरी, शहदो लबन, आहोअफ़सोस, फ़तहोज़र, बबरो-पलंग। कवि ने संस्कृत से ऐसे तत्सम शब्दों का प्रयोग भी किया है जो सामान्यतया बोलचाल में नहीं आते जैसे दिनकर, उदक, पावक। फ़ारसी के कुछ दुरूह तत्सम शब्दों का प्रयोग भी हुआ है—मौजिज़ा, मुनव्वर, हल्क़ा, अदू, अफ़ज़ू, मुरस्सा, मुस्तजाब। संस्कृत के तद्भव और हिन्दी के ठेठ शब्दों की संख्या बहुत अधिक है। इन तद्भव शब्दों से दक्खिनी के भाषा वैज्ञानिक विकास के समझने में सहायता मिलती है। नद्याँ (नदियाँ), वरन, (वर्ण), सरन (शरण), कवँल (कमल), नाँवँ (नाम), करतार, सौंसार, साँज, जोसी आदि।

ऐसे शब्दों की सँख्या भी बहुत अधिक है जो बोल-चाल की दक्खिनी में तो प्रयुक्त होते हैं किन्तु जिनका साहित्य में कम प्रयोग हुआ है। जैसे भाड़-भड़ूले, पूर चड़े,

निपा, सभू, सभों में, धड़धड़े, जूझन्त, खड़बड़े, पझर, भडकल, दटा, अतगत, लकलक, गोटाल, औधान आदि ।

हिन्दी के कुछ शब्दों का प्रयोग भिन्न अर्थों में हुआ है। 'दूती' शब्द का प्रयोग शाही ने कई स्थानों पर किया है, किन्तु वह सौत या सपत्नी के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। मुहम्मद क़ुली क़ुतुबशाह ने भी दूती शब्द का प्रयोग इसी अर्थ में किया है। इसी तरह लोभ शब्द शाही की कविता में प्रेम का पर्यायवाची है। जैसे—'साईं करे लोभ जब दूर होवे मेहन।' इस प्रकार के शब्दों पर यथा स्थान टिप्पणी लिखी गई है। दक्खिनी में लकार रकार में नहीं बदलता किन्तु शाही ने एक स्थान पर 'फल' के स्थान पर 'फर' का प्रयोग किया है। यह ब्रज भाषा के प्रभाव को सूचित करता है।

हस्तलिखित प्रति के पढ़ने और फ़ारसी अरबी के शब्दों के अर्थ निर्धारण में मुझे मेरे मित्र और गुलबर्गा कालेज के सहकर्मी, फ़ारसी और उर्दू के प्राध्यापक श्री मुबारिजुद्दीन 'रफ़त' से बहुत सहायता मिली है। दक्खिनी, ठेठ हिन्दी, मराठी आदि शब्दों के अर्थ निर्धारण और उन पर टिप्पणी लिखने का काम पूर्णतया मैंने किया है अतः उसका दायित्व मुझ पर है।

मैं आगरा विश्वविद्यालय के क० मुं० हिंदी विद्यापीठ का आभारी हूँ। विद्यापीठ के सञ्चालक डाक्टर विश्वनाथ प्रसाद जी ने इस संकलन के प्रकाशन में जो सहायता की है उसके लिए मैं आभारी हूँ। श्री उदयशङ्कर शास्त्री जी ने प्रूफ देखने में जो सहायता की है उसके लिए मैं कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ।

२५ मई १९५७
गवर्नमेण्ट सिटी कालेज,
हैदराबाद

श्रीराम शर्मा

अली आदिल शाह

का

काव्य-संग्रह

(अक़्ल) का मकतब हुआ फ़ह्म के पढ़ने बदल
अक़्ल मुअल्लिम अपैं क़िस्सा सिखाया कुहन
अक़्ल ख़बरदार है अक़्ल हमाकार है
अक़्ल का जासूस हो मुक पे अछे यू किरन
अक़्ल ले कूते जिते नेम-धरम होर किते
अक़्ल कूँ औसाफ़ का लेके पिन्हाये बरन
अक़्ल कसौटी हुई तबा के कसने बदल
बूझ रख्या है सराफ़ क़ल्बो खरा ज्यूँ कँचन

पढने बदल = पढ़ने के लिए, अपैं = आप ही, स्वयं। अछे = है, कूते = परीक्षा की, जाँचा। किते = कहाँ, यू = यह, बरन = रंग, कसने बदल = कसने के लिए, ज्यूँ = जिस तरह। मकतब = पाठशाला, फ़ह्म = बुद्धि, मुअल्लिम = अध्यापक, विद्वान (इल्म)। कुहन = पुराना, हमाकार = सब काम करने वाला, औसाफ़ = विशेषता, तबा = स्वभाव, क़ल्बो-खरा = खोटा और खरा।

बदल < बदले = स्थान पर; दक्खिनी में 'बदल' शब्द का प्रयोग चतुर्थी विभक्ति के चिह्न स्वरूप होता है। अपैं = आप + हीं > आपै > अपैं, मुक < मुख, नेम < नियम, किते = कुत्र > कित > किते, दक्खिनी में सकर्मक क्रिया के मध्यम पुरुष में बहुवचन का रूप। बरन < वर्ण, रख्या = रखना, आसन्नभूत तथा सामान्यभूत, कृत। रख + इया, रखिया > रख्या। ज्यूँ = ज्यूँ > ज्यों।

कँचन < कंचन, पुरानी दक्खिनी में पूर्ण अनुस्वार का उच्चारण नहीं किया जाता। अर्द्धानुस्वार का उच्चारण किया जाता है। जब पूर्णानुस्वार का उच्चारण होता है तो 'अ' का उच्चारण कहीं कहीं 'ओं' किया जाता है।

सूचना—हस्तलिखित प्रति में आरंभ के तीन पृष्ठ नहीं हैं। पुस्तक चौथे पृष्ठ से उपलब्ध है।

अक़्ल का मोती मगर मग़ज़ के तबले भितर
ख़ूब दिसावे झलक दुर चक दुर्रे अदन
लब के कीवाड़ाँ लगा पलक का परदा बँधा
सीस नयन का छजा अक़्ल का यू है वतन
तन के क़िले में सदा हुक्म चलावे अक़ल
रसत झलक ते दिसें सकले कँगूरे दसन
भेद करे ही अवल अक़्ल कूँ लेते मिला
दर के हवाले हुई घर की वड़ी हो रसन

दुर=दो, चक=आँख, दिसावे=दिखावे, कीवाड़ाँ=किवाड़ (ब० व०), छजा=छज्जा, सकली=सब, दसन=दाँत, दिसें=दिखाई देते हैं, रसन=जीभ। मग़ज़=मस्तिष्क, तबला=डिबिया, दुर्रे अदन=अदन नामक स्थान का मोती, लब=ओठ, वतन=देश, रसत=पंक्ति, दर=द्वार।

भितर<भीतर, दुर=द्वौ < द्विः > द्विर् > दुर, चक=चक्षु > चख > चक।

दिसावे=दिसाना (दिखाना), दिसना प्रे० वर्त्तमान विधि लि०। दुर्रे अदन=दुर्र-ए-अदन।

कीवाड़ाँ=कपाट > किवाड़ > कीवाड़ ब० व०। छजा=छज्जा > छाजा > छजा। सकली=सकल ही > सकल ई > सकली। दसन=दशन > दसन।

दिसें=दिसना (देखना) आसन्न भूत और विधि ब० व०; पु०।

भइ=भाई > भई > भइ। कूँ < कू < को।

ख़ूब बुरी गर जुदा, चोर हो रहता सदा
अक़्ल की खिलवत मने फ़िक्र अछे राये ज़न
बाल ते बारीकतर राह अछे जो कुमल
वाव के धुजते हैं पग अक़्ल किया वाँ गमन
अक़्ल का जिस घट मने पूर अछेगा घटा
हक़ कूँ वही पा अवल राह लगावे लगन
हक़ की हक़ायक की बूज सब तो हमन कूँ कहाँ
बारे कहता हूँ इता चंद सुख़न ख़ुश वज़न

मने = में, अछे = रहे, कुमल = कोमल, बाव = वायु धुजते = काँपते, वाँ = वहाँ, गवन = गमन, घट = शरीर, हृदय । हमनकूँ = हमको, कता हूँ = कहता हूँ, इता = इतना, गर = अगर, यदि । ख़िलवत = एकान्त, फ़िक्र = चिन्ता, रायेज़न = मंत्रणा देने वाला, हक़ = ईश्वर, चंद = थोड़ा, सुख़न = वचन, ख़ुशवज़न = मनोहर छन्द ।

मने = मध्ये > मने, ते = से, कुमल = कोमल > कूमल > कुमल, बाव = वायु > वाय > बाव । धुजते हैं = धूजना (काँपना) ब. अन्य पु. पुल्लि. । वाँ = वहाँ, धूज < धुज, गवन = गमन > गवन, लगन = लग्न > लगन, बूज = बूझ > बूज । हमनकूँ = हमको > हमन, हमन + को = हमकूँ, कता हूँ = कहता हूँ > कता हूँ, इत = इतना > इत्ता > इत ।

ख़ाक के पुतले बना रूह ले तन में भरा
चाल चला कर अवल आप सिखाया मगन
आब व आतिश मिला ख़ाको हवा ते कला
चार अनासिर लगा देह सँवार्या हमन
दौर फिरें जो तमाम सिजदा करें सुबहो शाम
लेके सितार्यां सँगात चाँद सुरज होर गगन
नूर का झलकात दे हूरो परी लग सँवार
सात तबक़ सरग के पूर रख्या ज़ुल मिनन

तन = शरीर, अवल = अव्वल, पहले । मगन = मग्न, तल्लीन, आनन्द पूर्ण । ते = से, संवार्या = सजाया, हमन = हमारा, सुबहो शाम = सुबह (प्रातः) व (और), शाम (संध्या) । लेके = लेकर, सितार्यां = नक्षत्र, सँगात = साथ, झलकात = झलक, परी लग = परी तक, सरग = स्वर्ग, ख़ाक = मट्टी, रूह = आत्मा, आब = पानी, आतिश = अग्नि, ख़ाको हवा = खाक (मट्टी) व (और) हवा । अनासिर = अनसर (तत्व) का ब० व०, सिजदा = अभिवादन, नूर = प्रकाश, हूरो परी = हूर (अप्सरा) व (और) परी । तबक़ = स्तर, ज़ुलमिनन = ईश्वर ।

चार अनासिर = भारतीय दार्शनिकों ने पाँच तत्व माने हैं, जबकि इस्लाम में आकाश को महाभूत नहीं माना जाता । सात तबक सरग के = इस्लाम के अनुसार स्वर्ग के सात भिन्न-भिन्न स्तर । अवल < अव्वल, मगन < मग्न, संवार्या < सँवारिया, लेके = लेकर, सितार्यां < सितारियाँ (ब० व०), संगात < संग, सुरज < सूरज < सूर्य । दक्खिनी में आरंभ के दीर्घ ऊकार को ह्रस्व उकार बनाने की प्रवृत्ति पाई जाती है । झलकात < झलक, सरग < स्वर्ग, रख्या < रखिया ।

सरग थे बरसात पाड़ भूम सँवारे अपार
गरम कूँ सीतल करे झूले झुला कर पवन

बेहिश्त मुनव्वर बना ख़ाक किया सब सोना
पाच व मानिक बिछा ख़ूब सँवार्या सहन
झाड़ झडूले बना साया ज़मीं पर सटा
पाच के तख़्ते अखंड बाग़ के दिसते जमन
एक हुक्म ते हुए आब के चश्मे निछल
शहदो लबन की नद्याँ पूर चड़े मौजज़न

पाड़ = डालकर, भूम = भूमि, कूँ = को, पाच = हीरा, मानिक = माणिक, सटा = डाला, जमन = स्थायी, निछल = स्वच्छ, पूर = बाढ़ । बेहिश्त = स्वर्ग, मुनव्वर = प्रकाशमान (नूर – मुनव्वर), ख़ाक = मिट्टी, राख । सहन = आँगन, साया = छाया, शहदो लबन = शहद (और) दूध, मौज ज़न = तरंगित ।

सरग < स्वर्ग, थें = थे (से), अपादान कारक की विभक्ति । पाड = पाडकर. पाडना = उखाड़ना, भूम < भूमि, सीतल < शीतल, झडूले < झाड (पेड़) + ला (ह्रस्वार्थक) । अन्तिम अकार के स्थान पर ऊकार । सटा-सटना (गिराना, रखना, फैलाना) का भू० का० । दिसते = दिसना (दीखना) वर्त्त० ब० व०, दिखाई देते हैं । निछल = नि + छल । नद्यां < नदियाँ, चड़े < चढ़े ।

गौर बदन के बना स्याम सलौने निपा
आप सरफ़राज़ कर सकले दिखाया वरन
झाड़-फर रात दिन आप इबादत बदल
इश्क़ लगा कर अवल लोभ ते राख्या अमन
शाहो गदा कइ निपा ज़ौक़ सूँ राख्या मिला
पेम बधावा पढ़ा जग कूँ किया अंजुमन

निपा = उत्पन्न कर, सकले = सब, वरन = रंग, झाड फर = पेड और फल, आप इबादत बदल = आपकी भक्ति के लिए, अमन = पवित्र-निर्मल, पेम = प्रेम, बधावा = मंगल गीत, बधाई का गीत । बदन = शरीर, सरफ़राज़ = कृतार्थ, शाहो गदा = बादशाह और फ़क़ीर, शाह (शासक) व (और) गदा (फ़क़ीर) । ज़ौक़ = प्रसन्नता, अंजुमन = सभा । निपा < निपजाया (निपजाना = उत्पन्न करना) ।

सकले = दक्खिनी में सकल का अर्थ सम्पूर्ण होता है । शाही ने इस शब्द का प्रयोग कई स्थलों पर किया है, किन्तु उसका रूप स्थिर नहीं है । कहीं सकली और कहीं सकले और कहीं सकला । वरन < वर्ण, फर < फल, दक्खिनी में व्रज की तरह लकार के स्थान पर 'र' का प्रयोग नियमानुसार नहीं होता, किन्तु 'शाही' ने लकार के स्थान पर यहाँ 'रकार' का प्रयोग किया है । बदल = सम्प्रदान कारक की विभक्ति । अमन < अमनिया (विशुद्ध), बधावा < बधना (बढना) + आव = बधावा ।

'शाही' आशिक़ इता बोल मुनाजात कुच
ताके करम तुज पँ होय बहरे हुसेनो हसन
कार जहाँ के सकल फ़िक्र ते भारी अछे
साईं करे लोभ जब दूर हो जावे मेहन
आहो अफ़सोस के क़ुबह ते महफ़ूज़ धर
साया करम का दिखा ज़ौक़ सूँ रख मुज बदल
साईं सचा है तुहीं सेवा तुजे है सही
जिते जहाँ के शाहाँ रोज करें तुज सरन

कुच = कुछ, अछे = रहे, साईं = मालिक, सरन = शरण ।

मुनाजात = हज़रत मुहम्मद के उत्तराधिकारियों की प्रशंसा तथा स्तुति । करम = दया, बहरे हुसेनो हसन = हुसेन और हसन के लिए । कार = काम, मेहन = दुःख, आहो अफ़सोस = आह (हाय) व (और) अफ़सोस (पश्चात्ताप) । क़ुबह = बुराई, महफ़ूज = सुरक्षित (हिफ़्ज-महफ़ूज) । साया = छाया, आश्रय । ज़ौक़ = आनन्द, रोज = नित्य ।

'शाही' कवि का काव्य-नाम (तखल्लुस) । कवि ने गीत में 'मदन रूप' काव्य-नाम का प्रयोग किया है ।

हुसेन–हसन = हज़रत अली के पुत्र तथा हज़रत मुहम्मद के दौहित्र । हुसेन की मृत्यु कर्बला के मैदान में हुई और हसन अपनी पत्नी के विश्वासघात के कारण मरे । शिया सम्प्रदाय के लोग इन दोनों को विशेष आदर से देखते हैं ।

इता < इतना, कुच < कुछ, तुज पँ < तुझ पर, अछे = अछना (रहना, होना) का आशिष लिंग, अन्य पुरुष । साईं < स्वामी । सूँ = से, करणकारक और अपादान कारक की विभक्ति । सचा < सत्य, तुहीं < त्वमेव, जिते < जितने । शाहाँ = शाह (ब०व०) । सरन < शरण ।

क़सीदा[1] दर नाते पैग़म्बर सलवातुल्लाहे अलेह

देखो नौरोज़ चँचल यू बहारिस्तां दिखाया
बरक बिन फल व फूलाँ ने पवन के हत खिलाया है
सरग की औज की कुर्सी सँवार्या दोल (?) हो दिनकर
चन्दर तारे बुलाने घर बसन्त सारा बनाया है

बरक = वर्षा, दोल = झूला, पालना (?), दिनकर = सूर्य । बहारिस्ताँ = वसन्तोद्यान, औज = ऊँचाई, कुर्सी = सातवें आकाश पर ईश्वर का आसन ।

---

1. क़सीदा = प्रशंसात्मक काव्य लिखने की शैली जो किसी भी छन्द में लिखी जा सकती है ।

चँचल <चंचल, दक्खिनी में तत्सम शब्दों के साथ भी पूर्ण अनुस्वार का प्रयोग बहुत कम हुआ है । बरक <बरख <बरखा <बरषा <वर्षा । फूलां <फूल (ब. व.) । हत < हात <हस्त । सरग <स्वरग <स्वर्ग । चन्दर < चन्द्र ।

नात = हजरत मुहम्मद की प्रशंसा में लिखी गई कविता । नौरोज = ईरानी लोगों का नव वर्षोत्सव ।

खला ले हाँस गल डाल्या सुरैया का बँध्या सेहरा
गगन हीरा हुआ शोअरा लगन अपना गिनाया है
हवा परदा मँजे का कर सितार्यां का तगट तिस पर
मुशाता मुश्तरी होकर हलद सूरज लगाया है
बराती सब बुलाया है शरफ़ अपना दिखाया है
ज़री क़िसवत सरापा कर सुरज नौशो हो आया है
उदक जल-थल भरे हांजाँ नहीं है जानो भूमी पर
चन्दर का मुख दिखाने तईं सुरज अरस्याँ मँगाया है

खला = हाला, हाँस = हँसली, लगन = लग्न, मुहूर्त्त । मंजे = पलंग, तगट = बिस्तर, फर्श, हलद = हल्दी, उदक = पानी, अरस्याँ = आरसियाँ, आइने ।

सेहरा = वर के मुख की झालर, मुशाता = शृंगार करने वाली, नाइन । मुश्तरी = बृहस्पति । शरफ़ = कल्याण, ज़री = ज़रदार, क़िसवत = वेश, सरापा = नखशिख, नौशो = वर, । हाँस <हँसली (हँसली = अंश + ली) । मँजा <मंजा <मंच । अरस्याँ = आरसी का ब: व ।

कँवल चन्दर के रश्कों सूँ छिपाया पंक में अपने
लगाया नीर ते यारी कँवल कूँ फिर तिराया है
अजूँ सन्दल शफ़क़ काँ से मँगावे जश्न के कारन
गुलाँ में यूँ भँवर दिसते मुशक प्याले भराया है
अरायश बज़्म कूँ देने दिया तशरीफ़ पानाँ कीं
अबर शरबत के मश्काँ कर दरख्ताँ तईं पिलाया है
चँबेली जो छबीली है येती नाजुक नवेली है
गुलाँ की नित सहेली कर खिला मजलिस में ल्याया है

पंक = कीचड़, अजूँ = अभी, इस समय, आज भी । कां से = कहाँ से, यूँ = इस तरह, भँवर-भौंरा, पानाँ की = पानों की, येती = इतनी । रश्क = प्रतिस्पर्द्धा, ईर्ष्या। सन्दल = चन्दन, शफ़क = सन्ध्या की लालिमा, जश्न = उत्सव, मुश्क = कस्तूरी, अरायश = शोभा,

बज्म = सभा, तशरीफ़ = वेश, ग्रबर = बादल, मश्क = मशक (चमड़े का वह थैला जिससे भिश्ती पानी भरता है)।

कँवल < कमल, ग्रजूँ < ग्रज हूँ < ग्रद्यापि। काँ < कहाँ, कारन < कारण, भँवर < भमर < भ्रमर। पानाँ < पान (ब. व.)। मश्काँ = मशक (ब. व.)। चँवेली < चमेली। ल्याया है = ले ग्राया है।

बनफ़्शाँ बास के दावे ग्ररूसी ले के नित बैठी
नज़ाकत देकते उसकी नयन नरगिस खिलाया है
पँखी ख़ुशमग़ज़ हो स्यारे ग्रपस में ग्रप लगे गाने
मयूराँ नाचते ठारें बदल बिरदंग बजाया है
बँधे पिन (?) लग पितम्बर ले बसँत के काज में मिलने
कबूतर बिरह तें कूके पपीहा धुन सुनाया है
मदन के बान की फाँकाँ ग्रछे केतुक गिरे बन में
जलद कर बास में ग्रपसें (?) भुजँग के मन लुभाया है

बास = गंध, पँखी = पक्षी, स्यारे = सब, ग्रपस में ग्रप = ग्रपने में ग्राप। पिन = (?), केतुक = कितनी। बनफ़्शाँ = एक वनस्पति, ग्ररूसी = दुलहन, नरगिस = एक पुष्प जो नेत्र का उपमान माना गया है, मदन के बान = मदन बान-एक पुष्प, मदनमस्त। ख़ुशमग़ज = प्रसन्न बुद्धि।

देकते < देखते, पँखी < पंखी < पक्षी। स्यारे < सारे, ग्रप < ग्राप < ग्रात्मन्।

सरो माते छके मद के खड़ डुलते चमन म्याने
ग्रिनब बेलाँ कुलालाँ कर सुरह्याँ दप बँधाया है
चँपे के झाड़ की ख़ूबी दिसावे नयन में यूं हो
मगर शजरे ज़मर्रुद का कँचन सूँ बार ग्राया है
सुँदर रेंती (?) जो ग्राली है सजन बाले की बाली है
बड़े मग़ज़ों खयाली कर पवन मग़ज़ों चढ़ाया है
हरे पाताँ मने डाल्याँ दिसें नारंज की मुज यूँ
तरुन सुन्दर के जोबन पर सबज़ वाला उढ़ाया है

माते = मस्त, छके = तृप्त, म्याने = में, ग्रन्दर। कुनालाँ = कल्लोलें, सुरह्यां = शराब-की सुराहियाँ, दप = ढप, बाला = बाल, युवक। बाली = बाला, युवती। पाता = पत्ते, वाला = धूपछांही कपड़ा। सरो = एक वृक्ष जो ग्रपनी लम्बाई ग्रौर सीधे पन के कारण प्रेमिका का उपमान माना जाता है। ग्रिनब = ग्रंगूर, शजरे ज़मर्रुद = जमर्रुद (पन्ना) का पेड़, बार = फल, नारंज = नारंगी।

माता < मत्त, सुरह्याँ < सुराहियाँ, पाताँ < पात (ब. व.) < पत्र । डाल्याँ < डालियाँ, तरुन < तरुण, मुज < मुझ ।

अधर पर ला धरे रंग्गीं किया है लाफ़ लाला जब
मुक़ाबिल रँग दिखाने कूँ हिया दाडिम चुराया है
गुलाबी फूल पर दावा लग्या करने समन सेंती
खया माली न कर दावा बड़ा वो नावँ पाया है
वो बोल्या बाग़ माली सूँ बड़ा है नाँवँ सो किसका ?
खया वो इस्म अहमद का जिने दीं अप निपाया है;
मुहम्मद शाहे मुरसिल का मँग्या जब नात कहने में
मिठाई पाके मन मेरा यू मज़मूँ चुन के ल्याया है

अधर = ओठ, हिया = हृदय, दाडिम = अनार, सेंती = से, खाया = बोला, निपाया = उत्पन्न किया; मिठाई = मधुरता । रंग्गीं = रंगीन, लाफ़ = बड़ाई, लाला = एक पुष्प, समन = चमेली, इस्म = नाम, अहमद = हज़रत मुहम्मद, दीं = दीन, धर्म । शाहे-मुरसिल = रसूलों के बादशाह हज़रत मुहम्मद । नात-हज़रत मुहम्मद की प्रशंसा में लिखी गई कविता । मज़मूँ = मज़मून, विषय ।

लग्या < लगिया < ल्याया < लियाया < लाया, खया < कहा । नावँ < नाँवँ लगा । < नाम, जिने ∠ जिन्होंने, निपाया < निपजाया, मँग्या < मँगिया ।

मुहम्मद सा नहीं पैदा किया करतार तिरजग में
उसी के इश्क़ ते सोंसार तिरजग का भराया है
शरीअत होर हक़ीक़त का इनायत सब किया साईं
बड़ा रुतबा दे आलम में करम अपना जनाया है
शरीअत का है मिस्तर तूँ हक़ीक़त का है मज़हर तूँ
तेरे बिन जो चलेगा राह गुमरह उन खवाया है
सफ़ा सीना किया तेरा अपस के राज़ रखने तें
इलमदानी सुख़नफ़हमी अज़ल तें तुज सिखाया है

तिरजग = तीन लोक, जनाया है = प्रकट किया है । इश्क़ = प्रेम, शरीअत = इस्लामी धर्मशास्त्र, इनायत = प्रदान, रुतबा = प्रभाव, पद । आलम = संसार, मिस्तर = रेखांकित कागज जिसे नीचे रख कर लिखने के कागज पर रेखा खींची जाती है । हक़ीक़त = वास्तविकता, मज़हर = केन्द्र, राह = मार्ग, गुमरह = गुमराह, पथभ्रष्ट । सफ़ा = निर्मल, सीना = छाती, राज़ = रहस्य, इलमदानी = विद्वत्ता, सुख़नफ़हमी = वाक् पटुता । अज़ल = प्रारम्भ ।

तिरजग < त्रिजग, सोंसार < संसार, दक्खिनी में तत्सम शब्दों के पूर्ण अनुस्वार का उच्चारण अर्द्धानुस्वार होता है। कभी-कभी अनुस्वार युक्त अकार का उच्चारण ह्रस्व ओकार के रूप में होता है। गुमरा < गुम + राह। तुज < तुझ।

तवल्लुद कर ले आया तुज जगत के अंजुमन म्याने
उसी पल ताज होर तोहफ़ा रिसालत का पठाया है
हुआ है मौज़िज़ा ऐसा तेरे ख़ुश इस्म का जग में
मुबारक नाँवँ सूँ तेरे मुया कूँ फिर जिलाया है
मुतह्हर जिस्म है आला मुनव्वर इस्म है सारा
बड़ाई जब दिखाया तूँ गगन ने सिर नवाया है
निपाया रब मुहम्मद जब खिसा पाया कुफ़र का तब
तड़ख़ जा "ताक़े किसरा" सब अगन सारी बुझाया है

पठाया = भेजा, मुया = मृत, नवाया = झुकाया, निपाया = उत्पन्न किया, खिसा = खिसका, पाया = नींव, तड़ख जा = दरक गया। तवल्लुद = जन्म, ताज = मुकुट, तोहफ़ा = भेंट, रिसालत = रसूल का पद (रसूल ईश्वर का सन्देश वाहक = रिसालत), मौजिज़ा = चमत्कार, इस्म = नाम, मुबारक = शुभ, मुतह्हर = पवित्र, आला = श्रेष्ठ, मुनव्वर = दीप्तियुक्त, रब = ईश्वर, कुफ़र = ईश्वर की एकता को अस्वीकर करना, ताक़े किसरा = बगदाद के निकट एक महल जो हज़रत मुहम्मद के जन्म लेने के अवसर पर हिल उठा था। होर = और।

पठाया = पठाना, सा० भू०, अन्य पुरु० ए० व०। नाँवँ < नाम, मुया < मुआ < मृत, निपाया < निपजाया = उपजाया, खिसा = खिसना, खिसकना, सा० भू०, अ० पु०, ए० व०। पाया < पाद, अगन < अग्नि।

जगत के सिर उपर साया गगन का रोज़े महशर लग
तेरी नालेन का साया गगन (के) सीस छाया है
अनन्द की बात थी/सारी मुहब्बत रात की प्यारी
पिरत का शर्त्त करने तइँ पियारा घर बुलाया है
चल्या तूँ रब सूँ जा मिलने ज़मीं तय हुई तेरी चलने
हुआ मेराज यक पल में अरश पर तुज लिजाया है
तेरा फ़िरदोस में घर है सदा तूँ कुफ़ पर वर है
तेरे तइँ रू फिराया जिन उसे हक़ ने जलाया है

लग = तक, तेरे तईं = तुम्हारे प्रति, रू = आत्मा, साया = छाया, आश्रय। रोजे-महशर = प्रलय का दिन, नालेन = नाल, चप्पल। फ़िरदोस = स्वर्ग, वर = प्रभावपूर्ण।

मेराज = हज़रत मुहम्मद ईश्वर का साक्षात्कार करने के लिए सातवें आकाश पर देवदूत के साथ गये थे। इस भेंट को 'मेराज' कहते हैं। इस्लाम में इस मेराज का बहुत महत्व है।

उपर < ऊपर, अनन्द < आनन्द, पिरत < प्रीति, पियारा < प्यारा, लिजाया = ले जाया।

[1]फ़रिश्त्याँ का न था फेरा तदाँ था नूर सो तेरा
तेरे अहकाम महशर लग जगत के सिर चढ़ाया है
बड़ा तुज दीन का कस है दुजे दीं सब हुए पस हैं
[2]तेरी अंगुश्त के कस तें चँदर दो खँड कराया है
जहाँ के सफ़ में दिसता तूँ चँदर तार्यां में झमके ज्यूँ
जिते चुख जो चूके थे सो वो चुख सब तूँ चुकाया है
झमकती है पिशानी जो नुबूवत की निशानी वो
दुनिया होर दीन बानी हो हुकुम जग में चलाया है

फेरा = चक्कर, तदाँ = तब, वहाँ। कस = शक्ति, सार। अहकाम = आदेश (हुक्म-अहकाम)। महशर = प्रलय-दिवस, पस = समाप्त, अंगुश्त = उँगुली, दीन = धर्म, सफ़ = पंक्ति।

पतियाँ कूँ पत दिखाया जब सत्याँ कूँ सत सिखाया तब
बुताँ तोड़्या हत्याँ जैसी नद्याँ भैत्याँ सुखाया है
जतियाँ में तूँ च स्याना है नहीं फिर तुज सा आना है
तेरे ते दीन पाना है समज मुज यूँ सुझाया है
अदल ले हात आया है इलम जग कूँ सिखाया है
गया सो रोज़ ल्याने तईं सुरिज कूँ फिर मँगाया है
रिसालत का तू सरमाया हुकुम हक़ का तूँ ही पाया
सभू ते साँज बेते कर मिरग जंगल ते ल्याया है

१. जिस समय हज़रत मुहम्मद ने ईश्वर का साक्षात्कार किया था, देवदूत भी उपस्थित नहीं थे। देवदूत स्वर्ग में एक निश्चित स्थान तक ही जा सकता है।

२. हज़रत मुहम्मद से प्रार्थना की गई कि वे कोई चमत्कार दिखायें, हज़रत मुहम्मद ने अपनी अँगुली उठाई और चाँद के दो टुकड़े कर दिये।

पतियाँ = पति (ब. व.), पत = प्रतिष्ठा, सत्याँ = सती स्त्री (ब. व)। जतियाँ = यति, सन्यासी, (ब. व.)। तूँच = तू ही, स्याना = चतुर, आना = दूसरा, दीन = धर्म, यूँ = इस तरह, इलम = ज्ञान, गया सो = जो बीत गया, ल्याने तईं = लाने के लिए, सभू = प्रातः। बुत = मूर्ति, अदल = न्याय, रोज़ = दिन, सरमाया = पूँजी।

पतियाँ < पति (ब० व०), सत्याँ = सतियाँ, बुताँ = बुत (ब० व०), हत्याँ < हातियाँ < हाथियाँ < हस्तो (ब० व०)। नद्याँ < नदियाँ, भैत्याँ < बहतियाँ < बहती (विशेषण, ब० व०), जतियाँ < यतियाँ < यति (ब० व०)। तूँ < त्वम्, यूँ < इत्थम्। इलम < इल्म, ल्याने < ले आने, रिसालत = रसूल (ईश्वरीय सन्देशवाहक) का भाववाचक, सभू < सुबह, मिरग < मृग, ल्याया < लाया, च = ही, मराठी में च का उपयोग ही के अर्थ में आता है और दक्खिनी ने इस अव्यय को इसी अर्थ में ग्रहण किया है।

दिस्या जो नूर का झलका चन्दर तुज सम पड्या हलका
सुरिज[1] ने कान भा हल्क़ा बँदियाँ में अप लिखाया है
पतियाँ सत-पत के ओड़ना थे वतियाँ के पड़े बाँटे (?)

हुए ताबे वई बाँचे जिते हरबे डुबाया है
अदू जो ज़ोर में अगला अथा पौलाद बाज़ू का
मुक़ाबिल जब हुआ है तुज भरम अपना गँवाया है
दिसे मशरिक़ तें मग़रिब लग बड़ाई रोज़ अफ़ज़ूँ हो
नुबूवत के सदर ऊपर सभों में तूँ सुहाया है

दिस्या = दिखाई दिया, झलका = चमक, तुज सम = तुम्हारे सामने, भा = डालकर, बंदियाँ = बन्दी (ब० व०), वई = वे ही, बाँचे = बचे, अथा = था, लग = तक, सभो में = सब में। नूर = प्रकाश, हल्क़ा = कान की बाली, अदू = शत्रु, बाज़ू = भुजा, मशरिक़ = पूर्व, मग़रिब = पश्चिम, अफ़ज़ूँ = अधिक, नुबूवत = नबी का पद, ईश्वर का सन्देश वाहकत्व, सदर = अध्यक्ष, अध्यक्ष के बैठने की जगह।

गुलामी के चिह्न स्वरूप अरब में कान में बड़ी बाली पहनाई जाती थी।

दिस्या = दिसता है < दिसिया है < दिस्या है, पड्या = पडया < पडिया, बन्दियाँ = बन्दी (ब० व०)। अप < आप।

किया काबा[1] फ़तह जिस दिन हुए हैराँ परी होर जिन
हुआ यूँ बुतशिकन दायम ख़लीलुल्ला का जाया है

---

१. मक्का शरीफ़ का एक स्थान, जहाँ हज करने वाले यात्री प्रदक्षिणा करते हैं।

लिख्या हूँ नात[1] यू सारा तबा मुझ रोशनी पाने
रसन कूँ काँ अछे ताक़त तुहीं हक़ का सराया है
मज़ामीं के भर्या मोती चतुरपन के ले चव सेती
क़सीद्याँ में मुरस्सा कर क़सीदा यू बनाया है
तुमारे इश्क़ का निस दिन दँधा दिल में धर्या 'शाही'
चरन तल सीस ला अपना दुआ मगने को धाया है

जाया = पैदा किया हुआ, बेटा। रसन = जीभ, सराया = प्रशंसित, चाव = उत्साह, सेती = से, धाया = दौड़ा, जिन = भूतों के समान अदृश्य प्राणी जो मानव जाति को कष्ट न देकर कई बार सहायक सिद्ध होते हैं। बुतशिकन = मूर्ति भंजक, दायम = शाश्वत, स्थायी। तबा = अन्तःकरण, स्वभाव। मज़ामीं = विषय, मुरस्सा = जटित।

हैराँ < हैरान, होर = और, लिख्या < लिखिया, रसन < रसना, काँ < कहाँ, तुहीं < तुम ही, सराया है < सराहिया है = सराहा। दँधा < धंदा, धर्या < धरिया = धरा, भर्या < भरिया = भरा, चव < चाव।

हज़रत अली[2] की प्रशंसा

क़सीदा दर मन्क़बते हज़रते अमीरुल मोमिनीन अली आलेहिस्सलाम

आ रे कलाल, मुज कूँ प्याला पिला मया का
ता मस्त होके देखूँ मुकड़ा अली[2] पिया का
पिव जीव का गुसाईं पिव सूँ पिरत लगाएँ
पीना शराब पिव मिल पाने अरत पिय का
पिव संग काज करने देखे सगुन अपन में
साँचा हुआ बचन × क × वो हिरदै के जोसियाँ का
जोबन फड़क कते हैं पिव मस्त हो मिलेंगे
आलिंग बदल रहूँ अब बँद खोल अंगिया का

कलाल = सुरा विक्रेता, मया = प्रेम, मुकडा = आकृति, गुसाईं = स्वामी, अरत = मतलब, जोसियाँ = जोशी ब० व०। जोबन = स्तन, आलिंग = आलिंगन, बँद = बंद, अंगिया = आँगी, ता = जिससे।

पियाला < प्याला, मया < माया, मुकड़ा = मुखडा < मुख + डा, गुसाईं < गोस्वामी, पिरत < प्रीति, अरत < अर्थ, पिया < प्रिय, पिव < प्रिय, काज < कार्य, सगुन < शकुन,

---

१. हजरत मुहम्मद की प्रशंसा में लिखी हुई कविता।

२. हज़रत अली हज़रत मुहम्मद के दामाद और फातिमा के पति थे।

साँचा <सच<सत्य । हिरदै <हिरदय<हृदय । जोसी <ज्योतिषी, जोबन<यौवन, कते हें<कहते है । अँगिया<अंगिया<अंग+इया ।

बदल=दक्खिनी में 'बदल' शब्द का अर्थ तदर्थ, तत्स्थानीय और परिवर्त्तन होता है इसका प्रयोग चतुर्थी विभक्ति में भी किया जाता है ।

मुज देख पीव छतियाँ सुन मस्त मद की बतियाँ
जावे सदा जिया छिज हसरत सूँ दूतिया का
तन के मदन पुरिन में पिव की फिरा दुराई
लाग्या है भोत मीठा वो डोल मद पिया का
हँस चाल ले पिया ने आते लटकते देखे
परदा नयन के म्याने राखूं न तूतिया का
पिय सात रात जागूँ प्याला पिया सूँ माँगूँ
प्याला सचा वही है पिव हात के दिया का

छतियाँ=स्तन, छिज=छीज, विगलित, छीजना=उत्तरोत्तर ह्रास होना, घटना । दूतिया=सौत, पुरिन=पुरी, नगरी (ब. व.) । दुराई=बडाई, दुहाई । डोल=चाल हँस=हंस, म्याने=में, सचा=सच्चा, तूतिया=सुरमा । छतियाँ=छाती(ब. व), बतियाँ=बात+इयाँ, छिज<छीज (छीजना) । पुरिन<पुरी (ब. व.), दुराई<दुरा (तेलुगु) बडा व्यक्ति, (प्रतिष्ठित व्यक्ति)+आई । लाग्या<लगिया<लग्या । हँस<हंस, राखूँ<रखूँ, सात<साथ, दिया का<दिये हुए का ।

दूतिया=दक्खिनी के कई कवियों, विशेष कर शाही ने अपनी कविता में सर्वत्र 'दूतिया' शब्द का प्रयोग दूती के अर्थ में न करके 'सौत' के अर्थ में किया है ।

बाज़े शराब प्याले बेकैफ़ हो रहे हैं
प्याला पिया दिया सो आराम है जिया का
पिव जीव मुज चुराया तन नेह ला भराया
क्या वस्फ़ अब करूँ मैं उस मस्त मोहिया का
मय पूर कर पियाला पिव सेज में पिलावे
लेऊँगी मन भुला कर उस सूर भोगिया का
प्याले शराब के यूँ दिसते नयन में सारे
कंचन का रस किया है उस्ताद कीमिया का

जिया=प्राण, मन, जी । मुज चुराया=मेरा चुराया, मोहिया=मुग्ध करने वाला, मोहने वाला । पूर कर=भर कर, सूर=वीर, भोगिया=भोगी, भोग करने वाला,

दिसते = दिखाई देते । बाज़े = कुछ, बेकैफ़ = बेनशा, कीमिया = रसायन, रासायनिक क्रियाओं द्वारा सोना बनाने की विद्या ।

जिया < जी < जीव । मोहिया < मोही, पूर < पूरा < पूर्ण, भोगिया < भोगी, पिया दिया सो = पिया ने दिया है वह, दिसते = मराठी की दिसणे क्रिया का वर्त्तमान काल, अन्य पु. ब. व. ।

प्याले के ले उलालाँ उछले हरन उछाल्याँ
दिखला नवल तमाशे तासीरे सीमिया का
नेह के शराब थें हुई पिव के मदन की माती
छोड़ी हूं लाज कुल की क्या काम रू रिया का
शह हात का पियाला गर कोइ नज़र सूँ देखे
होवे वो मस्त पल में दन्धा सटे हया का
शीशा शराब का यूँ दिसता है सुर्ख़ रँग में
गोया शफ़क़ के म्याने ख़ुरशीद है ज़िया का

उलालाँ = उलाल (उत्साह, जोश) ब. ब., हरन = मृग, थें = से, माती = मस्त, सटे = डाल दे, तासीरे सीमिया = परकाय प्रवेशकी विद्या, रूरिया = दुविधा अथवा आगा-पीछा, हया = लज्जा, सुर्ख़ = लाल, शफ़क़ = उषा और सन्ध्या की अरुणिमा, ख़ुरशीद = सूर्य, ज़िया = प्रकाश ।

सटना (पंजाबी) = छोड़ना, डालना, रख देना, पटकना । उलालाँ < उलाल ब. व. । उछाल्याँ < उछालियां, नेह < स्नेह, माती < माता < स्त्री लिंग, दन्धा < धंदा,

जब लब ते लब मिला कर मद पीव सात पिई 'मैं'
जोबन हुलास हो मुज भाता हुआ हिया का
होवे ख़ुमार मुज घट तव हट को सट मिलूंगी
निस दिन करूँगी सुमरन ले नावँ पेमिया का
क्या मद की कउँ बड़ाई ले मग़ज़ जब चढ़ाई
केती शकल दिखावे ज्यूँ इल्म हीमिया का
जो पीव मुज बुला कर प्याला पिरम पिलावे
मैं मस्त हो रिझाऊँ चित पीव दिल लिया का

ते = से, पिई = पी, जोबन = यौवन, घट = हृदय, स्थिर । हट = जिद, सट = छोड कर, पेमिया = प्रेमी, केती = कितनी, दिल लिया = मन लेने वाला, लब = ओठ, ख़ुमार =

=नशा, मग़ज़=मस्तिष्क, इल्म हीमिया=भूत विद्या और ग्रहों को अधीन करने की विद्या ।

सात <साथ,पिई <पीई=पी हुई, हुलास <उल्लास, हट <हठ, सुमरन <स्मरण, नाँवँ <नावँ <नाम । पेमिया <प्रेमिया <प्रेमी । कउँ <कहूँ, केती <कति, पिरम <प्रेम ।

पिव मस्त मद चकावे जो कंठ मुज लगावे
अंम्रित अधर पिलावे होवे कलप कया का
पिव प्यार के जुगत कर जब रस-परस किया मुज
ख़ुशबू लगी मग़ज़ में कस्तूर मिरगिया का
भेद्या है मद बदन में पिव सात रहे अनन्द ले
आशिक़ हो में पिया की परवाना ज्यूँ दिया का
प्याले की भाँत कहते होय मस्त मुज रसन सब
मँगता हुश्यार होने ले नाँवँ एलिया का

चकावे=चखाता है, कलप कया का=कायाकल्प, कस्तूर मिरगिया का=मृग की कस्तूरी, दिया=दीपक, भाँत=प्रकार, रसन=जीभ, एलिया=हज़रत अली का विरद । आशिक़=प्रेमी ।

पिव <प्रिय, चकाना <चखाना, मुज लगावे <मुझे लगाये; अंबृत <अमृत, कलप <कल्प, कया <काया, जुगत <युक्ति, परस <स्पर्श, मिरगिया <मृग+इया, भाँत- <भाँति, रसन < रसना, नाँवँ <नाम, हुश्यार <होशियार (होश) ।

शाहे नजफ़ वली है तिस नाँवँ सो अली है
वो राज़दाने अहमद सुलतान औलिया का
जिस ज़ात में मुहब्बत गर ना अछे अली की
हैराँ सदा फिरे वो ज्यूँ संग आसिया का
तुज शह जवान अंगे मग़लूब हें अदू सब
तूँ शेर है अज़ल थें मौसूफ़ अंबिया का
तुज तेग़ की झलक थें बिजली छपें गगन में
शमशीरज़न तुही है सरदार अस्फ़िया का

तिस=उस (उसका), ना अछे=न रहे, छपे=अदृष्ट हुए । शाहे नजफ़=हज़रत अली, नजफ़ नामक स्थान पर हज़रत अली दफ़नाये गये थे । वली=पहुँचवाला, सिद्ध । राज़दान =रहस्य रखने वाला, अहमद=हज़रत मुहम्मद, औलिया=साधु, सन्त । संग आसिया= चक्की का पत्थर । मग़लूब=पराजित, प्रभावित । अदू=शत्रु, अज़ल=युगादि, मौसूफ़=

प्रशंसित । अंबिया = सन्त (नबी), शमशीरज़न = तलवार चलाने वाला, असिफ़या = पवित्र आदमी, अली = हज़रत मुहम्मद के जामाता और कुछ समय पश्चात् उनके उत्तराधिकारी, एक खलीफ़ा, शिया लोग इन्हें बहुत महत्व देते हैं ।

जब हात तूँ उचाया कइ लक सफ़ाँ भँगाया
दाल्या है तोड़ सकला मत-गत सो जोगिया का
दन्दे जो दीन के कइ आकर बँधे कताराँ
सोंहार नित करे तूँ अफ़वाज अश्क़िया का
तुज तेग़ तेज़ आगें औसान सब विसर जा
पानी किया है मुख थें चित फूल पेड़िया का
तुज धाक थें अदू के जाते परान सारे
तड़खे हिया-जिया सब तब राय भूमिया का

मद = सुरा, पीव = प्रिय, जोबन = स्तन, हिया = हृदय, सोंहार = नाश, औसान = साहस, पेडिया = वृक्ष, राय = राजा, भूमिया = भूमि, लब = होंट, दन्दा = शत्रु, दीन = धर्म, अफ़वाज = फौज (सेना) ब० व०, अश्क़िया = बुरे लोग, तेग़ = तलवार, अदू = शत्रु ।

सात < साथ < सह । जोबन < यौवन, मुँज < मुझ, कइ < कति, सोंहार < संहार, आगें < आगे, पेड़िया < पेड़, परान < प्राण, जिया < जीव, राय < राज < राजा, भूमिया < भूमि ।

कताराँ = दक्खिनी में अकारान्त स्त्री लिंग के बहुवचन में अ को एँ आदेश होने के स्थान पर 'आँ' आदेश होता है ।

तेरी शुजात आगें रुस्तुम छिजा दिसा है
तोड्या है मान सकला जेते[1] करासिया[2] का
तुज हात में अदालत देता है हक़ अदल थे
तोड्या है तो अलम तूँ तकसीर रीमिया का
मीज़ान की सिफ़त सब तुज हात में सहज है
दो खंड अछे बराबर शमशीर[3] के किया का
तुज कोप की नज़र सूँ ख़म हो रह्या फ़लक सब
पीला हुआ तदाँ थें रंग रूप सूरिया का

१. जेते, (जितने के) स्थान पर 'जीते' भी पढ़ जा सकता है ।
२. करासिया के स्थान पर गरासिया भी पढ़ा जा सकता है ।
३. शमशीर के किया का = शमशीर द्वारा किये हुए ।

छिजा = छीजा हुआ, क्षीण । दिसा है = दिखाई दिया है, मान = घमण्ड, सकला = सम्पूर्ण, अछे = रहे, तदां थें = तब से, सूरिया = सूरज, शुजात = बहादुरी, करासिया = सेनापति, अदालत = न्याय, हक़ = ईश्वर, अदल = युगादि, अलम = ध्वजा, तकसीर = परिणाम, जादू । रीमिया = अदृष्ट दर्शन की विद्या, मीज़ान = तराजू, सिफ़त = विशेषता, शमशीर = तलवार, खम = झुका हुआ, फ़लक = आकाश ।

छिजा = छीजना, (ह्रास होना), भूतकाल, ए० व० पु० । दिसा < दिसणे (म०) (दिखाई देना), भू० का० ए० व०, तोड्या < तोडिया, सूरिया < सूर्य ।

पूरे बँधा क़वायद जेते इलम जहाँ के
तूँ रहनुमाँ सचा है उस्ताद अतकिया का
कीता है बालपन में कइ बुद सूँ लख तमाशे
सर चश्म-ए-करामत तूँ पीर अज़किया का
उस्ताद मुस्तफ़ा हो सारा इलम दिया तुझ
ल्याया बजा हुकुम सब तूँ साँइ किब्रिया का
तुज ज़ात में सख़ावत बुनियाद है अज़ल थें
तेरे दिये सूँ होवे मन सेर लोभिया का

कीता है = किया है, बुद = बुद्धि, साँइ = मालिक, लोभिया = लालची । क़वायद = क़ायदा (नियम) ब० व० । जहाँ = संसार, रहनुमाँ = मार्गदर्शक, अतकिया = परहेजगार लोग, धर्मात्मा लोग । सर चश्मए करामत = चमत्कार का उद्भवस्थल । अतक़िया = पवित्र लोग, मुस्तफ़ा = हज़रत मुहम्मद, हुक्म बजा लाया = आदेश पूर्ण कर लाये, किब्रिया = ईश्वर (कबीर) । ज़ात = व्यक्तित्व, सख़ावत = दानशीलता, अज़ल = युगादि, सेर = तृप्त

इलम < इल्म, सचा < सच्चा, कीता है = 'करना'. धातु का आसन्नभूत का पंजाबी रूप, बुद < बुध < बुद्धि । तूँ < त्वम्, साँइ < स्वामी, लोभिया < लोभी ।

ठाड़ा बदल इबादत कीता है तब सख़ावत
मक़बूल कर लिया है करतार अग़निया का
तुज हात के असर का कस है परस ते अगला
कंचन सरीर होवे तुज हात के छिया का
रौशन हुआ है वो घट जिस घट नज़र करे तूँ
सरताज है सदा तूँ कुब्बार अत्क़िया का
जिस सीस पर अली का साया अगर होवे कुच
वो शेर हो सिने में परवा सटे भया का

ठाड़ा = खड़ा, करतार = ईश्वर, कस = शक्ति, सत्व। परस = पारस (पत्थर), अगला = अधिक, छिया का = छीने के कारण, घट = हृदय, चातिक = चातक, भया = डर। इबादत = प्रार्थना, सखावत = दानशीलता, उदारता। मक़बूल = स्वीकृत (क़बूल), अग़नियां = धनी लोग, सरताज = शिरोमणि, श्रेष्ठतम। कुब्बार = महान् (कबीर)। अतक़िया = पवित्र लोग, धर्मात्मा।

कीता है = करना क्रिया का पंजाबी में आसन्न भूत, करतार < (कर्तृ, संस्कृत, ब० व०) कर्त्तारः, हात < हस्त, परस < स्पर्श, सरीर < शरीर, तुज < तुझ, कुच < कुछ, भया < भय, सिना < सीना (छाती), परवा < परवाह।

ठाडा के स्थान पर कोई दूसरा पाठ भी हो सकता है। तुभ हाथ = 'तेरा' के स्थान पर षष्ठी विभक्ति में भी तुझ का प्रयोग। छिया का = छिए (स्पर्श किये) हुए का।

चातिक हुआ है मुज दिल कहता है पीव पिव कर
सेवक हुआ हूं दायम तूँ साईँ मुज जिया का
तुज बात में करामत दिसता है मुज अबद लग
हैं तुज अता अज़ल थे जे काम बेरिया का
तुज सूर नर के आगं सूरिज दिसे ठसे का
तूँ सूर कुल दिपक है माता-पिता भया का
मशहूर है जगत में मुश्किलकुशा अली है
मुश्किल अगर दिसे कुच ले नाँवँ सामिया का

साईं = स्वामी, जिया = जीव, करामत = करामात, चमत्कार। लग = तक, सूर = बहादुर, ठसे का = ठप्पे का, भया = भ्राता, सामिया = स्वामी, दायम = स्थायी, शाश्वत। अबद = अनन्त, अता = प्रदान, अज़ल = अनादि, बेरिया = निराडंबर, मुश्किल कुशा = कठिनाइयों को दूर करने वाले।

चातिक < चातक, साईँ < स्वामी, जिया < जीव, करामत < करामात, जे < यत् पु० कर्त्ता, ब० व० 'ये', ठसा < ठस्सा, भया < भाया < भ्राता, नाँवँ < नाम, सामिया < सामी < स्वामी।

मुज दिल, मुज जिया, तुज बात, तुज सूरनर = षष्ठी में उत्तम पुरुष तथा मध्यम पुरुष वाची सर्वनाम का "मुझ" और 'तुझ' रूप। कहता है पीव पिव कर = दक्खिनी का बहु प्रचलित प्रयोग, 'कर' का प्रयोग पूर्वकालिक रूप में। है तुज अता = तुज का चतुर्थी में प्रयोग।

तूँ शाहे पुरहुनर है जेते इलम में वर है
निस दिन अछे अयाँ तुज असरार धरतिया का

'शाही' हुआ है आशिक़ सुन नाँवें मुर्त्तज़ा का
साया उसी च का है तिस सीस पर दया का

जेते = जितने, धरतिया = पृथ्वी, उसी च का = उसका ही, तिस = उस, पुर हुनर = कार्य कुशल, अयाँ = प्रकट, असरार = भेद, (सिर-ब० व०)। मुर्त्तज़ा = हजरत अली।

जेते <जितने, निस <निशा, धरतिया <धरती, तिस <तत्, (पुं षष्ठी, एक व०)। सीस <शीश।

उसी च का = उस + ही + च (मराठी 'च' 'ही' अर्थ का द्योतक अव्यय)।

क़सीदा[1] दर मन्क़बते दोआज़दह इमाम अलेहिमुस्सलाम

मुज दिल केरे मैदान पर जब इश्क़ के फ़ौजाँ चड़े
तब होश के रावत जिते मुक मोड़ हो बेख़ुद पड़े
जो इश्क़ के सुलतान का फ़रमान घट में आइया
ईताल हो पुनल्याँ यू दो ख़िदमत बदल निस दिन खड़े
नादिर हुआ सुलतान यू अब बुद किया हैरान हो
जब इश्क़ के परधान मिल बुद सात सफ़ दर सफ़ लड़े
सीना मगर ज़ुलमात है दिल आप तिस में पाच है
दिसते निशान्याँ इश्क़ के जैसे सिकन्दर[2] थे बड़े

रावत = सवार, वीर। जिते = जितने, घट = हृदय, ईताल = तत्काल, पुतल्याँ = पुतले, बुद = बुद्धि, परधान = मुखिया, पाच = पंचरत्न, इश्क़ = प्रेम, बेखुद = मूर्च्छित, सुलतान = शासक, फ़रमान = आदेश, ख़िदमत = सेवा, नादिर = अलभ्य, सफ़ दरसफ़ = पंक्ति-बद्ध, सीना = छाती, ज़ुलमात = अन्धकार।

आइया <आया, पुतल्याँ <पुतला ब० व०, बुद <बुद्धि, परधान <प्रधान, सात <साथ, निशान्याँ <निशानियाँ।

केरा = षष्ठी कारक के लिए प्रयुक्त होने वाला शब्द जो बाद में 'के' विभक्ति का रूप धारण करता है।

गुल का बदन जिसते हुआ गुल होर भौंर तिस कर जिया
हर के बदन में हो अपें जैसे कुंदन पर नग जड़े

---

१. ईश्वर द्वारा रक्षित बारह इमामों की प्रशंसा में लिखी गई कविता।
२. सिकन्दर महान।

गर बुलहवस खोवे जनम पा ना सके तिसका मरम
मुश्किल अदा है इश्क़ की जाने वो ही जिस सर घड़े
जिस इश्क़ का सरताज है हर राज़ तिस पर वाज़ है
बेशक भँवर हो नित फिरे असमान गरचे गड़गड़े
जो तबा में शीरीं अछे तिस पर ख़तर होय इश्क़ का
माशूक़ की नित याद में ज्यूँ मीन जल बिन तड़पड़े

जिस ते=जिससे, होर=और, भौंर=भौंरा, तिस कर=उसका, अपै=आप, कुँदन=सोना, भरम=रहस्य, घड़े=घटित होती है, तिस पर=उस पर, असमान=आकाश, गड़गड़े=गड़गड़ाहट करे, गुल=फूल, बदन=शरीर, हर=प्रत्येक, गर=यदि, बुलहवस=झूठी लालसा वाला, सर=सिर, सरताज=मुकुट, वाज़=प्रकट, स्पष्ट। गरचे=यद्यपि, तबा=स्वभाव, शीरीं=मधुर, ख़तर=ख़तरा, आशंका। माशूक़=प्रेमिका।

भौंर<भ्रमर, अपें=आप ही, कुँदन<कुंदन, मरम<मर्म, घडे<घटना क्रिया का भूतकालिक रूप, भँवर<भ्रमर, नित<नित्य।

कर=सम्बन्ध कारक में प्रयुक्त होने वाला शब्द जो 'का' विभक्ति के रूप में परिवर्तित हुआ।

जो इश्क़ की सूरत लिख्या सीना सफ़ीना साफ़ कर
उसकी क़लमकारी अंगे नक़्क़ाश जग के गिर पड़े
मन इश्क़ में पावक हुआ दिल की अँगेठी पूर कर
तो बिरह के अपराद ते शोले सिने में धड़ धड़े
माशूक़ की दूरी बदल वस हैं वो विसते इश्क़ लें
नेह रूप दिखला कर अवल मुरझन की गत आख़िर घड़े
आशिक़ धरे साबित क़दम माशूक़ की जब राह में
हिरदे में तब लागे मिठा माशूक़ गरचे लड़ पड़े

पावक=अग्नि, अँगेठी=अँगीठी, तो बिरह=तेरे विरह, धड़धड़े=चटचटाता है, वस=वश, विसते=उससे, मुरझना=मुरझाना, घडे=घटित होता है, सूरत=आकृति, सीना,=छाती, सफ़ीना=साफ़, क़लमकारी=चित्रकारी, नक़्क़ाश=चित्रकार (नक़्श), शोला=अंगारा, साबित क़दम=दृढ़ पग, आशिक़=प्रेमी, माशूक़=प्रेमिका, गरचे=यद्यपि।

लिख्या<लिखिया, अंगे<अग्रे, पूर<पूर्ण, तो<तव, अपराद<अपराध, वस<वश, गत<गति, हिरदे<हृदय, मिठा<मीठा।

बिरहा डसन के दर्द थें बियाकुल पड़ी नित ज़र्द यूँ
बेकस हो तुट जा बेल ते ज्यूँ पात पीला हो झड़े

अचला उपर तल पाँव के एक थिर नहीं रखते कधीं
अस्पन्द हो आशिक़ देह सब्र बिरही अगन धक तड़तड़े
गर इश्क़ के पंजाँ मने आ बूअली उलझे कधीं
ना खोल सक इस गिरह कूँ बेताब हो अक्सर अड़े
गर कोइ नज़र कर इश्क़ की दर्पन में देखेगा नयन
साया दिसे आँजू का यूँ ग़ल्तान मोती जूँ लड़े

डसन के=डसने के, थें=से, बेकस=निश्शक्त, विवश। पात=पत्ता, अचला=पृथ्वी, कधीं=कभी, तडतडे=तडतड की ध्वनि के साथ भुनना, आँजू=आँसू। ज़र्द=पीला, अस्पन्द=नज़र उतारने के लिए प्रयुक्त होने वाला राई के समान काला दाना, पंजाँ=पंजा (ब. व.), गिरह=गाँठ, बेताब=बेचैन, साया=छाया, ग़ल्तान=लोटता हुआ।

डसन < दंशन, बियाकुल < व्याकुल, नित < नित्य, पात < पत्ता, कधीं < कदापि, अगन ∠ अग्नि।

बूअली=अबूअली सीना एक प्रसिद्ध मुस्लिम दार्शनिक।

है हुस्न के बाज़ार में ख़ुम्मार ख़ुमख़ाना होड़ के
मद इश्क़ पी मनमस्त हो आशिक़ हमेशा गड़गड़े
सोंसार के दरयाव में ग़व्वास हो यक ध्यान सूँ
आशिक़ सदा मारे उड़ी तो हात कुच मोती चड़े
हर यक लगावे इश्क़ कईं मुज इश्क़ है उस शाह का
जिसके खड़ग का नाँवँ सुन कुफ़्फ़ार जग के हड़बड़े
जिस शेर के दहशत अँगे शरज़े रहे वीरान में
सुरपाल सब तिस नाँवँ सुन पाताल म्याने जा दड़े

मद=सुरा, गड़गड़े=गरजते हैं, दरियाव=दरिया, समुद्र। उड़ी मारना=पानी में तैरने के लिए ऊपर से कूदना। हात चडे=मिले, कई=कहीं, खड़ग=तलवार, हडबडे=भागे, भयभीत हुए। सुरपाल=दिक्पाल, दडना=घुसना, छिपना। हुस्न=सौन्दर्य, ख़ुम्मार=शराबी। ख़ुमख़ाना=मदिरालय, ग़व्वास=गोताखोर, कुफ़्फ़ार=काफ़िर (ब. व), दहशत=आतंक, शरजा=सिंह, वीरान=जंगल।

सोंसार ∠ संसार, कुच ∠ कुछ, चड़े < चढ़े, कईं ∠ कहीं, खडग < खड्ग।

दुलदुल तुरँग की फेर अँगे रहे बाव के पग धूज कर
आकास पर हाला दिसे जब नाल का साया पड़े
मूरत तुरँग की देख कर अपछर हुए गुमनाम सब
चंचल की चपलाई निरख चपला गगन में जा दड़े

बैसे तुरँग पर सार हो जब सफ़ ते अंगे हो चल्या
यक हात होर यक वार सूँ कइ लख अदू गिर गिर पड़े
जब ते कोड़ा पिर्थी उपर फेर्या तुरँग तूँ सार हो
हमवार हो रहे सुम तले डोंगर अथे जे खड़बड़े

तुरंग = घोड़ा, फेर = चक्कर, बाव = हवा, धूज कर = काँप कर, अपछर = अप्सरा, सार हो = सवार हो, डोंगर = पर्वत, खड़बड़े ऊबड़ खाबड़, दुलदुल = हजरत अली के घोड़े का नाम, हाला = वृत्त, चाँद या सूरज के चारों ओर पड़ने वाला वृत्त। नाल = घोड़े के पाँव में जड़े जानेवाला लोहे का टुकड़ा, सफ़ = पंक्ति, अदू = शत्रु, हमवार = समतल।

बाव < वायु, अपछर < अप्सरा, सार < सवार, लख < लाख, पिर्थी < पृथ्वी, फेर्या < फेरिया, चल्या < चलिया, कइ < कई।

केता तुरँग चौपट तुलँग तब थीक सट्या सारे कुरँग
शर्मिदा हो काडी उचा मुक में पकड़ दक होय खड़े
जब अस्प के सुम तल की गरद आकर पडी दंदे उपर
जा मुख सेती पानी निकल ज्यूँ काठ के पुतले खड़े
तुज हात के परताब ते ना ताब ल्या मुशरिक जिते
आराम सट होर ख़ाब सट सपने में नित उठ हड़बड़े
तुज क़हर के आतिश कने अस्पन्द होय हासिद जिते
शमशीर के पानी मने, दुश्मन के सिर हैं बुड़बड़े

केता = कैसा, सटया = डाला, तुलंग = इच्छा, थीका = नाच, काड़ी = तृण, तिनका। उचा = उठा कर, दंदा = शत्रु, सेती = से, जिते = जितने, हड़बड़ाना = घबराना, कने = निकट, बुडबुडे = बुलबुले। अस्प = घोड़ा, सुम = घोड़े के पाँव का निचला हिस्सा, गरद = धूल, ताब लाना = धैर्य रखना, मुशरिक = बहुदेव पूजक। ख़ाब = स्वप्न, नींद। क़हर = क्रोध, आतिश = आग, हासिद = ईर्ष्यालू (हसद = हासिद), शमशीर = तलवार।

मुक ∠ मुख, दँग ∠ दंग, काठ ∠ काष्ठ, परताब ∠ प्रताप।

हर दिल में दिसता नूर तूँ फ़तहो ज़फ़र का पूर तूँ
रज तज के सट घर-बार सब चकपक गँवा दुश्मन अड़े
ख़ंजर के तेरे सामने बबरो पलंग नाखुन छिपा
रँग ज़र्द हो तन ताप भर सब उम्र दर्दे सर चड़े
जब रन में खींचे खड़ग तूँ फिर होय दहशत मर्ग कूँ
उस वार की झनकार ते भनाग के फन झड पड़े

तुज हात ज़ोरावर बदल पिरथी गड़ा यक नाल हो
सुन हैदरी नारे कूँ तुज मंगल के मस्तक धड़धड़े

पूर = बाढ़, रज = राज्य, चकपक = बकवास, गर्वपूर्ण बातें। चड़े = चढ़े. भूनाग = शेषनाग, मंगल = एक ग्रह, फ़तहो ज़फ़र = विजय, खंजर = तलवार, बबरो पलंग = सिंह और चीता, नाखुन = नख, दर्दे सर = परेशानी, दहशत = भय, मर्ग = मृत्यु, ज़ोरावर = शक्तिशाली, हैदरी नारा = अली का उद्घोष।

रज ∠ राज ∠ राज्य।

जूझन्त करने तुज बदल जेते सिलह बाँदे वते
वल तूट **जा पग बाँह के** ज्यूँ कौन्तेय होकर लड़े
मूसा असा हो खड्ग तुज झलक्या है जब मैदान में
अफ़सूँगराँ अफ़सूँ बिसर मुक बंद हो घर घर दड़े
तेज़ी तेरी शमशीर की रिपु गर देखे सोने में तो
मौहूम के नुक़्ते ते कम कइ लाक तुकड़े हो पड़े
तरवार तेरे हात की तासीर ते हुई सुर्ख़ रू
निस दिन रगत में यूँ दिसे ज्यूँ लाल मख़मल ला मड़े
ज्यूँ सामने आ सफ़ बँदे मग़रूर हो ना मान तुज
यक 'हूँ' बचन सुन कान में कइ सफ़ पै सफ़ सफ़ हो पड़े
हो फ़ौज म्याने गर्म जो देखे नज़र भर घूर जिस
तन जल वसन्दर में सकल सिर कोलसा होकर पड़े

जूझन्त = युद्ध, जूझना। वते = उतने, कौन्तेय = अर्जुन, बिसर = भूलकर, दडे = छिपे, सोने में = सोते समय, नींद में। रगत = खून, ला मड़े = लाकर मढ़ा हो, घूर कर देखना = क्रोध भरे नेत्रों से देखना, कोलसा = कोयला, बसन्दर = आग, सिलह = हथियार, मूसा असा = हज़रत मूसा का चमत्कारपूर्ण दण्ड, अफ़सूँगर = जादूगर, अफ़सूँ = जादू, तासीर = गुण, सुर्ख़रू = लाल मुँह वाला, यशस्वी मौहूम = अपवित्र, नुक़्ता = बिन्दु, गुर। सफ़ = पंक्ति, मग़रूर = घमण्डी, (ग़रूर — मग़रूर)।

जूझन्त ∠ जूझना, बाँदे ∠ बाँधे, तूट ∠ त्रुट, बिसर ∠ विस्मर, मुक ∠ मुख, दडे ∠ दड़ना क्रिया का भूतकालिक रूप, लाक ∠ लाख ∠ लक्ष, रकत ∠ रगत ∠ रक्त। मँढे ∠ मँढे ∠ मँडे ∠ मंडन।

जब लाफ़ कर बाँधे अथे दावे जिते घड़ दीन सूँ
तुज सैफ़ की पर काट ते ज्यूँ मुर्ग़े बिस्मिल फड़फड़े

केते हज़ाराँ पर एकंग धाया तुरी जब तेज़ कर
हो चल बिचल फ़ौजाँ सकल आपस में आपे हड़बड़े
सारे जहाँ में नइँ हुआ तुज सार का शमशीरज़न
जिस पर किया यक वार तूँ दो धड़ बराबर हो पड़े
दुलदुल का जब बाजा है तल पिरथी उपर सुन कान में
बैरी महाबल जे अथे सुद छोड़ दे दँग हो खड़े
तुज खडग की होर इल्म की तारीफ़ में क्यों कर सकूँ
हक़ की इनायत थे अधिक यू दो सिफ़त तुज हत चड़े

परकाट – चोट, तलवार की काट। एकंग = एकाकी, हड़बड़ाना – घबडाना, सार का = समान, सुद = याद, चेतना। सैफ़ – तलवार, बिस्मिल घायल, दुलदुल = हजरत अली के घोड़े का नाम, इनायत = कृपा, अनुग्रहीत। हक़ – ईश्वर।

अथे < थे।

फिर फिर हुआ लाज़िम मुजे तारीफ़ कहना शाह की
तो मतल ए—सानी[1] किया अत शौक़ सूँ हर यक पड़े
ना बोलने कुच जानते थे तबा के जो खड़बड़े
तिर लोक में श्याने दिसे जब दर्स में शह के चड़े
जो कोइ अथा शह दर्स का वो दर्स था सब दर्म का
तिस दर्स की तासीर ते यक पल मनें क़ुरआँ पड़े
गर तूँ तग़ाफ़ुल कुच करे आसान सब मुश्किल दिसे
फ़िलहाल तूँ आसाँ करे मुश्किल जिदर कुच आ पड़े

अत = बहुत, हर यक पडे = हर कोई पढ़े. लाजिम - आवश्यक, तारीफ़ = प्रशंसा, तबा = स्वभाव, श्याना - चतुर, दर्स - अध्ययन, क़ुरआँ – क़ुरान शरीफ़, तग़ाफ़ुल = अनजान बनना, आसाँ = आसान, सरल।

अत ∠ अति, पड़े ∠ पढ़े, कुच ∠ कुछ, तिरलोक ∠ त्रिलोक, जिदर ∠ जिधर।

तुज लुत्फ़ का जब ते हुमा साया धर्या मुज सीस पर
रूँ रूँ सकल आराम हो ग़म के उड़े सब काकड़े
तुज नाँवँ की तासीर ते मक़बूल हो मेरे वचन
तावीज़ कर राखे जतन औसाफ़ के सारे बड़े

---

१. मतलए सानी = कविता के आरंभ में समान तुक के दो चरण 'मतला' कहलाता है। जब कविता बड़ी हो जाती है तो फिर नये मतले से, किंतु पिछले तुक के साथ कविता प्रारंभ की जाती है।

अँदकार की फ़ौजाँ जिते मुज दिल ते सब भागे हैं तो
रोशन हुआ है घट सकल तुज नाँवँ आ जब चित चड़े
बाँद्या मुकर्रर काफ़िए कइ बार में सनअत बदल
ता रीज कर तहसीं करे यू मनक़बत जो कोई पड़े

रूँ रूँ = रोम रोम, काकड़ा = ग्रन्थि (रुई का बिनोला = काकड़ा) लुत्फ़ = आनन्द, हुमा = मुस्लिम आख्यानों का एक पक्षी, जिस पर इस पक्षी की छाया पड़ती है, वह राजा बनता है। साया = छाया, मक़बूल = स्वीकृत (क़बूल—मक़बूल), प्रिय। तावीज = ताबीज, गले या भुजदण्ड पर बाँधने के लिए लिखा गया मंत्र या यंत्र जिसे धातु के छोटे से पात्र में रखते हैं, औसाफ़ = अच्छाइयाँ, मुकर्रर = दूसरी बार, सनअत = चतुराई, अलंकार (साहित्य)। तहसीन = प्रशंसा, मनक़बत = हज़रत मुहम्मद से सम्बन्धित लोगों की प्रशंसा।

रूँ < रोम, नाँवँ < नाम, जतन < यत्न, अँदकार < अन्धकार, चड़े < चढ़े, बाँद्या < बाँदिया, रीज < रीझ, पड़े < पढ़े ।

दीपक लगा मुज तबा ने धूंड्या है जो कुब्बार सब
बारा इमामाँ[1] बिन कहीं देख्या नहीं दूजे बड़े
अव्वल अली अल मुर्त्तज़ा जिस नाँवँ है शेरे ख़ुदा
साजे सिफ़त उस लाफ़ता[2] जब तेग़ ले दुलदुल चड़े
दूजा हसन उल मुजतबा सरदार है सक़लेन का
जिस सूर की ख़िदमत बदल हत जोड़ के हूराँ खड़े
तीजा हुसेने मुक़्तदा मक़बूल है करतार का
मरदूद हैं दो जग मने उस ज़ात सूँ जो कोई लड़े

साजे = अच्छी लगती है, शोभित होती है। सूर = वीर, करतार = ईश्वर, हत जोड़ के = हाथ जोड़ कर, तीजा = तीसरा। तबा = स्वभाव, कुब्बार = बड़े लोग। शेरे ख़ुदा = ईश्वर का बहादुर, सक़लेन = विश्व, मक़बूल = प्रिय, मरदूद = तुच्छ, निष्कासित। हूर = अप्सरा।

धूंड्या < धूंडिया < ढूंडिया < ढूंडा। सूर < शूर, हत < हस्त, करतार < कर्तृ शब्द का कर्त्ताकारक का बहु वचन (कर्त्तारः)।

कुम्मल इमामे चारुमी सो पीर जैनुल आबदीं
होवे हिदायत खल्क़ कूँ मिम्बर उपर जब वो चड़े

१. बारह इमाम-शिया सम्प्रदाय के १२ सम्माननीय महापुरुष ।
२. लाफ़ता = अरबी की एक कहावत जिसका अर्थ है हजरत अली के अतिरिक्त किसी की बडाई नहीं, अली की तलवार के समान किसी की तलवार नहीं ।

बाक़िर इमामे पंजुमी सो बहरोबर है दीन का
जिसकूँ करे तालीम जब किस चीज़ में वो ना अड़े
जाफ़र इमामे शश्शुमी उस्ताद है हर इल्म में
जेते मुअ़ल्लिम दीन के उस थे हुए सारे बड़े
काज़िम इमामे हफ़्तुमी तिस ज़ात के तासीर थे
होवे ज़मीं सब ज़र–गुहर जिस धरत पर साया पड़े

धरत = पृथ्वी । चारुमी = चतुर्थ, हिदायत = शिक्षा, उपदेश । मिम्बर = मस्जिद का वह स्थान जहाँ खड़े होकर उपदेश दिया जाता है । पंजुमी = पंचम, बहरो बर = जल और स्थल, दीन = धर्म, तालीम = शिक्षा, शश्शुमी = छठा, उस्ताद = गुरु, आचार्य । मुअल्लिम = अध्यापक (इल्म–मुअल्लिम) । हफ़्तुमी सप्तम, ज़र = स्वर्ण, गुहर मोती, साया = छाया ।

उपर ∠ ऊपर, धरत ∠ धरती ।

हश्तुम अली मूसा रज़ा जिसकी करामत सूँ सदा
यक पल मने पावे शिफ़ा मुश्किल मरज़ में जे अड़े
नह्‌हुम इमामे मुत्तक़ी तिस नाँवँ है जग में तक़ी
जिस कोप की यक दिष्ट सूँ जेते शक़ी सा डरे
दह्‌हुम नक़ी है नुक़्तादाँ करतार के हर रम्ज़ का
तिसकी मुहब्बत जिन धरे उसकूँ अधिक इज़्ज़त चड़े
है याज़दह्‌हुम अस्करी तिसकूँ सुहावे सरवरी
जे कुफ़्र में सरदार थे तिस धाक ते सब गिर पड़े

करामत = करामात, चमत्कार । पल = क्षण, मने = में, दिष्ट = दृष्टि, जेते = जितने, करतार = ईश्वर, तिसकी = उसकी, सुहावे = शोभित होता है, धाक = आतंक, हश्तुम = आठवाँ, शिफ़ा = स्वास्थ्य, कल्याण । मरज = रोग, बीमारी । नह्‌हुम = नवम, शक़ी = अत्याचारी, दह्‌हुम = दशम, नुक़्तादाँ = रहस्य का ज्ञाता, रम्ज = रहस्य, भेद । याज़दह्‌हुम = ग्यारहवाँ, सरवरी = श्रेष्ठता ।

दिष्ट ∠ दृष्ट ∠ दृष्टि ।

महदी अछे साहिबज़माँ सो है इमामे बारवाँ
सारे जहाँ के लोग सब तिस नाँवँ का ख़ुतबा[1] पड़े

१. ख़ुतबा पढ़ना = शुक्रवार अथवा ईद की नमाज़ के पूर्व दिये जाने वाले उपदेश में समकालीन मुस्लिम बादशाह के नाम का उल्लेख करके आयत पढ़ना ।

चारो पहर दिन-रात मिल हित-चित लगा यक ध्यान सूँ
'शाही' विरद कर इश्क़ सूँ यू मनक़बत दायम पड़े

विरद = यश, साहिब ज़माँ = अपने युग के अधिष्ठाता।

क़सीद¹ ए हमले जमल दर तारीफ़े हौज़ व अलीदाद महल व बाग़

दिसे मुज नयन में इस हौज़ पै चँदना यू निभल
धर्या है चाँद नें ज्यूँ टीक अपस मुक के अगल
सफ़ाई देख के इस हौज़ की चँदर दायम
चले आकास पे अत शौक़ सूँ अमरित ते उबल
परियाँ अचरिज हो खयाँ देख के इस हौज़ के तइँ
अछे अमरित ते भर्या हौज़ यू समदुर ते दुगल
फ़वारे कल सूँ उछल बूँद सुहाते हैं जिते
दिसे सार्या के नज़र में ढले मोती ते निभल

दिसे = दिखाई देता है, निझल = पवित्र, टीक टीका। अपस = अपने, अगल = आगे, अमरित ते उबल अमृत से ऊब कर, तंग आकर। खयाँ = बोली, कल = मशीन, सार्या = सब, दायम सदैव।

निभल < निश्छल, धर्या < धरिया, मुक ∠ मुख, अत < अति, अचरिज < अचरज < आश्चर्य। खयाँ < खइया, कहियाँ। समदुर < समुद्र, सार्या < सारियाँ ∠ सारे।

मुज = दक्खिनी में 'मैं' सर्वनाम को द्वितीया, तृतीया, आदि विभक्तियों की तरह षष्ठी में भी, 'मुझ' (मुज) आदेश होता है। पै अधिकरण कारक की विभक्ति 'पर' का स्थानीय।

मछी रँग रँग अछे कइ ज़ात के इस हौज़ मने
दिसे नुक़रे के सरापा फिरे जब जल में खवल
मछी के जल्द सलकनें कूँ दिठा भर के नज़र
तदाँ ते जोत गगन पर किया है जल ते निकल
मिठाई जग में हुई उसकी पझर ते पैदा
लगे यू नीर लबद म्याने शकर ते अफ़ज़ल
फ़वारा हौज़ में नादिर सुहावे रूप में यूँ
गोया ज्यूँ नाल के ऊपर खिल्या है जल में कँवल

---

¹ अलीदाद महल और बाग तथा हौज़ की प्रशंसा में लिखा गया लकारान्त क़सीदा।

मछी = मछली, रंग रंग = रंगबिरंगी, कई जात के = कई प्रकार के, खवल = खलबली, सलकने = सरकने, दिठा = दिखा, तदाँ ते = तबसे, जोत = प्रकाश, पझर = निस्सरण, झरना। नुक़रे = चाँदी का, सरापा = नखशिख, लबद = होंट, अफ़ज़ल = श्रेष्ठ (फ़ज़ल), नादिर = अनुपम, गोया = मानो।

सलकना ∠ सरकना, दिठा ∠ दृष्टि, खिल्या ∠ खिलिया, कँवल ∠ कमल।

जिने इस नीर कूँ देख्या सो किया ज़ौक़ ते यूँ
लगे आईने ते भेतर यू नज़र में निरमल
जिने इस नीर कूँ चाख्या सो उठ्या बोल के यूँ
गोया ज्यूँ शहदो लबन ते भर्या है हौज़ का नल
गया सेरंग का सब रंग देखत कल का फतर
पड्या तल सिर हो तदाँ ते यू ज़मीं पर तिरमल
कवाया आठवाँ समदुर भर्या जब नीर सूँ हौज़
सज़ावार उसके अँगे है यू अलीदाद[1] महल

जिने = जिसने, नीर = पानी, भेतर = श्रेष्ठ, फतर = पत्थर, तल सिर हो = नीचे सिर किये हुए, कवाया = प्रसिद्ध हुआ, उसके अँगे = उसकी तुलना में, ज़ौक़ = आनन्द, शहदो लबन = शहद और दूध, सेरंग = एक रंगीन पत्थर, सज़ावार = अलंकार्य, अलंकृत होने योग्य।

देख्या ∠ देखिया, भेतर ∠ बेहतर, निरमल ∠ निर्मल, चाख्या ∠ चाखिया, उठ्या ∠ उठिया, भर्या ∠ भरिया, फतर ∠ पत्थर ∠ प्रस्तर। पड्या ∠ पडिया ∠ पड़ा। कवाया ∠ कहवाया, अँगे ∠ आगे।

जिने = 'जो' सर्वनाम के कर्त्ता कारक का रूप।

जता गज गज सूँ रचा जाके हुआ फ़रश यू जो
दिसे इस फ़रश सूँ मिल धरत हुए आठ अचल
पाया पूरा अछे इस क़स्र, गया पाताल तलक
'ताक़े किसरा' होवे मेराज इसी ज़ेह के अगल
बुलन्दी सक़्फ़ की लेखत न हो ताक़त भी किसे
फ़लातूँ[2] फ़िक्र ते बोल्या के यू अंबर है नवल

---

१. बीजापुर में बना हुआ आदिलशाही शासकों का राजप्रासाद।

२. फ़लातूँ = अफ़लातून, यूनान का प्रसिद्ध दार्शनिक-प्लेटो।

सदा सूरिज ने मँगे नूर इसी क़स्र अँगे
जब ते दीवार पे सनअत सूँ दिठा है ज़र हल

गज गज = हाथी हाथी, जाके हुआ = जाकर हुआ, धरत = पृथ्वी, अचल = पर्वत, पाया = नींव, तलक = तक, लेखत = देखना, अम्बर = आकाश, नवल = नया, दिठा = दिखाई दिया, क़स्र = महल, मेराज = उच्च पद, जेह = देहली, बुलन्दी = ऊँचाई, सक़फ़ = छत, फ़िक्र = चिन्तन, ज़रहल < बिन्दु, स्वर्णद्रव ।

जता ∠ जितना, धरत ∠ धरित्री ।

ताके किसरा = इस्लाम पूर्व ईरान का एक नगर, इस नगर में एक महल, उसकी एक बड़ी ताक थी, हज़रत मुहम्मब के जन्म के अवसर पर यह ताक गिर गई ।

हर यक यक ताक़ अछे ताक़ अपस रूप मने
'मानी'[1] मन्धर के लिख्या मेज़ सूँ तिस पर जदवल
भरे थे जाम के गुल कर सारे मंज़र के भजर
न अछे सूर भी इस सम जामे[2] जम ते यू निभल
सफ़ा सन्दल के भिला जोग दे मंज़र के उपर
अगर-चन्दन के धरे पात भरोके के अगल
दरीचा खोल भिड़ाते दिसावे पात मूँ यूँ
गोया आलिंग बदल आवे छबीली नार चँचल

अपस रूप मने = अपने रूप में, मन्धर = महल, झजर = सुराही, झिला जोग दे = योग्य रूप से चमक कर, पात = पत्ता, सूर = सूर्य, इस सम = इसके सामने, ताक़ = कमान, मेज़ = चित्र फलक, जदवल = चित्र का हाशिया, जाम = सुरा, मंज़र = दृश्य, सफ़ा = पंक्ति, स्वच्छ । सन्दल = चन्दन, गुल = फूल ।

मन्धर ∠ मन्दिर, पात ∠ पत्ता ।

मुबारक आव थे बाँधे हैं सफ़ा सोफ़ा यू
अछे तिस छाँवँ में दायम सारे अरबाबे दवल
सारे ख़ुशक़द अछें थाँबाँ सरो शमशाद के सम
अछे चौबीना यू दालान पे तूबा का सकल
तनब्बी तन कूँ सँवारी सारी परमल मने यूँ
गिलावा काँद पे सारा गोया लीपे हैं सँदल

मानी = एक पौराणिक चमत्कार पूर्ण देवदूत चित्रकार ।

जमशीद का प्याला = पौराणिक कथा के अनुसार जमशीद के पास एक प्याला था, जिस में उसे संसार की घटनाएँ दिखाई देती थीं ।

कभी इस धरत पे नइँ हुई है इमारत भी कहीं
कधीं कोकस[1] नहीं देख्या है सपन में यू महल

आव थे = आव से, अन्दाज से, ढंग से। तिस छाँव में = उस छाया में, थाँबा = खंभा, परमल = सुगन्धित, कांद = दीवार, गिलाव = मिट्टी का पुताव। मुबारक = शुभ, सफ़ा = पंक्ति, सोफ़ा = ऊँचा आसन, अरबाबे दवल = धनी लोग, खुशक़द = अच्छी क़द के, सरो शमशाद = सरो और शमशाद के पेड़। तुबा = स्वर्ग का एक वृक्ष, तनब्बी = खिड़की, सँदल = चंदन।

इस्म होर जिस्म ते रोशन यू इमारत है सदा
आवे नित सूर यू हर सुबह कूँ तहवील बदल
सूर पाया है शरफ़ आके इमारत के ऊपर
के यू पा नाँवँ अली का हुआ है बुर्जे हमल
रख्या सूरिज ने डुबा कर देखो यू रात के तइँ
दिखाने नूर अपस का किया है दीस दुगल
हुआ परकास जो दिनकर दिखाया मुक का झलक
लाजों ते दीस के अंगे होती है रात वझल

सूर = सूरज, दीस = दिन, लाजों ते = शर्म से, अंगे = आगे, दुगल = दुगनी, दिनकर = सूर्य, वझल = ओझल, अदृश्य। इस्म = नाम, जिस्म = शरीर, तहवील = अधिकार में होना, शरफ़ = बड़प्पन, नूर = प्रकाश।

रख्या ∠ रखिया, दकल ∠ दखल ∠ दख़ल। परकास ∠ प्रकाश, वझल ∠ ओझल।

होवे दिनकर के सबब ते बड़ाई दीस की सब
लगे कहने कूँ तदाँ ते छबीली रात चँचल
देखो किस भाँत सूँ छाती कूँ सँवार्या है गगन
जूवी के गुल कूँ किया कम, लगाया भरके सँदल
दिसे इस दिन की जलालत अँगे यूँ रात गमी
गोया ज्यूँ आग के ऊपर जाता है मोम पिगल
ज़मीं के ख़ूब बिछाने पे तजम्मुल सूँ अपें
लगा कर रात कूँ <u>**गडको**</u> बैठा है दीस **चकल**

---

1. कोकस = मेमार

दिनकर = सूर्य, दीस = दिन, तदाँ ते = तब से, जुवी = जूही, अपें = स्वयं, कमी = कम, हेय। सबब = कारण, सँदल = चंदन, जलालत = शान, तजम्मुल = सुन्दर, शानदार चकल = चौड़ा।

दीस ∠ दिवस, भाँत ∠ भाँति, सँवार्या ∠ सँवरिया ∠ सँवारा, जुवी ∠ जूही, सँदल ∠ चंदन, पिगल ∠ पिघल।

दिसावे दीस के आगें सियाही रात की यूँ
थोड़ा ज्यूँ साफ़ नयन में पैने है नार कजल
बढ़ावा दीस का देखत महा बत दिल में पकड़
देखो यू रात हसद खा जाती है जल्द निकल
दिन के मैदान पे जब सूर ते देख्या है झलक
रात की ज़ात में पिंजा है इसी दुक ते खलल
तोल्या है सूर ने दिन कूँ लगा आकास के थाल
तिस में इस रात के बट कूँ धर्या पासंग के बदल

सियाही = कालिख, अन्धकार। पैने है = पहनती है, कजल = काजल, बढ़ावा = वृद्धि। महा बत = बड़ी बात, सूर = सूर्य, थाल = थाली, बट = बाट, तिस में = उसमें, हसद = ईर्ष्या, खलल = बाधा।

पैने है ∠ पहने है, कजल ∠ कज्जल, बत ∠ बात, दुक ∠ दुख ∠ दुःख। तोल्या ∠ तोलिया, धर्या ∠ धरिया।

देखे जब दीस के नोशो कूँ बना आता है
लिये है रात अरूसी लाजे है दिन के अगल
उसी के दुक ते चली रात नें होलर से ढलक
देखो यू दीस लटकता आता समदुर सा उबल
सूर कंचन के ज़रीने ते रख्या दिन कूँ सँवर
बड़ाई देक के तिसकी हुई है रात निबल
लगी छिजने कूँ रयन दर्द थे इस दीस अँगे
चँदा सो हात का नख हो लग्या छाती पे कुबल

लाजे है = लज्जित होती है, दिन के अगल = दिन के सामने, होलर = प्रिय, संवर = सँवार कर, निबल = दुर्बल, छिजना = क्षीण होना, कुबल = निर्बल, क्षीण। नोशो = वर, बना = वर, अरूसी = वधू, ज़रीना = सुनहरापन।

दुक ∠ दुख ∠ दुःख। समदुर ∠ समुद्र, देक ∠ देख, निबल ∠ नि = बल, छिजना ∠ छीजना, चँदा ∠ चंदा ∠ चन्द्र, लग्या ∠ लगिया ∠ लगा।

मुक़द्दम दीस व निस का बयाँ कम-ज़ियाज़त के कर
बोल्या हूँ यहाँ ते मैं तारीफ़ कुछेक बाग़ बदल
गुलाबी गुल नें दिखाया अछे मुख खोल अपें
देखो इस फूल ते है बाग़ मनें सब परमल
चँबेली, जाई व जूई दिसे उडगन के नमन
चँपे के झाड़ पे फुलाँ यू लगे ज्यूँ मशअल
दिसावे ताज सुरुख़ कन शाख़े मरजान ख़जिल
लिया है हेम का रंग सब रँगीला यू मख़मल

निस = रात, बाग़ मने = बाग में, परमल = सुगन्धि, जाइ व जूई = जाति पुष्प और जूही, उडगन = नक्षत्रगण, नमन = समान, चँपा = चंपा, झाड़ पे = पेड़ पर, हेम = स्वर्ण, मुक़द्दम = आगे, बयाँ = वर्णन, कम-ज़ियाज़त = कम ज्यादा, मशअल = मशाल, शाख़े मरजान = मूँगे की डाली, ख़जिल = लज्जित।

परमल ∠ परिमल, चँबेली ∠ चमेली, जाई ∠ जाइ ∠ जाति, जूई ∠ जूही, उडगन ∠ उड्डगण, चँपे के ∠ चंपे के।

भरे हैं बाग़ के तख़्ते गुलाँ हर जिन्स के कइ
ख़ुसूसन रेंवँती तिस में यू दिसावे चंचल
हुए हैं काम के बानाँ सो मदनबान के फाँक
तिसमें ख़ुशबास ते केतुक यू हुआ है अचपल
खड़ा है दोल झो दायम मँजा कर बाग़ के ताईं
ख़ुशनज़र पात के हाताँ रँगा कर रंग में सकल
शबकुशा फूल ते चौंरी दिसे कइ भाँत का रंग
चितारे ना यू चितर सक के थकें तिस के अगल

रेंवँती = रेवती, काम = कामदेव, मदनबान = एक फूल, मदनमस्त। फाँक = पंखड़ी, केतुक = केतकी, अचपल = चंचल, दोल = एक पुष्प (?), मंजा = झूला (?) पलंग चितारे = चित्रित किया, चितर = चित्र, हर जिन्स = विविध प्रकार, ख़ुसूसन = विशेष रूप से, शबकुशा = एक पुष्प, रजनी गन्धा।

कइ <कई, रेवती <रेंवँती, केतुक <केतकी, अचपल <चपल, चितर <चित्र।

सारी तशबीह गुलाँ की पूरी हुई जो यू तमाम
फलाँ सूँ बाग़ के तारीफ़ करूँ अब मुजमल
देखो कारीगरी किस भाँत की कीता है बहार
अंब के ज़र्फ़ में सनअत सूँ भर्या है ज़र हल

खुश नज़र अंब की खूबी दिसे यक तन में दो रंग
कहरुबा सारका नीमा नीमा है ज्यूं के पवल
मिठाई देक के अंजीर के फीका हो सदा
लाजों ते मोम के परदे में छिपा जाके असल

कीता है = किया है, अंब = आम, सारका = समान, तशबीह = उपमा, मुजमल = संक्षेप में, बहार = वसन्त ऋतु। जर्फ़ = पात्र, बर्तन। जरहल = तरल सोना, कहरुबा = एक तरह का पीला पत्थर, नीमा नीमा = आधा आधा, पवल = (?), असल = शहद।

अछे अमरित फलाँ इस बाग में अमरित के सिफ़त
साया गर तिस का पडे तो होवे शीरीं हज़ल
सारे अंगूर की बेलाँ ये पके यूँ खोशे
मिठाई सेस कूँ अँपड़े पड़े गर भुइँ पे पिगल
दिसे शरबत के यू कूज़े जिते नारियल के कपर
मीठे कइ नीर के चश्मे ते भर्या है मुंजल
नारंगी रंग का हवस धर लगी आ बाग़ मने
रँगाई तन कूँ सरासर देखो रंग रस में सकल

अमरित फल = एक फल, तिसका परे = उसका पड़े, सेस = शेष नाग, अँपड़े = प्राप्त होती है, भुइँ = पृथ्वी, नारियल के कपर = नारियल का खप्पर, मुंजल = ताड़ी के पेड़ पर लगने वाला गोलाकार फल, सिफ़त = विशेषता, गुण। साया = छाया, शीरीं = मिठास, हनजल = इन्द्रायण का फल, खोशे = गुच्छे, कूजा = प्याला, हवस = इच्छा।

अमरित < अमृत, सेस < शेष, भुइँ < भूमि, पिगल < पिघल, कपर < खप्पर।

ज़रीना पात का सारा दिसावे पाच का सब
दिसे खमरक यू शजर पर सो सोने का हैकल
देखो इस बन की घटा ते न दिसे धूप कहीं
दिसावें पाच के तख़्ते चारो चमनाँ यू निछल
हरेक यक कालवा पानी का भर्या है सो गुलाब
खाक इस बाग़ के फूलाँ ते हुई है परमल
फलाँ-फूलाँ सूँ इमारत की हुई जब यू सिफ़त
भरे मानाँ सूँ यकयक यूँ दिसावे अफ़ज़ल

पात = पत्ता, पाँच = पंच रत्न, खमरक = एक फल, चमन = वाटिका, निछल = स्वच्छ, निर्मल। परमल = सुगन्धित, मानाँ = अर्थ, कालवा = नाला, नहर। जरीना = गहना, शजर = पेड़, हैकल = हँसली, अफ़ज़ल = श्रेष्ठ।

पात <पत्र, पाँच <पंच (पंच रत्न) । निछन <निश्छन, भर्या <भरिया <भरा, परमल <परिमल, मानाँ <माने ।

पाच = सोना, हीरा, नीलम, लाल, मोती ।

दिखाने तबअ़ की क़ुव्वत 'शाही' इस बहर मने
बँध्या हर बैत में कई लफ़्ज़ यू सनअ़त के नवल
जान होर दिल थे उचा हात दुआ मँगता है
ता अछे अमन में सुख-चैन ते यू ख़ल्क़ सकल
जो लगों नूर सूँ दिनकर अछे होर चाँद व गगन
जो लगों ज़ुहरा है ज़ाहिर अछे होर पीर ज़ुहल
मुश्तरी साद है जो लगों व अतारिद है दबीर
जो लगों पाँचवें आकास पे दिसता है मँगल
तो लगों रात-दिन व पहर घड़ी जश्न मने
बजो आनंद सूँ इस घर में सदा ताल-मँदल

नवल = नवीन, उचा = उठा कर, ता अछे = जिससे रहे, जो लगों = जब तक, क़ुव्वत = शक्ति, बहर = छन्द, बैत = शेर, उपदेश । ज़ुहरा = शुक्र, ज़ाहिर = प्रकट, पीर = पूज्य व्यक्ति, बूढा । ज़ुहल = शनि, मुश्तरी = बृहस्पति, साद = शुभ, अतारिद = बुध, दबीर = लिपिक, ताल-मँदल = ताल और मँदले, जश्न = उत्सव ।

बँध्या <बँधिया, उचा <उचा कर, उचाना उठाना ।

क़सीद ए[1]-चार दर चार

देखो अछंआ लग्या है यू बन नवे गुलाँ सूँ भर्या है सारा
सरो सनोबर समन की बेलाँ फुले हैं फूलाँ अछे हकारा
तहाँ का माली पिरम का पानी नयन मडयाँ में सदा फिरावे
जिते अरूसाँ चमन के ऊपर खिले-फुले होर करें झकारा
उसी च बन में सुधन अमोली अनेक छन्दों अपस बनाई
परी की तैसी, हुसन की आली, सदा झुले वाँ बंधा दोल्हारा
हरे अँचल में सुँदर वो मुक यूँ चँदर गगन बिच झमक दिसे ज्यूँ
हँसी में तिसके अधर दिसे यूँ हुआ शफ़क़ मिल सबा का पारा

---

१. एक विशेष छन्द में लिखा हुआ क़सीदा, सोलह पंक्तियों में लिखा जाने वाला छन्द।

अछंबा = आश्चर्य, नवा = नवीन, हकार = आकृति, मँड्याँ = क्यारियाँ, झकारा = झकोले लेती हैं, उसी च = उसी, सुधन = युवती, अमोली = बहुमूल्य, छन्द = छल, अपस = अपने को, परी की तैसी = अप्सरा जैसी, दोल्हारा = झूला, अधर = होट, सरो = एक पेड़, सनोबर = एक पेड़, समन = चमेली, अरूसाँ = दुलहनें, शफ़क़ = सन्ध्या, सबा = ठंडी हवा, पारा = टुकड़ा ।

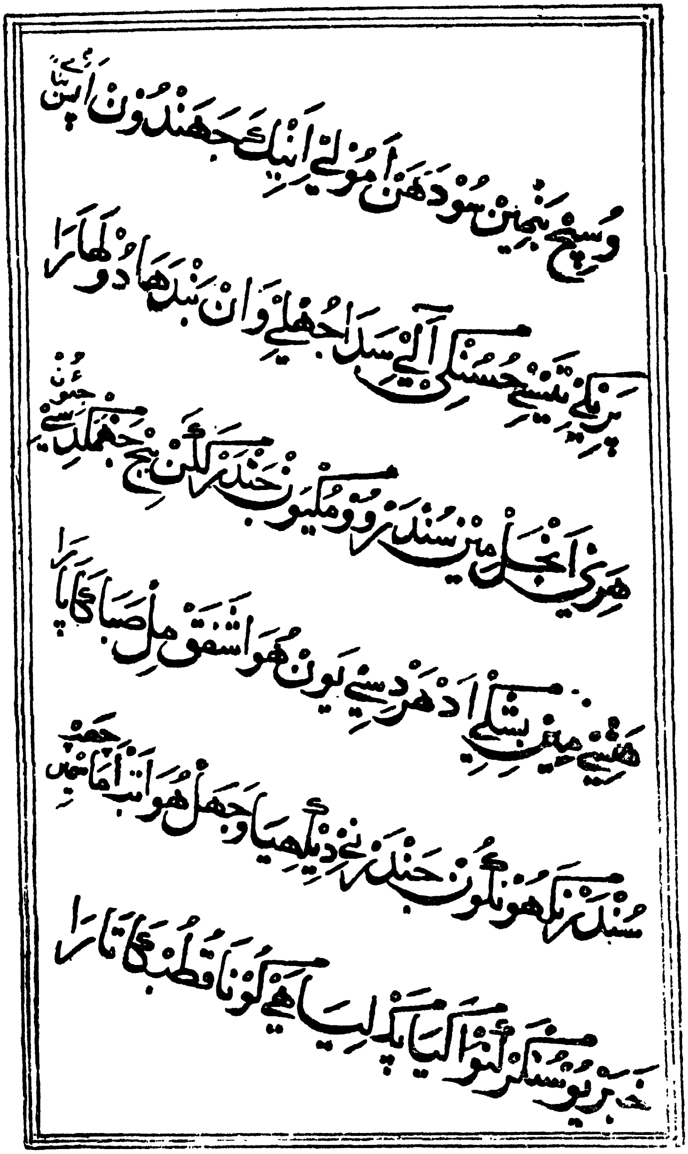
अछंबा <अचंभा, लग्या <लगिया, भर्या <भरिया, हकारा <आकारा <आकार । पिरम <प्रेम, मँड्याँ <मँडियाँ <मँडी (ब० व०) । दोल्हारा <दोला ।

सुँदर नखों कूँ चँदर ने देख्या वझल हुआ तब अमास में छप
ख़बर यू सुनकर गँवा गया पग लिया है कोना क़ुतुब का तारा
नज़ीक जाकर कह्या सुधन सूँ करम हमन पर करो पियारी
सुनी सुख़न जब वो उठी तड़क कर कही करूँगी इता पुकारा
कह्या यता क्या ग़ुसा है मुज पर मुजे तुजे अब लग्या है सोंदल
पिरम रसी कर कमन्द डालूँ गुमान सिर थे करूँ उतारा
अँचल पकड़ कर मदन नखों सूँ सुँदर के जोबन मतर लिख्या जब
गई सितर कर फुली वो मन में कही तूं मन का मेरा पियारा

वझल हुआ = ओझल हुआ, अमास = अमावस्या, छप = छिपकर, गँवा गया पग = पाँव चले गये, पंगु बन गया । क़ुतुब का तारा = ध्रुव नक्षत्र, नज़ीक = निकट, हमन पर = हम पर, तड़क कर = गरज कर, इता = इतना, यता = इतना, सोंदल = चंदन, सितरना = इतराना, सिर थे = सिर से, मदन = कामदेव, जोबन = स्तन, मतर = मंत्र, करम = दया, कमन्द = रस्सी, गुमान = घमण्ड ।

चँदर <चंद्र, वझल <ओझल, अमास <अमावस्या, छप <छिप, नज़ीक <नज़दीक, कह्या <कहिया, सोंदल <संदल <चंदन, पिरम <प्रेम, मतर <मंत्र, लिख्या <लिखिया ।

लगी मुहब्बत मुजे-उसे यूँ जड़त कुँदन सूँ जड़े गया ज्यूँ
बहाँ सूँ बाहाँ गले मिला कर करे अपस ते ग़ुसे कूँ न्यारा
मदन की माती, अरत कूँ पाती फ़हम क़रारे हुआ उसे जब
सिने के दुरजक मने जतन सूँ रखे रतन कर पिरम हमारा
सखी सूँ बोली पिया बुलाना मँदिर में मेरे मँदिर सँवारो
कदम व केसर मुशक मिला कर अँगन पे सारा सटो फुयारा
सजन सूँ दिल यूँ लग्या है मेरा चकोर चंदर रहे जनम जूँ
पिया सूँ मिलते हुई ख़ुशी मुज दुतिन का दिल सब हुआ अवारा



उसी च बन में सु धन अमोली, अनेक छन्दों अपस बनाई ।
परी की तैसी, हुसन की आली, सदा झूने वाँ बंधा दोल्हारा ।
हरे अंचल में सुंदर वो मुक यूँ, चंदर गगन बिच झमक दिसे ज्यूँ ।
हंसी में तिसके अधर दिसे यूँ, हुआ शफ़क मिल सबा का पारण ।

सुंदर नरखों कूं चंदर ने देख्या, बझल हुआ तब अमास में छप ।
ख़बर यूं सुनकर गंवा गया पग, लिया है कोना कुतुब का तारा ।

पृष्ठ ५५ और ५६.

जडत = जडाव, नग । कुँदन = सोना, बहाँ = बाँह, अपसते = अपने से, मदन = कामदेव, माती = मस्त, अरत = अर्थ, तात्पर्य; सिना = छाती, कदम = कदम्ब, अँगन = आँगन, सटो = डालो, फ़ुयारा = फुहारा, जूँ = ज्यूँ, जिस तरह । दूतिन = सौतनें, अवारा = विनष्ट, फ़हम = विवेक, क़रार = शान्ति, ढाढस । दुरजक = पेटी, मुशक = कस्तूरी ।

बहाँ < बाँह (ब० व०), सिना < सीना, कदम < कदम्ब ।

बँध्या था कोकस बुलंद इमारत छजे थे अनवर नयन सिफ़त के
सहन के चारो तरफ़ चमन में अगर-चँदन का अथा कतारा
झजर के जामाँ अगर दिखे जम मनम गँवा कर जनम रहे ख़म
गगन सिंपी कर सुरज का जल भर चितर लिख्या घर चतुर चितारा
बँधाई मेहेंदी रँगाई चुनरी निहाल फ़ानूस सँवारे चौंधर
रँगी पताँ सूँ सुनी कताँ दे मझे के ऊपर लगा फरारा
ज़री बिछाना बिछा सदर कर हिलाल चंदर अथा अँगन बिच
मँदिर में अपने मुजे लिजा कर गुले व मोती करे निसारा

छजा = छज्जा, अथा = था, कतारा = पंक्ति, झजर = सुराही, अगर = एक सुगन्धित द्रव्य, जम = जमशीद, चिरकालीन । मनम = घमण्ड, चौंधर = चारों ओर, चितारा = चित्रकार, पताँ = पताकाएँ, सुनी कताँ = स्वर्ण के टुकड़े, मझा = पलंग, अथा = था, गुले व मोती = फूल और मोती, निसारा = न्यौछावर, कोकस = मेमार, बुलंद = ऊँचा, अनवर = प्रकाशमान, सहन = आँगन, जामाँ = वेश, ख़म = झुका हुआ, निहाल = झाड, ज़री = सुनहरा, हिलाल = द्वितीया का चन्द्रमा ।

छजा < छज्जा, चितारा < चित्रकार, निसारा < निसार ।

मोहन पिया जब रहे अनंद में अनंद बढ़ाने कियाँ बधावे
सुधन की मनकियाँ अथियाँ वो ननकियाँ लगियाँ पलाने कनर कदारा
यथी अरायश हुई महल में इँदर¹ ने देखन नयन किया तन
रँभा ते जेती हुसन में आली बँधी अपस तो बिरद अथारा
जिते बहर में बहर मिठा यू वले है मुश्किल अगर बँधे कोई
बँध्या है 'शाही' शेअर यू ताज़ा मदद हुए जब इमाम बारा

बधावा = मंगल गीत, मनकियाँ = सहेलियाँ, अथियाँ = थीं, ननकियाँ = छोटी, पलाने = गाने, चिल्लाने । कनरकदारा = दो राग, यथी = इतनी, इँदर = इन्द्र, रँभा = रंभा, एक अप्सरा । जेती = जितनी, जैसी, आली = सहेली । बिरद = विरद, यश । अथारा = अपार, बँधे कोई = यदि कोई छन्द बनाये, अराइश = सजावट, बहर = छन्द, वले = लेकिन, इमाम बारा = शिया सम्प्रदाय के १२ इमाम, जो अत्यन्त आदरणीय माने जाते हैं ।

पिया < पिय < प्रिय, अनंद < आनंद, अथियाँ < थीं, इँदर < इन्द्र, रँभा < रंभा, मिठा < मीठा ।

(१) अहल्या के शाप के कारण इन्द्र सहस्र लिंग हो गये थे, किन्तु उनके ये लिंग 'नेत्र' बन गये । तभी से इन्द्र सहस्राक्ष कहलाते हैं ।

ख़ैबरनामा

अवल हक़ की तौहीद सूँ कर सुख़न
पिछें ख़ुश अदा सूँ बयाँ कर बचन
तुजे है सज़ावार हम्दो सना
तेरे हुक्म सूँ है नन्हा होर बड़ा
करीमा करम सूँ यू आलम किया
नब्याँ होर वल्याँ कूँ शरफ़ तूँ दिया
ख़ुसूसन नब्याँ में रिसालत पनाह
जो कोइ नाँवँ लेवे ता जावे गुनाह
अली ए वली पेशवा वो इमाम
सख़ावत शुजाअत है जिस पर तमाम

नन्हा = छोटा, नब्याँ = नबी का (ब० व०), वल्याँ = वली (ब० व०), हक़ = ईश्वर, अवल = प्रथम, सुख़न = वचन, ख़ुश अदा = नाज़ नख़रा करने वाला, बयाँ = वर्णन, सज़ावार = शोभास्पद, हम्दोसना = ईश्वर स्तुति, करीम = दयालू, करम = दया, आलम = संसार, नबी = ईश्वर का संदेशवाहक, वली सिद्ध, पहुँचा हुआ सन्त, ख़ुसूसन = विशेष रूप से, रिसालत पनाह = हज़रत मुहम्मद, गुनाह = अपराध, पेशवा = नेता, इमाम = धार्मिक मुखिया, मुखिया । सख़ावत उदारता, तमाम = पूर्ण ।

अवल < अव्वल, नन्हा < नहना ।

ख़ैबरनामा:— अरब में ख़ैबर नामक स्थान जिसे हज़रत अली ने जीता था ।

तेरी रास्त अँगल्याँ कहो है किसे
क़ज़ा के ख़ज़ाने की कील्याँ दिसे
इता एक क़िस्सा सुनों जंग का
के वो जंग था दीन के नंग का
अथा एक ख़ैबर का क़िलऽऽ विकल
बडे भडकलाँ पर अगल थे अतल

पथर थे बुरज के बजर से घड़े
अथे सख़्त वो सब नन्हे होर बड़े
बुरुज होर तटाँ कन कुबल थी सुरंग
अँपड़ता न था वहाँ पवन का तुरँग

अँगल्या = अँगुलियाँ, कील्याँ = तालियाँ, बिकल = वेढब, भड़कल = दुर्गद्वार, घड़े = बनाये गये, कन = निकट, कुबल = कठिन, अपड़ना = प्राप्त होना, मिलना। तुरँग = घोड़ा, रास्त = सीधा, क़ज़ा = मौत, नंग = लज्जा।

अँगल्याँ < अगलियाँ < अँगुलियाँ < अंगुल। कील्याँ < कीलियाँ < कील।

अथा कोट ऐसा कुबल माग का
अँपडता न था आसरा लाग का
उमक़ उस खँदँक का न कोइ कह सके
फ़िकर के तराज़ू पे अटके थके
अथा कुफ़र का उस ज़मीं पर घटा
न सकता अथा कोई उनको दटा
रिसालत पनाह् होर सहाबा मिले
अज़ा की मुहिम पर गरम हो चले
न थे फ़ौज में शाहे दुलदुल सवार
अथा शह के नैनों कूँ औकल अज़ार

अथा = था, कुवल = कठिन, माग = रास्ता, लाग = मकान पर चढ़ने के लिए पत्थर आदि का मार्ग, दटाना = डाटना, औकल = निरंतर, उमक़ = गहराई, फ़िकर = चञ्चल, अज़ा = लड़ाई, मुहिम = अभियान, शाहे दुलदुल सवार = हज़रत अली, शाह = बादशाह (अली)। अज़ार = पीड़ा।

औकल < अविकल।

सहाबी किते आन कर पड, वले
न ले सक कठिन कोट फिर कर चले
सहाबी जमा कर रसूले ख़ुदा
कहे यूँ सुबाह् में करूँगा जुदा
के जिस मर्द पर मेहर करतार का
वो आलम है पूरा मेरे प्यार का

उसे देऊँगा यू ज़फ़र का अलम
के जिस हात में है खडग होर क़लम
पयंबर अली कूँ बुला कर अँगे
खड़े रह ख़ुदा कन दुआ यूँ मँगे

सहाबी=हज़रत मुहम्मद से साथी, प्रभू, प्रभुत्व। आन कर=आकर, पड=पड़े, फिर कर चले=लौट चले, मेहरे करतार=ईश्वर की दया, खडग=तलवार, ख़ुदा कन=ईश्वर के पास, रसूले ख़ुदा=ईश्वर के सन्देश वाहक, सुबाह=प्रात: काल, आलम=संसार, ज़फ़र=विजय, अलम=ध्वजा, पयंबर=पैगंबर, ईश्वर का सन्देशवाहक।

करतार < कर्त्तार।

न होय तुज गरम होर सरद का अज़ाब
उसी वक़्त हक़ कन हुआ मुस्तजाब
लुआबे मुबारक अपस हात सूँ
पिन्हाये नयन में अली शाह कूँ
हुई नैन रोशनतर अज़ आफ़ताब
के ज्यूँ अब्र जाकर दिसे माहताब
अलम हात में दे पिन्हा कर ज़िरह
ज़िरह के बँदाँ हात सूँ दे गिरह
सिलह ज़ाहरी बातिनी सूँ सँवार
इनायत किये शाह कूँ ज़ुल्फ़ेक़ार

हक़ कन=ईश्वर के निकट, पिन्हाये=पहनाया, प्रवेश कराया, अज़ाब=दु:ख, मुस्तजाब=स्वीकृत होना, लुआबे मुबारक=शुभ थूक, अज़=से, आफ़ताब=सूर्य, अब्र=बादल, माहताब=चाँद, अलम=ध्वजा, ज़िरह=कवच, गिरह=गाँठ, सिलह=शस्त्र, ज़ाहिरी=दिखाने के, बातिनी=गुप्त, ज़ुल्फ़ेक़ार=हज़रत अली की तलवार।

पिन्हाये > पिन्हा।

रवाना हुए जंग के नामदार
वो शाहे विलायत अधिक कामगार
चले शह वहीं कुफ़्र कूँ तोड़ने
उचा सट फतर के बुताँ फोड़ने
कँगूरे सिपर कर यहूदी जिते
खड़े भाँज (?) पर हो मनम सूँ तिते

उन्होंमें यहूदी अथा एक कलाँ
कह्या शह सूँ कर नाँवँ मुज पर अयाँ
शहंशा कहे नाँवँ है मुज अली
अज़ल थें किये हैं मुजे महबली

कामगार = कार्यशील, उचा = उठाकर, सट = फेंक कर, जिते = जितने, फाँज = (?), तिते = उतने, महबली = महाशक्तिशाली, जंग = युद्ध, नामदार = प्रसिद्ध, विलायत = वली (सन्त) का पद, कुफ़्र = इस्लाम पर विश्वास न रखने वाले की धारणा, सिपर = ढाल, मनम = अहंकार, कलाँ = बड़ा, अयाँ = प्रकट, अज़ल = सृष्टि के आरम्भ से ।

फतर < प्रस्तर, कह्या < कहिया, महबली < महाबली ।

यहूदी अथा इल्म सूँ मौतबर
दिया उन अपस लोग कूँ यूँ ख़बर
के यू मर्द क़िल-ए कूँ लेवेगा आज
ख़डग सूँ यहूद्याँ की खोवेगा लाज !
कह्या तो यहूद्याँ सूँ यूँ कर चिता
के बाहर निकल कर करो तुम इता
क़िला थें निकल हारिस आया अगल
लहवा खींच सीदा हुआ जूँ मँगल
सहाबी उपर आ गया ज़ोरे जंग
हुई तो सहाबी अपस म्याने दंग

अपस लोग = अपने लोग, आत्मीयजन । क़िल ए कूँ = दुर्ग को, चिता = सावधान करके, इता = इतना, अगल = आगे, लहवा = तलवार, मंगल = मंगल (ग्रह) । अपस म्याने = अपने में । इल्म = ज्ञान, मौतबर = श्रेष्ठ, हारिस = एक यहूदी, ज़ोरे जंग = युद्ध का बोझ ।

यहूद्याँ < यहूदी (ब० व०), लहवा < लोहा, सीदा < सीधा ।

वहीं शाहे मर्दां वो उचा कर फ़रंग
गरम हो पठाये अपस बेदिरंग
किये उस यहूदी पे यक बार दाट
गया वो यहूदी जहन्नुम की बाट

हुआ शक़ यहूदी का इस भाँत सीस
के ज्यूं चीर रखता क़लम ख़ुशनवीस
जो मरहब ` देख्या बिरादर के तईं
कह्या वो गया तो लड़ूँगा च मईं
ज़िरह बाँद दुहरी बँध्या दो फ़रंग
रख्या दिल में जब शह सूँ करने यकंग

उचाकर = उठाकर, गरम हो = क्रोध में आकर, पठाये = भेजे, दाट = डाट कर, जमकर, बाट = रास्ता, लड़ूँगा च = लड़ूँगा ही, शाहे मर्दां = नरपुंगव, फ़रंग = तलवार, बेदरिंग = निष्प्रभ, जहन्नम = नरक, शक़ हुआ = फट गया, ख़ुशनवीस = सुलेखक, मरहब = एक यहूदी, बिरादर = भाई, यकंग = अकेला ।

देख्या < देखिया ।

लिया हात भाला जो था तीन मन
शिताबी सूँ आकर खड़ा बीच रन
जो देख्या नज़र भर शहंशा का मूँ
वो बोल्या सुख़न यू अपस बूज सूँ
के सपने में देख्या हूँ मैं रात शेर
किया फाड़ पंजे सूँ अपस कूँ ज़ेर
वही शेर दिसता है मुज आज यो
ग़ुसे सूँ करेगा मगर धड़ कूँ दो
शहंशा ने मरहब कूँ बेगी बलक
दो शक़ कर सटे सीस थें पा तलक

शिताबी सूँ = शीघ्रता से, मूँ = मुँह, अपस बूज सूँ = अपनी बुद्धि से, अपस कूँ ज़ेर = अपने को पराजित, दिसता है = दिखाई देता है, दो शक़ कर सटे = दो टुकड़े करके डाले, सीस थें पा तलक = सिर से पाँव तक, सुख़न = वचन, मरहब = एक यहूदी का नाम । शक़ करना = टुकड़े करना ।

देख्या < देखिया ।

गया जीव मरहब का हारिस कने
दो धड़ हो बराबर अ कर कूए मने
तेरा खडग दिल में सदा सूर है
तो दंदे तेरे हात सूँ चूर है

यहूदियाँ का लश्कर मंग्या न्हाटने
शहंशा उनन कूँ लगे काटने
पड़े कइ यहूदी किते सार के
हुए कोलसे वो नरक नार के
मुक़ाबिल न हो सक वग़ल सूँ मिला
यहूदी गया न्हाट यक हत चला

अकर = आकर, कूए मने = कुए में, खड्ग = तलवार, सूर = सूर्य, दंदा = शत्रु, लश्कर मँग्या = सेना ने इच्छा की, न्हाट = भागने, उननकूँ = उनको, किते सार के = कैसे कैसे, न्हाट गया = भाग गया, नार = अग्नि।

सूर < सूर्य, मँग्या < मँगिया, हत < हस्त, दंदा < द्वन्द।

अथा शाह के हात में जो सिपर
लग्या आके धमका सिपर के उपर
सिपर गिर पड़ी जो ज़मीं के उपर
गया न्हाट लेकर यहूदी दिगर
जिसे है सिपर हक़ केरे राज़ सूँ
उसे क्या है परवा सिपरसाज़ सूँ
ग़ुसे सूँ शहंशा खंदक़ कूँ अलक
ले जाये अपसकूँ क़िले के तलक
लिये हात में पाट भड़कल का तोड़
किये पुल खंदक़ पर वही पाट जोड़

अथा = था, दिगर = दूसरा, केरे = के, अलकना = फाँदना, पाट = दरवाजा, भड़कल = दुर्गद्वार, खँदक = खाई। सिपर = ढाल, राज = रहस्य, सिपरसाज = ढाल बनानेवाला।

लग्या < लगिया, दिगर < दीगर।

उसी पुल पे आलम चड़े वेशुमार
निशानाँ धरे फ़तह के ठार ठार
तेरे हाथ सूँ जो दिवालाँ हले
पड़े तो सफ़य्या तख़्त के तले
जिसे कस अज़ल थें दिया है ख़ुदा
तो मश्किल कूँ आसाँ करे वो सदा

गया तो यहूद्याँ के सिर थें गुमान
ज़ुबाँ कर कुशादा कहे अल-अमान
अमाँ जीव का दे वो शेरे ख़ुदा
किया सब यहूद्याँ कूँ घर सूँ जुदा

ठार ठार = जगह जगह, दिवालाँ = दीवारें, तले = नीचे, कस = शक्ति, थें = से, यहूद्याँ के = यहूदियों के, सफ्य्या = साफ़ हो जाना, आलम = संसार, बेशुमार = अगणित, निशान = ध्वजा, फ़तह = विजय, अज़ल = सृष्टि का प्रारंभ, आसाँ = सरल, गुमान = घमंड, ज़ुबाँ = जीभ, कुशादा = फैला हुआ, विस्तृत। अल अमान = शरण।

चड़े < चढ़े।

तुटा कुफ़्र सारा शहंशा सूँ यूँ
हुआ रोज़ रोशन गये रैन जूँ
लिया शह ने क़िल-ए कूँ तिल में रगड़
के जूँ बक कूँ लेता चुंगल में लकड़
अथे सात क़िल-ए उन्होंमें क़मूस
जिसे शाह मर्दां लिये आ ख़ुसूस
यहूदी जिते थे हुए सिर निगूँ
ग़नीमत लगी हात हद सूँ फ़ुज़ूँ
फ़तह कर क़िले कूँ शहंशाह सूर
फिरे लेके लश्कर पयंबर हुज़ूर

तुटा = टूटा, जूँ = जिस तरह, तिल में = क्षण भर में, बक = बगुला (?) लकड़ = लकड़बग्घा (?), रोज़ = दिन, रोशन = प्रकाशमान, क़मूस = एक स्थान, ख़ुसूस = विशेष, सरनिगूँ = सिर झुकाने वाले, ग़नीमत = लूट का माल, फ़ुज़ूँ = अधिक, फ़तह = विजय, पयंबर = पैगंबर।

तुटा < त्रुट, बग < बक।

पयंबर ख़बर सुन के ख़ुशहाल दिल
हुए तो अँगे आ अली शह सूँ मिल
बड़ी मरहमत कर कहे यूँ रसूल
हुआ है तेरा काम हक़ कन क़बूल
ख़बर इस फ़तह की हुई जो मुबीं
दो आलम ने तुज पर किया आफ़रीं

जगत में नहीं कोई तुज सार का
तूँ शाहे गज़नफ़र बड़ी भार का
जते पीर पीराँ में तूँ धूर है
तेरा होर नबी का च यक नूर है

अँगे आ = आगे आकर, हक़ कन = ईश्वर के पास, सार का = समान, बड़ी भार का = बहुत बहार का, धूर = श्रेष्ठ, यकनूर = एक ही प्रकाश, पयंबर = पैगंबर, खुशहाल दिल = प्रसन्न मन, अलीशाह = हजरत अली, मरहमत = कृपा, रसूल = ईश्वर का सन्देश वाहक, हजरत मुहम्मद । क़बूल = स्वीकार, मुबीं = प्रकट, आफ़री = प्रशंसा, शाहे ग़जनफ़र = हजरत अली ।

धूर <धूः ।

नबी के पिछे सब में तुज है शरफ़
वो शाहे रसूलाँ तूँ शाहे नज़फ़
तेरा याद दिन रात 'शाही' का काज
तेरे हैफ़ मूँ है उसे तख़्तो ताज

शाहे रसूलाँ = रसूलों के बादशाह, शाहे नजफ़ = हजरत अली, तख़्तो ताज = सिंहासन और मुकुट ।

पिछे <पीछे ।

मसनवी

१

बनाई है सारी अपस कूँ रयन
इसी थे कवाई रयन ने मोहन
रयन के अँबर पर नुमायाँ दिसे
सोने की सलायाँ हवायाँ दिसे
चँदर जोत टीका लगाये रयन
फटाखाँ के तिर्रे उतारे मोहन
नलियाँ के मुसन्नफ़ अँचल साथ जोड़
ज़मीं कूं फ़लक सूँ लगे आग होर
ज़मीं सूं हवायाँ हुनर सूं जला
गगन के सितार्यां कूँ ल्याये बुला

अपस कूँ = अपने को, इसी थे = इसी से, कवाई = कहवाई, कहलाई, प्रसिद्ध हुई । मोहन = मोहनी, प्रिय । हवायाँ = हवाई (ब. व.) एक आतिशबाज़ी, फ़टाखा = पटाके,

नलियाँ = नली, अँजल = अंजलि, सितार्यां = सितारे, नुमायाँ = स्पष्ट, मुसन्नफ़ = विभक्त करने वाले, हुनर = कौशल ।

अँजल < अंजलि, सितार्यां = सितारा (ब. व) ।

रयन ने मोहन कहवाई — दक्खिनी में कर्त्ताकारक के साथ कई स्थानों पर अनावश्यक रूप से 'ने' का प्रयोग होता है ।

चकर बान सिसफूल निस के अलक
खड़ी आके ख़िदमत कूँ शह की झलक
दिखाई गगन का तमाशा निगार
तो पाई है 'शाही' का अत गत पियार

२

सोने की सुराही सोने का है जाम
सोना घोल पीती है भर भर मुदाम
चँदर मुख सकी का अधिक प्यार का
सोने का है सिसफूल सुरिज सार का
सोने कियाँ कलियाँ कर करन में भरी
सोने की जँजीरी गले में धरी

चकरबान = एक आतिशबाज़ी, सिसफूल = सीसफूल, अलक = बाल, अतगत पियार = बहुत स्नेह, सार का = समान, सोने कियाँ = सोने की, कलियाँ कर = कलियाँ बना कर, करन = कान, निगार = प्रेमिका, जाम = प्याला, मुदाम = शाश्वत ।

सिसफूल < सीसफूल, आके < आकर, अतगत < अतिगत, चँदर मुख < चन्द्र मुख, सकी < सखी, करन < कर्ण ।

सिना है सकी का सोने सार का
सोना होर मोती गले हार का
सोने का ज़रीना सोने का है आँग
सोने का है टीका सोने की है माँग
सुधन जब सँवारी है पैजन का नग
सोना आ सरन लग धर्या सीस पग
करम तुज पे 'शाही' का दिसता है आज
सोने का अँचल ओट करती है लाज

सिना = छाती, आँग = अंग, सुधन = युवती, आ सरन लग = शरण में आकर, करम = दया ।

सिना <सीना, सकी <सखी, आँग <अंग, सरन <शरण, धर्या <धरिया, सीस <शीश ।

गज़ल

(१)

सारी रयन तेरा मदन मुज तबा में भरपूर है
तुज सुबह मुक के सामने दीपक सदा मख़्मूर है
तुज नैन की नरमी कने मँगते हैं मोती आबरू
या रूप की तूँ खान है या हुस्न की समदूर है
तुज बाल काले देख कर बादल फिरें हैरान हो
तुज भाल होर तीलक कने क्या चाँद होर क्या सूर है
तुज गाल की तारीफ़ सुन पंकज छिपे जा नीर में
तुज रंग के परताब सूं कंचन का मुख रंजूर है
'शाही' के दिल सब हात ले मँगती मनाने नह सूँ
पस छोड़ दे हट-तट जिते भी केती मग़रूर है

मदन = कामदेव, प्रेम । नरमी कने = कोमलता के आगे, समदूर = समुद्र, मख़्मूर = मस्त, शराबी । आबरू = इज्ज़त, रंजूर = दुखी ।

मुक <मुख, समदूर <समुद्र, परताब <प्रताप ।

मुज = इस स्थान पर 'मुज' का प्रयोग 'मैं' सर्वनाम के षष्ठी के रूप में हुआ है ।

(२)

जिस दिन ते तुमन सात लग्या मनड़ा हमारा
उस दिन ते पिरत का हुआ मुज तन में पुकारा
दो नैन अवल धस के देखे सैन तुमारे
लटके तें पलक मार करे इश्क़ दुबारा
फाँदे करे दो ज़ुल्फ़ घुँघरवाल खबाले
मुज नैन पखेरू के बदल तिल रखे चारा
ले हात में फुलमाल गले लाल पिन्हाये
चौसार चँचल नार करे प्यार अपारा

चितचोर पिया सात भरे नेह पियाले
'शाही' सेती मय पीके लगा नैन नज़ारा

मनड़ा = मन, तुमन सात = तुम्हारे साथ, पिरत = प्रीति, अवल = पहले, धसके = घुसकर, सैंन = इशारा, फाँदा = फंदा, पखेरू = पक्षी, तिल = शरीर पर तिल की आकृति का श्याम चिन्ह, चौसार = चतुर, अपारा = अपार, पस = बस, मग़रूर = घमण्डी । शाही सेती = शाही से ।

सात < साथ, लग्या < लगिया, पिरत < प्रीति, अवल < अव्वल, फाँदा < फंदा, फुलमाल < फूलमाला, पियार < प्यार ।

तुमन = तुम सर्वनाम का षष्ठी का रूप ।

(३)

ख़ुश भाँत हो पियारी आती अँगन में जम जम
नित पेम में लटकती दिसती नयन में जम जम
नैनों की छब निरखने अचरज भई तबीयत
दो चाँद हो पिया के झमके बदन में जम जम
आगें बुला पिया नें दो बोल मुख ते कहते
अंब्रित के घुट पिया के दिसते रसन में जम जम

फूली हूँ अत ख़ुशी सूँ हो बाग़ बाग़ मन में
जब हत में हत मिलाकर फिरते चमन में जम जम

भाँत = भाँति, पेम = प्रेम, दिसती = दिखाई देती है, छब = छवि, घुट = घूँट, रसन = रसना (जीभ), मय = शराब, जमजम = शाश्वत रूप में ।

पियाले < प्याले, भाँत < भाँति, पियारी < प्यारी, पेम < प्रेम, छब < छवि, अचरज < आश्चर्य, अंब्रित < अमृत, घुट < घूँट, रसन < रसना, अत < अति, हत < हस्त ।

कइ जिन्स फूल रँगीले सेज में बिछा कर
आनन्द करी हूँ पिव सूँ हिल मिल वतन में जम जम
अर्दंग हो में पिया की दिसती हूँ छावँ सम हो
कइ भाव ते रिझा कर लेती हूँ मन में जम जम
रूँ रूँ छकी हुई हूँ पी वस्ल का पियाला
पिव जीव होके हरदम बसते हमन में जम जम
कीती हूँ चक कसौटी रंग-रूप जो परखते
पिव सूर-सा झलकता बत्तिस लछन में जम जम

जब भाग मुज सँवारे सब ते शरफ़ में तारे
'शाही' पिरत किये मुज राखे लगन में जम जम

कइ जिन्स=कई प्रकार के, आनन्द करी हूँ=आनन्द प्राप्त किया है, अर्दंग=अर्द्धांगिनी, छावें=छाया, कइ भाव ते=अनेक भावों से, रूँ=रोम, कीती हूँ=किया है, चक=आँख, हमन में=मुझ में, वत्तिस लछन=बत्तीस लक्षण, पुरुष के बत्तीस गुण, वस्ल=मिलन ।

अर्दंग<अर्द्धांग, रूँ<रोम, चक<चक्षु, लछन<लच्छन<लक्षण । पिरत<प्रीति ।

(४)

मुख मोड़ ले चली है चँचल ने गुमान कर
पलखों के तीर छानत भौंहें कमान कर
नाज़ुक यू गत की लटकी में आ टिक्या है जिव मुज
झटका अँचल कूँ देके चली है यू जान कर
कुच दो कँवल कलियाँ अछे धन के सिने ऊपर
कंचुक की छब यू खन दिसे बाँधे जो तान कर
मुख देखते मोहन के हुई है शिगुफ़्तगी
लोचन थकत भये जो दिखाये वो आन कर
अमरित भरे अधर ते हुई है हयात मुज
देख्या नज़र जो भर के लबद धन के ग्यान कर

पलख=पलक, तीर छानत=तीर बरसाती है, गत=चाल, कुच=स्तन, कंचुक=चोली, खन=चोली का विशेष प्रकार से बनाया गया कपड़ा, मोहन=मोहनी, प्रिया, धन=युवती, नाज़ुक=कोमल, शिगुफ़्तगी=प्रफुल्लता, हयात=जीवन, लबद=होट ।

चँचल<चंचल, पलख<पलक, गत<गति, कँवल<कमल, सिने<सीने, कंचुक<कंचुकी, अमरित<अमृत, देख्या<देखिया, ग्यान<ज्ञान खन<खंड ।

प्यारी हो रूप की दिसे मुज सामने झलक
लोचन सुँदर के मुखड़े कूँ बोले हैं भान कर
निर्मल बदन चँचल का यता साफ़ है मगर
मूरत मोहन की ओटे हैं चँदनी कूँ छान कर
दिन रात तास पहर घड़ी मन बसी का याद
आरंब किया है हिरदै कूँ सब तिसके ध्यान कर

नोरस के भाव अंग लेकर आ मिले मोहन
नेह के मन्दिर में नित रखे 'शाही' परान कर

भान कर = सूर्य कह कर, यता = इतना, ओटे है = थामती है, मनबसी = मन में निवास करने वाली, आरंब = प्रारंभ, तास = घंटा, नौरस = साहित्य के नौ रस, परान = प्राण, सुधन = युवती, ।

भान < भानु, चँदनी < चाँदनी, आरंब < आरंभ, हिरदे < हृदय, नित < नित्य, सूरिज < सूरज < सूर्य ।

(५)

सुधन के रूप कूँ तोले सुरैया के बटाँ घाने
दँडी सो कहकशाँ की कर चँदर सूरिज हुए थाले
भरे चश्मे अधर मद के लबों में लब मिलाने थे
नयन सू धन छकी होर है नजारे के पिये प्याले
कुँदन की गेंद से दिसते तरुन सुन्दर के जोवन दो
मकर नीलम के ताजाँ पैन बैठे हैं चँदर बाले
कलायाँ की बलायाँ ले करें रुन झुन कँचन नेपुर
चरन तल लाये महेंदी तूँ ज़मीं पर सब उगे लाले
गले की गलसरी का भेद क्या 'शाही' का मन भेद्या
मगर तकसीर लिक ल्या कर सुधन के ले गले डाले

(६)

तुज गाल पर नक का निशाँ दिसता है मुज इस धात का
रोशन शफ़क़ में चमके ज्यूँ चाँद भली रात का

बटाँ = तोलने के उपकरण, बाट । सूरिज = सूर्य, तास = घंटा, कहकशाँ = आकाश गंगा ।

अधर = होंट, मद = शराब, छकी = तृप्त, कुन्दन = सोना, जोबन = स्तन, मकर = मीन, चँदरबाले = कान में पहनने की विशेष प्रकार की बालियाँ, कलायाँ = कलाइयाँ, गलसरी = गले में पहनने का एक आभूषण, ठुस्सी । नक = नाखून, इस धात का = इस तरह का, चश्मे = स्रोत, लब = होंट, नज़ारा = दृश्य, ताज = मुकुट, निशाँ = चिह्न ।

तरुन < तरुण, जोबन < यौवन, नेपुर < नूपुर, भेद्या < भेदिया, लिक ल्या < लिख लिया < लिख ला, नक < नख ।

तुज ज़ुल्फ़ मिश्कीं देक कर साँपाँ तजे अन पान सब
तुज लब केरी लाली अँगे लालाँ सटे सुद गात का
अबरू कमानाँ खेंच कर मारे पलक के तीर सूँ
ज़ख़्मी हुआ दिल का हिरन लाग्या निशां तुज हात का
मुकड़ा सकी का ईद-सा दिसता अचंभा रूप सूँ
तिस केस पर ज़र का अँचल झलकात है शबरात का
तेरे बचन शीरीं अँगे शक्कर देखो खारी लगे
मुख में उचा काड़ी लिया डर कर हिया नाबात का
बुद बल पिरत का माँद कर 'शाही' सूँ जब बाज़ी करे
लेती भुला मन का तुरँग रुख़ ल्या रखे शहमात का

साँपाँ = साँप (ब० व०), अनपान = खाना पीना, केरी = की, लालाँ = लाल, (ब० व०), एक रत्न, सटे = छोड़ दिये, सुद = होश, गात = शरीर, मुख में उचा काडी लिया = मुँह में तृण रख लिया, हिया = हृदय, ज़ुल्फ़ = बालों की लट, मिश्कीं = कस्तूरी के समान, लब = होंट, अबरू = भौंह, ईद-सा = ईद के चाँद की तरह ज़र = सोना, शबरात = एक त्यौहार, शीरीं = मधुर, नाबात = मिश्री, शहमात = पराजय ।

सुद > सुध, गात > गात्र, मुकड़ा > मुखड़ा, सकी > सखी, बुद > बुध > बुद्धि ।

(७)

सजन मिलने बुलावे जो चलूँगी पावँ कर सिस सूँ
पिरत ला पीव ते रहने ना पुछूँगी कधीं किस सूँ
पिया ते दूर होने में लड्या है नाग बिरहे का
उसी का याद अमरित हो न मरना है मुजे बिस सूँ
पड्या अँदकार जग में मुज पियारे के बिछड़ने थें
नयन तल रोज़ लागे यूँ मुक़ाबिल हो रह्या निस सूँ
सहेल्याँ के मनाने तइँ न होवे धीर चित मेरा
नसीहत अब न भावे मुज न होवे चैन कुच इस सूँ
नहीं परवा सँवरने का मुजे भूकन पिन्हावो मत
कँचन नैनों में अब मेरे कमीना हो दिसे मिस सूँ

पाँव कर सिस = सिर को पाँव बना कर, पिरत ला पीव ते = प्रिय से प्रेम लगा कर, कधीं किस सूँ = कभी किसी से, लड्या है = डसा है, नाग बिरहे का = विरह का काला साँप, बिस सूँ = विष से, सहेल्याँ के मनाने तइँ = सखियों के मनाने के लिए,

कुच = थोड़ा, परवा सँवरने का = सजावट की इच्छा, भूकन = आभूषण, रोज = दिन, मुक़ाबिल = प्रतिद्वन्दी, नसीहत = उपदेश, कमीना = तुच्छ, मिस = ताँबा।

सिस <शीश, पिरत <प्रीति, कधीं <कदापि, लड्या <लड़िया <लड़ा, अमरित < अमृत, बिस <विष, अँदकार <अंधकार, निस <निशा, सहेल्याँ <सहेलियाँ, भूकन <भूषण, पिन्हावो <पहनाओ ।

बिरह में डाल दे मुज कूँ पिया नीठुर हुए हैं अब
सँदेसा यू जो मेरा है बयाँ लिक लिक कहो तिस सूँ
अगर कुछ बोल कड़वे मुज सूँ बोलेंगे सिरीजन तो
फिर उत्तर न देऊँगी कधीं भौं गाँट भा रिस सूँ
जो कुच हट, दिल सूँ धो, सट सब, करूँ मन भावता पिव का
रहूँगी सेवकी हो में पिया की रीज है जिस सूँ
धँडोरा मार कर 'शाही' बिरह के बोल बोल्या जो
जहाँ के आशक़ाँ सुन तो हुवे बेहोश सब जिस सूँ

नीठुर = कठोर, लिक लिक = लिख लिख, तिस सूँ = उससे, सिरीजन = प्रिय, भौं गाँट भा = भौंहों में गाँठ बाँधकर, भौंहे चढ़ा कर, रिस सूँ = क्रोध से, जो कुच हट = जो कुछ जिद है, दिल सूँ धो = मन से धोकर, सट सब = सब छोड़ कर, सेवकी = दासी, रीज = प्रेम, लगाव। धँडोरा = ढिंढोरा, जहाँ के आशक़ाँ = संसार के प्रेमी लोग।

नीठुर <निष्ठुर, लक लक = लिख लिख, गाँट <गाँठ, रीज <रीझ, धँडोरा < ढँढोरा ।

(८)

जिस ज़ुल्फ़ो गाल के अँगें शामो सहर किदर
तिस रूप के परखने कूँ हद्दे बशर किदर
सुन्दर फलक पे चाँद के टीके की देख जोत
तारे निवार डार दे फिरता चँदर किदर
गुलज़ार से जो गाल कूँ देख्या शरफ़[1] के रोज़
सट दे शफ़क़ कूँ उट के चल्या सूर हर किदर
मुकड़ा बन्यो है पिक ?, में रँग ले पवल का सब
अमरित भरे अधर अँगे मिसरी शकर किदर

१. जिस दिन सूर्य सब से ऊँचा होता है।

हँस चाल ले चली है सखी जब गुमान कर
पूछे सखी सखी कूँ सखी की नज़र किदर

आलिंग करे है लाल रँगीली सूँ पिरत कर
केसर भिनी है अँग में तेरी जिदर किदर
'शाही' ते सेज में हुई लटपट मोहन ने जब
बारिक कमर ते खिस गया है ज़र-कमर किदर

अगें=आगे, टीका=माथे का आभूषण, निवार डार दै=न्यौछावर करके डाल दे, सट दे=डाल दे, उट के चल्या=उठ कर चला, सूर हर किदर=सूरज के चारों ओर, पिक=पीक (?), ज़ुल्फ़ो गाल=बाल की लटें और कपोल, शामो सहर=सन्ध्या प्रातः। हद्दे बशर=मनुष्य की मर्यादा, गुलज़ार=चमन, केसर भिनी है=केसर से सुगन्धित है, बारिक कमर=पतली कमर, खिस गया है=खिसक गया है।

डार दे<डाल दे, उट के<उठ के, मुकड़ा<मुखड़ा, अमरित<अमृत।

(९)

पिव सात रीज रहना लज्ज़त इसे कते हैं
अप रीज फिर रिझाना सनअ़त इसे कते हैं
तुज नयन के नगर में लालन वतन किये जब
तब अंजुमन के लोगां खलवत इसे कते हैं
मैं छावँ हो पिया सँग लागी रही हूँ दायम
यक तिल जुदा न होना वसलत इसे कते हैं

लालन वतन किये जब=जब प्रिय ने निवास किया, कते हैं=कहते हैं, यक तिल=एक क्षण, जिदर किदर=चारों ओर, लज्ज़त=आनन्द, अंजुमन=सभा, ख़लवत=एकान्त, दायम=सदैव, वसलत=मिलाप।

आलिंग<आलिंगन, भिनी<भीनी, किदर<किधर, बारिक<बारीक, सात<साथ, छावँ<छाया।

गुल होर गुलाब म्याने हुई कुच फ़रक़ अज़ल ते
यूँ पिव सूँ मिल रही हूँ उलफ़त इसे कते हैं
हित जोड़ चित भुलाई मैं आपने पिया कूँ
आक़िल जहाँ के बोलें हिकमत इसे कते हैं
सौतन में पीव मुज कूँ जब सेज में अपस के
भौ मान दे बुलावे इज्ज़त इसे कते हैं

चारो पहर पिया सँग कइ भाँत कर मदन के
संजोग हो रही हूँ इशरत इसे कते हैं
लालन के चाव थे में पूरी पुरो के इंछ्या
तिरलोक में पनवाती शुहरत इसे कते हैं
रूँ रूँ रसन करी में 'शाही' का नाँवँ लेते
फिर फिर वो नांवँ लेना राहत इसे कते हैं

हित = प्रेम, सौतन = सौत, भौ मान दे = बहुत सम्मान देकर, कइ भाँत = कई प्रकार, मदन = कामदेव, पूरी पुरो के इंछ्या = इच्छा पूर्ण करके, तिरलोक = तीनों लोक, पनवाती = बदनाम होती (?)। शुहरत = प्रसिद्धि, फ़रक़ = अन्तर, अज़ल = सृष्टि का आदि, उलफ़त = प्रेम, हिकमत = उपाय, इशरत = वैभव, रूँ = रोम, रसन = जीभ।

न्हईं < नहीं, कुच < कुछ, कते हैं < कहते हैं, भौ < बहु, भांत < भाँति, संजोग < संयोग, तिरलोक < त्रिलोक, शुहरत < शोहरत।

(१०)

दर्द इसते हुआ है मुज के में तुज कल नहीं देख्या
हुआ बेकल यता में कल के यक तिल कल नहीं देख्या
अज़ल ते जोड़हो अक्सर बनी है तुज सूँ मुज यारी
फिरा यू दिल कूँ देख्या जो तुमें डुलमुल नहीं देख्या
अंजू मुज नैन ते टपकन लगे तुज बिरह के हावे
मुक़ाबिल दिरग दरपन धर बजुज़ जल-थल नहीं देख्या
तुमारे हुस्न की ख़ूबी मुक़ाबिल जब चँदर सूँ हुई
तदाँ ते में कलंकी कूँ कधीं निरमल नहीं देख्या

मुज के में = मुझ कि में, बेकल = बेचैन, यता = इतना, यक तिल = एक क्षण, कल = चैन, जोड हो = जोडी बनकर, संयोग से। डुलमिल = संदेह पूर्ण, अंजू = आँसू, विरह के हावे = विरह के कारण, दिरग = दृष्टि, दरपन = आइना, तदाँ ते = तब से, राहत = छुटकारा, शान्ति। यारी = प्रेम, मुक़ाबिल = सम्मुख, बजुज़ = इस के अतिरक्त।

रूँ < रोम, रसन < रसना, नाँवँ < नाम, दिरग < दृग, दरपन < दर्पण, चँदर < चंद्र, तदाँ > तदा, निरमल > निर्मल।

गुलाबी गुल कूँ जीती है तुमारे गात की ख़ोय
धुँड्या अत्तारख़ाने सब यता परमल नहीं देख्या

तुमारे मुक सलोने पर घुँगट की ओट देख्या जो
चँदर पर इस नज़ाकत सूँ कधीं बादल नहीं देख्या
खबाले बाल में सूरत सुहानी तुज दिसे रोशन
यता परकास निस म्याने किसी मशअल नहीं देख्या
हुई है ताल आलम में तुम्हारी चाल सूँ अक्सर
लटक चलना तुमन जैसा किसे मंगल नहीं देख्या
खँजन जैसे नयन म्याने दिसे काजल सूँ सूका जब
सफ़ा कागज़ पे इस खूबी सूँ मैं जदवल नहीं देख्या
तुम्हारी ज़ुल्फ़ के पेचाँ ने पिंजे दिल कूँ सब मेरे
पिरम का दाम ऐसा मैं कधीं औकल नहीं देख्या
हमारे नैन होर दिल में लगे खटपट तुमन देखत

घुँड्या = ढूँढा, परमल = सुगन्धि, खबाले = घुँघराले, सुहानी = सुन्दर, परकास = उजाला, ताल = ताल (संगीत), तुमन जैसा = तुम्हारे जैसा, सूका = काजल का चिह्न, गुल = गुलाब का फूल, खोय = पसीना, अत्तारखाने = गंधी की दूकानें, नज़ाकत = कोमलता, मशअल = मशाल, सफ़ा = स्वच्छ, खूबी = विशेषता । पिंजे = पींज डाला, धुना । औकल = बेचैन ।

गात < गात्र, घुँड्या < ढूँडिया, परमल < परिमल, मुक < मुख, घुँगट < घूँगट, सुहानी < सुहावनी, परकास < प्रकाश, निस < निशा ।

(मूल प्रति का पृ० १५४ उपलब्ध नहीं हुआ, अतः उपर्युक्त ग़ज़ल सं० १० की कुछ पंक्तियाँ उपलब्ध नहीं हैं । । ११ वीं ग़ज़ल की निम्नलिखित दो पंक्तियाँ हस्त-लिखित प्रति के पृष्ठ १५५ पर अंकित हैं ।)

(११)

पिरत की रीत सूँ मोहन कहे हँस हँस सुनो 'शाही'
अजब शुहरत हुई जग में हमारी इश्क़ बाज़ी की

(१२)

सकल भूषण ते दुर चक यू बनाये आप से सारी
दिसावे नयन में जग के बरस सोला की हो नारी

मोहन = मोहनी, प्रेमिका । दुर चक = दो आँखें, दाम = फंदा ।

पिरम <प्रेम, पिरत <प्रीति, दुर <द्वि, सोला <सोलह ।
पींजना = पीनना, धुनना ।

सुरिज हल कर यू दुर चक पर लिख्या नक़्क़ाश आशिक़ हो
हरेक गुल बीच जदवल के दिसे टीका जड़त कारी
सुँदर नासिक में बेसर कुफ़ुल दो हल्क़े करन दिसते
कनक जंजीर ज़ुल्फ़ाँ कर सुहावे रूप में भारी
दरूना राज़े मानी का ज़बाँ पर क़ुफ़ुल महकम कर
जिते गौहर मुहब्बत के रखे हैं आप में प्यारी
नज़ारा कर यू दुर चक पर करम ते यूँ कहे 'शाही'
मगर सनअत सूँ मानी यू किया है सब क़लमकारी

(१३)

सुरिज = सूर्य, दुर चक = दोंनो आँखें, तिय = स्त्री, दरूना = तरोना, सलक = निकल कर, फिसलकर। फ़िकिर पर लगे हैं = चिन्ता के पंख, हल कर = घोल कर, नक़्क़ाश = चित्रकार, गुल = गुलाब का फूल, क़ुफ़ुल = ताला, हल्क़ा = घेरा, मंडल। मानी = ईरान का एक पौराणिक चित्रकार। महकम = दृढ़, गौहर = मोती, सनअत = चतुराई, मानी = अर्थ।

सुरिज <सूरज <सूर्य ।

चलिया तीर ऐसा कमाँ ते सलक
पवन कूँ फ़िकिर पर लगे है तलक
अछे गोड़मन्दा बराबर कमान
मगर कस ते लइ खींच देता मलक
परियाँ से दिसे शह के हत तीर सब
क़ादिलदार होकर खड़ा है फ़लक
चिला ख़ुश सुहावे कमाँ के उपर
कमाँ पदमिनी सी चिला है अलक
झमकते हैं पौलाद के भाल यू
सुरिज की किरन ते अधिक है झलक
अजब तीर पर कर चुँगल भाल ले
चल्या बाज़ सुरख़ाब पर जूँ धमक

मुज़फ़्फ़र[1] अली शाह के हात का
अचुक तीर लाग्या निशाँ के पलक

अछे = है, कस = शक्ति, लइ = बहुत, परियों से दिसे = परियों की तरह दिखाई देते हैं, शह के हत तीर सब = बादशाह के हाथ के सम्पूर्ण तीर, पदमिनी = पद्मनी (एक प्रकार की नायिका), पौलाद = इस्पात, भाल = माथा, भाला। धमक = दौड़कर, हमला करता हुआ। गोड़मन्दा = इन्द्र धनुष, कमान = धनुप, कंदिलदार = दीपधर, मलक = देवदूत, फ़लक = आकाश, चिला = धनुप की प्रत्यंचा। चुंगल = पंजा, बाज़ = एक शिकारी पक्षी, सुरखाब = एक पक्षी।

किरन < किरण।

(१४)

तुज भाल के परताव ते पैदा चँदर बाला हुआ
सुंदर गले में हाँस तुज ज्यूँ चाँद कूँ हाला हुआ
नाचक (?) चुगा देख्या हूँ जब बिखरे अलक तुज सीस पर
मुज दस्त कूँ तुज केस लूँ ज्यूँ मीन पर जाला हुआ
तुज खोय की खुश बास ते बासी किये हैं बास सब
झटके अपस के बाल जो तो भुइँ पे सब माला हुआ
केसर ते टीका टीप कर देती मोहन जब भाल पर
दिनकर दिसे तीलक यू सुद होर माँग उजियाला हुआ

अचुक = रामबाण, अव्यर्थ। परताब ते = प्रभाव से, हांस = गले की हड्डी (हंसली)। नाचक = (?) तीलक = तिलक, निशाँ = निशान, लक्ष्य। हाला = घेरा, मंडल। दस्त = हाथ, खोय = पसीना।

परताब < प्रताप, चँदर < चंद्र, भुइँ < भूमि. सुद < शुद्ध।

सोहे सुरंग डोरे सकल लोचन में तुज तकसीर से
इस नयन की तासीर ते सब गौड़ बंगाला हुआ
मँगने हैं अवसर नैन तुज मुज दिल ले जाने के सबब
पुतल्याँ दिसे बेदर (?) हो सुद सूका सो ज्यूँ भाला हुआ
नैन नईं यू चक सुँदर यू है यू जाम है पुर मय भरे (?)
चाख्या मगर यू जाम तो मंसूर[2] मतवाला हुआ

१. मुज़फ़्फ़र = विजयी।
२. मंसूर = अरब का एक दार्शनिक जिसने 'अनलहक़' ('मैं ईश्वर हूँ') का प्रचार किया।

तेरे अधर पर लाल होर काली धड़ीं के रंग थे
गुँजफल भरे हैं बेल में चमने चमन लाला हुआ
सारा पुनम का चाँद सो तेरे सुलक्खन मुख अगल
खोकर अपस का नूर सब ज्यूँ रुई का गाला हुआ

सोहे = शोभित हो रहा है, सुरंग = सुन्दर, डोरे = डोरे (आँख के), गौड बंगाला = गड्डमड्ड, घोल मथोल, जादू। मँगते हैं = चाहते हैं, ले जाने के सबब = ले जाने के लिए, बेदर = (?) सूका = काजल की रेखा, धड़ी = मिस्सी की परत, गुंजफल = गुंजा फल, तकसीर = जादू, अगल = आगे, तासीर = प्रभाव, परिणाम। जाम = प्याला, चमने चमन = बगीचे बगीचे में, लाला = एक फूल।

तुज < तुझ, गुँजफल < गुंजाफल, पुनम < पूनम < पूर्णिमा। सुलक्खन < सुलक्षण।

इन्दर सँवार्या आरती तुज मुख सलोने के बदल
चँद-सूर दो दीपक दिसें आकास सो थाला हुआ
तेरी मोहन माने की छब देख्या हूँ जब छाती पे तुज
तुज नावँ सो मुज विरद कर वो माल जपमाला हुआ
तुज बाँह पर कंचुक हरी होर हात मे म्हेंदी के गुल
सब मिल नजर में यूँ दिसे ज्यूँ फूल का डाला हुआ
अक्सर दिसे तेरी सिफ़त लैला मने मजनूँ के तईं
इसते दिवाना हो यता जब जग सूँ निरवाला हुआ
रबि-ससि ते मिल 'शाही' ने जब तोल्या है तेरे हुस्न कूँ
दण्डी दिसे सुद कहकशाँ आकास सो थाला हुआ

सँवार्या = सजाया, थाला = थाली, माला = गले का एक आभूषण, माल = माला, डाला = डाली, मजनूँ के तईं = मजनूँ के प्रति, इसते = इससे, निरवाला = निराला (?), दण्डी = तराजू की डंडी, सुद = स्वच्छ। विरद = जप, गुल = फूल, सिफ़त = विशेषता, कहकशाँ = आकाश गंगा।

इन्दर < इंद्र, सँवार्या < सँवारिया, कंचुक < कंचुकी, म्हेंदी < मेंहदी, रबि < रवि, दण्डी < दंड, सुद < शुद्ध।

छाती पे तुज } दोनों स्थानों पर 'तुज' का प्रयोग सम्बन्ध कारक में हुआ है।
तुज नाँव }

(१५)

दीदम नज़र भर रूप जो उस शूख़ चक मस्ताना रा
गुफ़्तम बिया मन्दिर मने रोशन बुकुन काशाना रा

ना मान कर इस बोल कूँ अंचल झटक दे जब चली
आ ख़श्म सूँ बोली मुँजे बा मन मगो अफ़साना रा
तिसके फ़िराक़ों यू दिसे गुलज़ार सब अंगार हो
य दिल मुअल्लम हो मेरा देवे सबक़ परवाना रा
येती सुलक्खन नार कूँ देख्या नहीं कोइ ख़ाब में
जिसके नयन पुरसाफ़ ते खिजलत बुअद दुरदाना रा
जितियाँ अथियाँ हितकियाँ सखियाँ कइ लाख हिरफ़त कर मना
ल्यायाँ बुना मेरे कने आँ दिलबरे जानाना रा
वो मन बसी आने की धुन सुनते हुआ मुज कान सुक
अत शौक़ सूँ पीने बदल पुर मी कुनम् पैमाना रा
मौज़ूँ मुक़फ़्फ़ा बोलने हर यक कूँ काँ ताक़त अछे
अचरिज खया शाही ग़ज़ल सुनने बदल फ़रज़ाना रा

(१६)

कँवले कँवल ते नर्मतर प्यारे हैं तेरे हात रंग
तिसकू सुरँग रँगने बदल म्हेंदी के पकडी पात रंग
हीरे दसन की लाज सूँ जाकर छिपे हैं खान में
दरपन तुमें कह ना सकूँ सुन्दर है तेरा गात-रंग
मधुकर सो आकर नेह सूँ बैठा है जूँ अरबिंद सूँ मिल
तुज मुख उपर ऐ मनमोहन, दिसता है मुज इस धात रंग
ऐसी सुलक्खन नार की तारीफ़ कर अप रूप में
देख्या नज़र भर यूँ खया दायम है इसके सात रंग
दो क़ाफ़िया दे यक ग़ज़ल 'शाही' बँध्या नौ तर्ज़ सूँ
नादिर वो हर यक बोल सुन लगते मिठे नाबात रंग

कँवले = कोमल, तिसकू = उसे, सुरंग = अच्छा रंग, पात = पत्ता, दसन = दाँत, मनमोहन = मन मोहित करने वाली, इस धात रंग = इस तरह का रंग, अपरूप = अपना रूप, यूँ खया = इस तरह कहा, नर्मतर = कोमलतर। नौतर्ज़ = नई तर्ज़, नादिर = अनुपम।

कँवले < कँवल < कोमल, कँवल < कमल, म्हेंदी < मेंहदी, नाबात = मिस्री, पात < पत्ता < पत्र, दसन < दशन, अरबिंद < अरबिंद < अरविंद, सुलक्खन < सुलक्षण, खया < कहा।

(१७)

पहले सखी के अंग के में यूँ अरत कहूँ
तिसके नयन कटाछ कँ सारी पिरत कहूँ

याकूत का तिलक सोहे सुन्दरी के मुख पे यूँ
गोया दिपक दिपे हैं यू चन्दर के हत कहूँ
भागीरती सो माँग है सिसफूल ब्रहमन
नित वाँ झलक किया सो वो तीरत की गत कहूँ
जब लाल कर अधर कूँ सो दरपन में देखतें
दरपन में लाल छाँव ते सब भर जड़त कहूँ

अरत = अर्थ, चन्दर के हात = चन्द्रमा के हाथ में, भागीरती = गंगा, माँग = माँग (सिर के बालों की), वाँ = वहाँ, गत = गति, काफ़िया = तुक, याकूत = एक रत्न।

यक < एक, अरत < अर्थ, कटाक्ष < कटाच्छ, पिरत < प्रीति, दिपक < दीपक, भागीरती < भागीरथी, ब्रहमन < ब्राह्मण, तीरत < तीर्थ, गत < गति, छाँव < छाया।

बेसर का हल्क़ा छब सूँ दिसे माहे नौ नमन
तिसके लटकते मोती कूँ मैं बिरस्पत कहूँ
छाती पे कंट माल की सूरत कूँ खूब देख
वो माल मुज पै दाम हो फिर मैं सिफ़त कहूँ
'शाही' कूँ पान के बिड़े देती मोहन ने जब
तिसके कँगन के गुन कूँ मैं अचरिज औगत कहूँ

(१८)

अवल ते दिल लगा मुज सूँ इता तो की फिराते हैं?
हमारे सुख भरे जिव कूँ तुमें की दुक में भाते हैं?
सुरीजन के चँदर से मुख कूँ देखन कूँ हिया ताने
पिरत कर और सूँ प्यारे हमन कूँ की तपाते हैं?
हमारी चूक नईं कुच होर तुमें चुप चुप रुखाई कर
नहीं सो रीत की रीतों निपट हमना खिजाते हैं

नमन = समान, बिरस्पत = बृहस्पति (ग्रह)। की = क्यों, भाते हो = डालते हो, सुरीजन = प्रेमी, तुमें चुप चुप रुखाई कर = तुम व्यर्थ में ही रूखे बन कर, नहीं सो रीत के रीतों = जो रीति नहीं है उस रीति से, हमना = हमें, माहे नौ = नया चाँद, खूब = विशेषता, दाम = जाला, फंदा। सिफ़त = विशेषता, गुण। औगत = अविगत।

बिरस्पत < बृहस्पति, कंटमाल < कंठमाल, अवल = अव्वल, दुक < दुख।

यकस कूँ सेज में रख कर समुद में दाल दो जिव कूँ
अपस के हात सूँ लेकर डोबाते होर तिराते हैं

दुतिन के बोल सुन सुन कर अबोले की हुए मुज सूँ ?
अमोले बोल बोलो कुच ना कुच कह् की कुड़ाते हैं ?
लगे हैं सेज में अक्सर दुतिन के हात के नख यूँ
तुमारे गाल पर छब सूँ चँदर-सूरिज दिपाते हैं
भुरू पर गाँठ भा पिव ने फिराये मुख दिसे मुज यूँ
अवल ते मार कर तीराँ कमाँ अब तो छिपाते हैं
दिसावें रात के शेवे तुमारे गात पर सारे
ठगाने कूँ इता हमना सवाँ की झूट खाते हो ?
रँगीले रँगभरे 'शाही' लगाये पेम का लावक
जगा तू रैन सारी मुज नयन रँग में रँगाते हैं

समुंद = समुद्र, दाल दो = डाल दो, अपस के = अपने, डोबाते होर तिराते = डुबाते और तैराते, दुतिन = सौत, अबोले = मूक, अमोले = अमूल्य, कुड़ाना = चिढ़ाना, दिपाते हैं = चमकते हैं, भुरू = भौंह, भुरू पर गाँठ भा = भौंहों को चढ़ाकर, दिए मुज यूँ = मुझे दिखाई देता है, दिसावें = दिखाते हैं, इता हमना = इतना हमें, सवाँ = सौगन्ध, दाल = डाल, की = क्यों, डोबाते = डुबाते, लावक = लगाव, प्रेम, ।

अमोले <अमूल्य, कुड़ाते <कुढ़ाते, छब <छवि, भुरू <भ्रौ सवाँ <सौं (ब. व.)

(१९)

जोगी हुआ है झाड़ जो लेता भिबूती छाल की
बैठा है आसन मार कर कीता मरी ले पाल की
सर पर जटाँ सुद पारंबियाँ होर फूल के गुल तन पे सब
गुंचे की लइ सिंगी बजा धूरी लगाया लाल की
पुस्तक बना पत्तर की सब रेकाँ दिसे अक्खर हो सुद
दिकला दिया है भेक कर पूरी जगुत को ताल (?) के
सारे फलाँ सो कान में मुंदरे किया है आपने
गाड्या नखाँ कर सब जड़ाँ लेने खबर पाताल की
जब झाड़ कूँ जोगी किया साबित सकल मज़मून ते
तब हुई ग़ज़ल ताज़ी तरज़ 'शाही मदन भूपाल' की

मरी = मड़ी, क्यारी, भिबूती = भस्म, सुद = पवित्र, पारंबियां = बड़ की जटा, लइ = बहुत, सिंगी = शृंगी, सींग का बना हुआ बाजा । धूरी = धूल, पत्तर = पत्ता रेकाँ = रेखाएँ, दीकला दिया = दिखा दिया, भेक = वेष, जगुत = उपाय, जड़ां = जड़ें, गुंचा = कली ।

पेम <प्रेम, भिबूती <विभूति, जटाँ <जटा (ब. व.), सिंगी <शृंगी, पत्तर <पत्र, रेकाँ <रेखा (ब. व.), भेक <वेष, गाड्या <गाड़िया।

(२०)

सारे जहाँ के पारखी परखूँ रतन क्यों कर कहो
याक़ूत होर मरजान में को है रतन बरतर कहो
बोले जहाँ के पारखी हमना न आवे बोलना
तुमना सुहाता बोलना ऐ शाहे बहरोबर कहो
बोल्या हूँ नित मैं फ़िक्र ते यो दो रतन का फ़र्क़ कर
गर कुच अछे इन्साफ़ तो इस बोल कूँ ख़ुशतर कहो
मरजान में साफ़ी नहीं याक़ूत में साफ़ी अछे
जिस ज़ात में साफ़ी अछे उस ज़ात कूँ बेहतर कहो
याक़ूत होर मरजान की 'शाही' लिख्या सारी ग़ज़ल
सुन कर जगत के शाअराँ इस शेर कूँ अफ़सर कहो

सकल मज़मून ते = सारे विषयों से, को है = कौन है, हमना न आवे = हमें नहीं आता है, तुमना = तुम्हें, ताज़ी तरज़ = नई शैली, मरजान = मूँगा, बरतर = श्रेष्ठ, शाहे बहरोबर = जलथल के बादशाह, ख़ुशतर = अच्छा, साफ़ी = स्वच्छ, ज़ात = व्यक्तित्व, बेहतर = श्रेष्ठ, शाअराँ = शाअर (कवि) ब० व०, अफ़सर = मुकुट, बड़ा।

जोगी <योगी।

मुख़म्मस

बिरहनी मुख़म्मस[1]

(१)

कोई जाओ कहो मुज साजन सात
मैं नेह बँदी तूँ कीता घात

दिल मेरा अपने सात किया
मुज बिरहे में दिन रात किया
दिलदारी की ना बात किया

---

(१) मुख़म्मस = जिस कविता के एक खण्ड में पाँच पंक्तियाँ होती हैं।

सब बिसरा सुख हैहात किया
की मुज सूँ ऐसी धात किया

(२)

कोई जाओ कहो मुज साजन सात
मैं नेह बँदी तू कीना घात
पिव मूरत देखूँ सपने में
जब जागूँ तब रहूँ तपने में
ला दीपक बिरहा अपने में
तन जाली झुक झुक जपने में
आराम अछे मुज खपने में

बिरहनी = विरहणी, मैं नेह बँदी = मैं स्नेह से आबद्ध हूँ, हैहात = अफ़सोस, ऐसा धात किया = ऐसा ढंग किया, दिलदारी = प्रेम ।

(३)

कोई जाओ कहो मुज साजन सात
मैं नेह बँदी तू कीता घात
मुज नैनों नींदन आती न्हइँ
यू रैन कठिन सर जाती न्हइँ
पिव बाज मुज कोई साती न्हइँ
इस बात बिन कुच भाती न्हइँ
बिन अफ़सोसे कुछ खाती न्हइँ

(४)

कोई जाओ कहो मुज साजन सात
मैं नेह बँदी तू कीता घात
क्या पीव हमन सूँ दन्द किया
सुख सारा मुज पर बन्द किया
मैं उसकी थी वो छन्द किया
अप ध्यान लगा मुज फन्द किया
मुज देह जला अस्पन्द किया

खान में = नष्ट होने में, सर जाती नहीं = बीत नहीं जाती, सरना = बीतना, पूरा होना। बाज = बिना, भाती = अच्छी लगती, बिना अफ़सोसे = बिना दुःख किये, हमन सूं = हम से, दन्द = शत्रुता, लड़ाई। छन्द = छल, फन्द = जंजाल, अस्पन्द = नजर उतारने के लिए जलाये जाने वाले राई जैसे दाने।

साती < साथी, दन्द < द्वन्द, बाज < वर्जना।

(५)

कोई जाओ कहो मुज साजन सात
मैं नेह बँदी तूँ कीता घात
तुज याद कर तलमिलती हूँ
ल्हउ तेल में दिल तलती हूँ
तन मोमबती हो जलती हूँ
इस जलने सूँ ना टलती हूँ
सब रैन विरह में गलती हूँ

(६)

कोई जाओ मुज साजन सात
मैं नेह बँदी तू कीता घात
जो बिरहा जाल्या तन कू अब
यू दूक घनेरा घेर्या तब
ज्यूँ हनवन्त जाल्या लंका सब
अब कैसे सोसूँ मेरे रब
मैं मुखड़ा देखूँ पिव का कब

ल्हउ तेल में = खून के तेल में।

(७)

कोई जाओ मुज साजन सात
मैं नेह बँदी तू कीता घात
कोइ आव, सुनो रे मेरा हाल
पिव कीता मुज सूँ जो गोटाल
म चक ते नित अठ अंजू ढाल

गल पेनी आँसू मोती माल
मुज यक यक पल है लख लख साल

(८)

कोई जाओ कहो मुज साजन सात
मैं नेह बँदी तू कीता घात
सब सुख के मैं औधान सटी
इस वेधन सूँ गुन ग्यान सटी
मैं तन अभरन अनपान सटी
सब सौतिन में मान सटी
होर चक अंजन मुक पान सटी

गोटाल = गडबड़, छल। चक = आँख, अंजू = आँसू, औधान = स्मृति, वेधन = पीडा, सटी = छोड़ी, अभरन = गहना, अन पान = खाना पीना।

गोटाल <घोटाला (मराठी), चक <चक्षु, औधान <अवधान, वेधन <वेदना, अभरन <आभरण, अनपान <अन्नपान।

(९)

कोइ जाओ कहो मुज साजन सात
मैं नेह बँदी तूँ कीता घात
सुन सहेली यू दुख भारी है
पिव सात विछोहाकारी है
यू पीर बिरह की न्यारी है
दुख सात लागी यारी है
पिव बाज जग अँधियारी है

(१०)

कोई जाओ कहो मुज साजन सात
मैं नेह बँदी तूँ कीता घात
जब दूतिन सँग लग पीव चले
मैं साँसों घट सुलगाये नले ?

तन मुजमर हो दिल ऊद जले
तब सीने भर मुज आये छले
पिव मिलने बिन ना होय भले

विछोहाकारी = वियोग करने वाला, पीर = वेदना, बाज = बिना, दूतिन = सौत, छले = छाले, मुजमर = अँगीठी, ऊद = एक सुगन्धित पदार्थ, सीना = छाती।

सात <साथ, पीर = पीडा, छले = छाले।

(११)

कोई जाओ कहो मुज साजन सात
मैं नेह बँदी तू कीता घात
जो बिरहा दाट्या तन में आज
तब छोड़ दिती दो कुल की लाज
दिन रात कठिन है लालन बाज
दो नयन रखे पिव देखन काज
जो भेटूँ पिव सूँ होवे राज

(१२)

कोई जाओ कहो मुज साजन सात
मैं नेह बँदी तू कीता घात
पंथ पिरत में जे पाग्या है
सब रैन बिरह में जाग्या है
दिल अपना ले दाग्या है
सुख छोड़ दे तिस भाग्या है
अब सत ही बिरही लाग्या है

(मूल प्रति में कुछ पृष्ठ गायब हो गये हैं, अतः यह कविता यहीं तक उपलब्ध है।)

दाट्या = डटा, आकर जम गया। दो कुल की लाज = पीहर और ससुराल की लाज, लालन = प्रिय, बाज = बिना, पाग्या है = पग रखा है, दाग्या है = जलाया है, तिस भाग्या है = उसके पास भग गया है, सत = शक्ति, सत्य।

दाट्या <डाटिया <डटा, पाग्या <पागिया, दाग्या <दागिया, भाग्या <भागिया, लाग्या <लागिया।

मुसम्मन

मुसम्मने हज़रते शाही[1]

यक रैन आकास पर उडगन ते मिल देख्या चन्दर
पाच के थाले में ज्यूँ भर कर रखे सारे गुहर
या हरे वाले ऊपर तारे तकट (?) सरबसर
या सफ़ा जाली पुरो मोतियाँ की पैनी है सुँदर
यूँ दिखाई रात जो खूबी सूँ अपने तईं सँवर
देखने यू सनअताँ खुशहाल हुई मेरी नज़र
तब ज़बाँ दिल सूँ कहे नइँ कुच यहाँ हद्दे बशर
इस वज़ा कारीगरी कर तूँ रख्या ऐ कारसाज़

उडगन = नक्षत्र मंडल, पाच = पंच रत्न, पैनी है = पहनी है, वाला = एक वस्त्र, गुहर = मोती, तक़ट = फर्श, सरबसर = पूरा, सफ़ा = स्वच्छ, ज़बाँ = जीभ, वज़ा = ढंग, कारसाज़ = काम करने वाला, ईश्वर।

मोतियाँ < मोती (ब०व०), पैनी < पहनी, नइँ < नहीं, य्हाँ < यहाँ।

१. शाही की मुसम्मन। मुसम्मन = कविता की एक शैली जिसके प्रत्येक खंड में आठ चरण होते हैं।

तिस रैन महज़ूज़ हो अत शौक़ सूँ कीते बचन
मदह में उस ज़ाते बाबरकात की खोल्या रसन
तबा मुज बोल्या मुसम्मन ख़ुश इबारत ख़ुश वज़न
हक़ किया क़ुदरत सूँ आलम तिसमें यक रोशन बदन
सो मुहम्मद है हुसेनी सैयदे क़ुतबे दखन
इस ज़मीं के क्या अथे ताले जो कीता है वतन
खान सो यू धरत होर तिसमें तूँ है ज्यूँ रतन
जिन लक़ब पाया है अपने पीर ते गेसूदराज

अत = अधिक, रसन = जीभ, महज़ूज़ = आनन्दित, मदह = प्रशंसा, ज़ाते बाबरकात = शुभ व्यक्तित्व, तबा = स्वभाव, मुसम्मन = आठ पंक्तियों का एक छन्द, इबारत = लेखन, ख़ुशवज़न = जिसकी छन्द योजना अच्छी हो, रोशन वदन = प्रकाशमान शरीरी, हुसेनी = हुसेन की सन्तान, सैयदे क़ुतुबे दखन = वली से भी ऊपर का व्यक्ति क़ुतुब, दक्खिन के क़ुतबों में श्रेष्ठ, ताले = भाग्य, लक़ब = उपाधि।

गेसूदराज = हज़रत ख़ाजा बन्दे नवाज़ की उपाधि—लम्बे बालों वाला।

नूर ते पैदा हुआ सच फ़ातिमा का आल तूँ
मुस्तफ़ा होर मुर्त्तज़ा के सब चला है चाल तूँ
इश्क़ होर इरफ़ान सूँ दायम है मालामाल तूँ
इस ज़मीं के औलियाँ में है बुलन्द इक़बाल तूँ
नित हक़ीक़ी होर मजाज़ी का है साहेब हाल तूँ
सब मुअम्मे रम्ज़ के समजा देवे फ़िलहाल तूँ
आशक़ी का मर्त्तबा धरता है बालेबाल तूँ
आरिफ़ाँ में शाह कर राख्या है तुज कूँ बेनियाज़

बालेबाल = पूर्णतया, आल = बेटी की सन्तति, मुस्तफ़ा = हज़रत मुहम्मद, मुर्त्तज़ा = हज़रत अली, इरफ़ान = ईश्वर का ज्ञान, औलियाँ = औलिया (वली) ब० व०, इक़बाल = वैभव, हक़ीक़ी = यथार्थ, मजाज़ी = पार्थिव, साहेब हाल = ईश्वरज्ञ, मुअम्मा = पहेली, रम्ज़ = रहस्य, मर्त्तबा = प्रतिष्ठा, आरिफ़ = ईश्वरज्ञ, बे नियाज़ = निरपेक्ष ।

फ़ातिमा = हज़रत मुहम्मद की पुत्री और हज़रत अली की पत्नी ।

जब ते पाया हूँ मुबारक ख़ूबतर तेरी यो धात
बोलना लाज़िम किया तब मुज पे तेरे कुच सिफ़ात
है ख़ुलासा दीन का जो तूँ लिख्या है सो नुकात
लख करामत हो दिसे यक यक जो तूँ बोल्या है बात
हक़ की रह पावे वही जो मन लगाया तुज सँगात
होय कंचन, तूँ लगे झाँ है परस तेरी यू जात
है दो जग में सुर्ख़रू जिस सिस पे तूँ धरता है हात
बोलते हैं ख़ल्क़ सब इसते तुजे बन्दे नवाज़

तेरी यो धात = तुम्हारा यह ढंग, बोलना लाज़िम किया = बोलने के लिए विवश किया गया, मुज पे तेरे कुच सिफ़ात = मेरे द्वारा तुम्हारे कुछ गुण, है ख़ुलासा दीन का = धर्म की व्याख्या है, लख करामत हो दिसे = लाखों चमत्कार होकर दिखाई देते हैं, सँगात = साथ, झाँ = जहाँ, परस = पारस, इसते = इससे, मुबारक = शुभ, ख़ूबतर = सुन्दरतर, नुकात = सूक्ष्म बात, रह = राह, रास्ता । सुर्ख़रू = सफल, यशस्वी ।

कुच <कुछ, लिख्या <लिखिया, झाँ <जहाँ, परस <पारस, सिस <सीस, हात = हस्त ।

बन्देनवाज़ = गुलबर्गा के हज़रत ख़ाजा बन्देनवाज़ (१३२२ ई०–१४२३ ई०)

दे करामत का शरफ़ रब तुजकूँ जब पैदा किया
बन्दगी का मर्त्तबा तूँ सिद्क़ ते बरपा किया

जब तसव्वुफ़ ते तूँ अपना ध्यान सब बाला किया
राज़ के हर काम तूँ जो कुछ किया बर जा किया
जब अपस सीने ते तूँ वस्वास कूँ न्यारा किया
हर घड़ी में के बरां (?) इबलीस कूँ रुसवा किया
रख क़दम इस बाट में तूँ सब अमल ज़ेबा किया
तो निदा हातिफ़ ने तुज आया के आशिक़ शाहबाज़

करामत = करामात (चमत्कार), बाट = रास्ता, शरफ़ = बड़ाई, रब = ईश्वर, बन्दगी = प्रार्थना, सिद्क़ = सच, बरपा करना = पैदा करना, तसव्वुफ़ = सूफ़ी मत, बाला = ऊँचा, राज़ = भेद, रहस्य। सीना = छाती, वस्वास = बुरे विचार, के बरां = कितनी बार ? इबलीस = शैतान, रुसवा = बदनामी, अमल = आचरण, ज़ेबा = सुन्दर, निदा = आवाज़, हातिफ़ = एक फ़रिश्ता, आशिक़ = प्रेमी, शाहबाज़ = हजरत बन्दे नवाज।

करामत < करामात।

तुज विलायत का हुदा रहमान ते इनआम है
फ़ैज़ सूँ तेरे सदा महज़ूज़ ख़ासो आम है
मय मुहब्बत ते जनम भरपूर तेरा जाम है
बेख़बर ना होके रहना मस्त तेरा काम है
नाँवँ तुज लेना मुजे हर वक़्त में आराम है
ध्यान तेरे इश्क़ का मुज दिल में सुबहो शाम है
नेक हो आग़ाज़ तुज क्या ख़ुशनुमा अंजाम है
तुज सरीका तूँच है देख्या हूँ जब कर इम्तियाज़

तुज सरीका = तुम जैसा, तूँच है = तुम्हीं हो, विलायत = वली (सन्त) की पदवी, हुदा = पद, रहमान = ईश्वर, इनआम = पुरस्कार, फ़ैज़ = कल्याण, महज़ूज़ = लाभान्वित, ख़ासो आम = बड़े छोटे, अमीर गरीब। मय = शराब, जाम = प्याला, सुबहो शाम = प्रात: सायं, आग़ाज़ = प्रारंभ, ख़ुशनुमा = शोभास्पद, अंजाम = परिणाम, अन्त। इम्तियाज़ = अन्तर।

हुदा < हिदायत, नाँवँ < नाम।

मुक पे तेरे नूर का जब सूर सा देखे झलक
आशिक़ी करने लगे तेरे उपर सातों फ़लक
देख कर आलम तुजे तेरे रुख़न दिल सूँ ढलक
झाड़ने दरबार तुज झाड़ू किये अपनी पलक

ना हो सक जोगी मुक़ाबिल तुज अँगे जब रहे तलक
हो मुसलमाँ सिद्क़ ल्या कहना सटे तब सब अलक
आफ़रीं कहने लगे ख़ुशहाल हो सारे मलक
हर घड़ी इख़लास की साबित जो देखे तुज नमाज़

मुक पे तेरे = तुम्हारे मुख पर, दिल सूँ ढलक = हृदय से मुग्ध होकर, झाड़ने दरबार तुज = तुम्हारे दरबार को झाड़ने के लिए, ना हो सक = नहीं हो सके, अँगे = आगे, रहे तलक = रहने तक, ल्या = लाकर, सिद्क = सच्चा, मलक = देवदूत, फ़रिश्ता। इखलास = शील, साबित = पूर्ण, अभंग।

मुक <मुख, सूर <सूर्य, अलक <अलख ।

इस्लाम के अनुसार सात आकाश हैं, एक स्तर के पश्चात् दूसरे आकाश का स्तर प्रारंभ होता है।

इश्क़ के लावक सूँ तूँ करतार का मंज़ूर है
चाँद ज्यूँ सोला कला तिरजग में यूँ मशहूर है
अक़्ल के आकास पर सच नामवर तूँ सूर है
रोशनी देने बदल तुज ज़ात सारा नूर है
पाँचतन[1] का मेहर सो तेरे उपर भरपूर है
चिश्त[2] के सब ख़ान्दाँ में मौतबर तूँ धूर है
राजमारग पावने तेरा अमल दस्तूर है
दो सिफ़त पाया तुहीं याने हक़ीक़त होर मजाज़

लावक = लगाव, प्रेम, तिरजग = तीनों लोक, धूर = श्रेष्ठ।

धूर <धूः ।

मंज़ूर = स्वीकृत, नामवर = प्रसिद्ध, मेहर = दया, मौतबर = विश्वसनीय, प्रतिष्ठित, दस्तूर = नियम, हक़ीक़त = यथार्थता, मजाज़ = काल्पनिक।

तिरजग <त्रिजग,

इस धरत पर आज तो दिसता नहीं तुज हमक़रीं
तबअ़ का दीपक लगा पाया है तूँ दुनिया व दीं
मारिफ़त की राह में तेरा गुमाँ है सो यक़ीं
राज़ के पाने मनें तेरी नज़र है दूरबीं

---

(१) पाँचतन = पंजतन, हज़रत मुहम्मद, फ़ातिमा, हज़रत अली, हसन, हुसेन।

(२) चिश्त = सूफ़ी सम्प्रदाय की चार बड़ी श्रेणियों में से एक।

पाक है काफ़ूर ते जाँ तूँ समाया सो ज़मीं
शाम तेरे वस्ल की होयती सबा लग अम्बरीं
रूह तेरा तब वतन पाया है फ़िरदौसे बरीं
तुज मुबारक जिस्म दुनिया ते किया जब ऐहतेराज़

पाने मनें—प्राप्त करने में, जाँ=जहाँ, हमक़रीं=पास का, साथी। दुनिया व दीं=संसार और धर्म, मारिफ़त=ईश्वर ज्ञान, वस्ल—मिलन, अम्बरीं=अम्बर की सुगन्धि वाला, फिरदौसे बरीं=ऊपरी स्वर्ग, ऐहतेराज़=बचना, दूर रहना।

धरत <धरती <धरित्री, जाँ <जहाँ।

शाह राजू कूँ हुआ है फ़ख्र तू ऐ मुहतरम
जो निपाया हक़ नें उनकी ज़ात ते तेरा जनम
पीर मर्दाना, सचा, वाला नसब, आला हिमम
तुज उपर जब ते हुआ करतार का पूरा करम
औलिया की फ़ौज में तब तूँ उचाया है अलम
कुफ़्र के फ़ौजाँ सकल तेरे अगल खोये मनम
या समद ! डर सूँ कहे जो कोइ जो पकड़े थे सनम
है जहाद अकबर वही जो तूँ किया है तुर्क ताज़

निपाया=उत्पन्न किया, उनकी ज़ात ते=उनके व्यक्तित्व से, सचा=सच्चा, उचाया है=ऊपर किया है, तेरे अगल=तुम्हारे आगे, फ़ख्र=गर्व, मुहतरम=आदरणीय, पीर=पूज्य, वाला नसब=कुलीन, आला हिमम—साहसी, औलिया=वली, अलम=ध्वजा, मनम=घमण्ड, या समद=हे ईश्वर, सनम=मूर्ति, जहाद अकबर=बड़ा धर्म वीर, तुर्क ताज़=वीर।

निपाया <निपजाया=उपजाया, सचा <सच्चा।

शाह राजू=हज़रत ख़ाजा बन्देनवाज़ के पिता, शाह राजू कत्ताल।

सब दकन के औलिया में शाह तूँ दिसता है आज
इस धरत के सिर उपर गुम्बज़ सो तेरा ज्यूँ है ताज
होर कलस के चाँद कूँ गुम्बज़ सूँ मिल कर देख साज
शरम सूँ आपस में गल हर निस चँदर जाता है लाज
रँग-बिरँग पैदा हुए बादल तेरे मंडप के काज
मेग तेरे उर्स कूँ करता है नौबत बाज गाज

प्यार कर करतार तुज इस तर्ज़ का देता है राज
ना समजसी कोई जो तेरी क़द्र का है हक़ सूँ राज़

दिसता है = दिखाई देता है, मंडप के काज = मण्डप के लिए, मेग = बादल, धरत < धरती, गुंबज < गुंबद।
दक्कन = दक्षिण भारत का गोदावरी और तुंगभद्रा के बीच का प्रदेश।

तुज सिफ़त लिखने बदल मुज तबअ़ कूँ होकर हवस
फ़हम का लेकर क़लम लिख कर रख्या हूँ जब यो जस
सुन यो बारा खन कहें अहले सुख़न पाकर उमस
यू इबारत ख़ूब होर मज़मून है सारा सरस
इस वज़ा का शेर कहने का न था मुज में तो कस
पन तेरी इमदाद सूँ येते बचन बोल्याँ हूँ धस
देह मुज कंचन करे यू नाँवँ तेरा है परस
तुज करम थें जग में 'शाही' हुआ है सरफ़राज़

जस = यश, कस = शक्ति, धँस = घुस कर, पन = लेकिन, हवस = इच्छा, फ़हम = विवेक, बुद्धि। सरफ़राज़ = कृतार्थ, अहले सुख़न = कवि।

मर्सिया

मर्सियाते[1] इमाम अलेहिस्सलाम[2]

शहादत का ज़िकर .... भाया है
....
हज़ाराँ .... सारा
.... साया है
दिसते ....
....
वो ....
....
पा ....

———

(१) मर्सिया = किसी की मृत्यु पर लिखा गया शोक गीत, हसन और हुसेन की शहादत के सम्बन्ध में लिखे गये पदों के लिए प्रायः इस शब्द का प्रयोग होता है।
(२) अले हिस्सलाम = ईश्वर उनका भला करे।

राग-रागनी

झूलना

(१)

सखी फुप कँवल सा चित मेरा फूल्या मुखड़ा पिव का पेखे ते
अछे गुन अधिक पिया केरे थाके हात फ़हम के लेखे ते
इता क्यूँ रखूँ दिल घट सखी 'शाही' पुरफ़नी के भेद मने
लिया पल मनें मन ऐंच मेरा लगा नैन डोरी के जड़ सेते

(२)

आली लाल के ख़याल में भूल रही 'शाही' लाल दयाल तो यू मुज भावे
प्यारे नेह ते गल में बाँह डाले मंझे मन कल कूँ अप धावे
दिसे चक सूँ चक लालन केरी पिरत प्रितबंब के सारे हो होने येक प्यारे
अने-आरस्याँ जाड़ दो सम रखे लगे जुग ज्यूँ चाँद-तारे

फुप = फूल, पेखेते = देखने से, केरे = के, थाके = थक गये, लेखना = देखना, समझना, लिखना। इता = इतना, घट = सख्त, ऐंचना = खींचना, भेद मने = भेद में, जड सेते = जड़ से, चक = आँख, सारे हो = सब जगह हो, अने आरस्याँ = आइने और दर्पण, जाड़ दो = जड़ दो, जुग हुए = दो हुए, पुरफ़नी = जादूगर।

फुप < फुप्प < पुष्प, कँवल < कमल, पेख < प्रेक्ष, चक < चक्षु।

भूपाली

बड़े बड़े नैनन तें थोड़े-थोड़े सैनन सूँ
भरे भरे बैनन तें कहे मो सूँ बात है
खड़े खड़े देखन तें चल चल कैनन सूँ
हँस हँस लाज करे मुड़ मुड़ जात है
गोरे गोरे दण्डन में कारे कारे फूँद सोहें
अंचर की ओट गात धर के लजात है
पेखत 'मदन रूप' पेम को समदुर कर
नैन के झाज लाज मोत भर ल्यात है

सैनन सूँ = इशारों से, बैनन तें = वचनों से, मोसूँ = मुझ से, कैनन सूँ = कहने से, दण्डन में = भुजाओं में, कारे = काले, फूँद = फूँदा, सोहें = शोभित होता है, समदुर = समुद्र, झाज = जहाज, मोत भर ल्यात है = मोती भर कर लाते हैं।

बैंन <बयन <वचन, कैना <कहना, कारे <काले, अंचर <अंचल, गात <गात्र, समदुर <समुद्र, झाज <जहाज, मोत <मोती ।

आसावरी

पिया सूँ मोरी बाँह लगी नयनन मिल मोह्या नैन थके
जैसे कमुद लाये टकटकी सगरी रैन 'मदन रूप' संग है छके

कमुद = कुमुद, सगरी = सम्पूर्ण, छके = तृप्त हुए ।
कमुद <कुमुद, सगरी <सकरी <सकली <सकल ।

नट

तिर यह बेसर कूं मुकत गुंजफल भयो
स्याम दसन लाल अधर मिल ऐसो रंग कियो
कबरी भारी च कहूँ कहूँ फुप नीके
लागत हमें जैसे उडगन घन रह्यो
'मदन रूप' झाँ रूप सूं अटक्यो ताके उपमान साँच कह्यो

मुकत = मोती, दसन = दाँत, भारी च = बोझल ही, कहूँ-कहूँ = कहीं-कहीं, घन = बादल, झाँ = जहाँ ।

मुकत <मुक्ता, गुंजफल <गुंजाफल, दसन <दशन, उडगन <उडुगण ।

बिहागरा

(१)

हट कीन्हो मो सूं मेरो री लाल
कौन रूप अटक्यो न जानू हो री पीतपाल रसाल
अब कैसें धीर चित रखूँ सजनी निठुर भये हैं दयाल
रोम रोम सुख होवे मिलन लालन सूँ 'मदन रूप' भूपाल

(२)

आँगन आये हो मेरे प्यारे
जितें बैठा चित में आवत हौंसूँ तितें सुख दे बिसारे
तन मन वार डारी, धन, माय री जब देखे नयन धुरारे
अनूप अमोले रस भरे रीज रिझावत सब हीं ते न्यारे

सकल तिरियन में रीत प्रीत कर मोह भाग सँवारे
पल पल पय्याँ लागे रहूँ 'मदन रूप' जगत के पालन हारे

पीत पाल=प्रेम का पालन पोषण करने वाला, प्रेमी। रसाल=सरस, मधुर। हौंसूँ=उत्साहित होती हूँ, तितें=वहाँ, तिरियन में=स्त्रियों में, पय्याँ लागे= पाँवों को छूते हैं।

पीत पाल<प्रीतिपाल, निठुर<निष्ठुर।

देसी टोडी

देखो री एक **चौंप** (?) भेक लिएँ फन अष्ट दिसा किसन कियें
कटाच्छ दिरग वाको बिरद बानो सोहें तिरलोक मोहन 'मदन रूप' तिनके हियें
बयन बनाय के, उपजावत, रिझावत, समजावत सकलन तियें
तानन तान लेत सेवक मुर्तजा अस्तुत करत पाऊँ मदन छब रस पिये

भेक=वेश, किसन=भगवान कृष्ण, बचन=बोल, तियें=स्त्रियों को, मुर्तजा= हजरत अली।

भेक<भेष<वेष<वेश। किसन<किरसन<कृष्ण। बयन<वचन।

केदारा

मोहत मोहनी मोहन कारनें की बादर छाय रहे हैं?
देख रहे बिकलाय कहे हिया **मोह** (?) भये ऐसी कौन कहे हैं?
तन फूल पड़े मन चौंक उठे पिया आये गरें गर लाय कहे हैं
'मदन रूप' दिये बल बाँह को सौत दिखाय के ऐसे दहे हैं

को=क्यों, दहे हैं=जलाया है।
बादर<बादल, गरे<गले, गर<गला।

काँगड़ा

(चौदरह रतन)

जगत समदुर मथ्यो कर चतुराई रमनी कर सिंगार
पलख तीर-धन, रंभापुत्री लज्या लछमीं लेने औतार
कटाच्छ तुरंग सैन अंब्रित पख काजर नेह कू चंदर कीती नार

मोह सुरा कौस्तभ किय के डोरी परजात धमलता संक सियार
मदन हस्त निरखन धनंतरी कामधेन सो दिष्ट दुख निवार

पलख <पलक ।

सारंग

सुन सखी पिया पास हीं मेरो जिया धावे री
कैसें राखूँ धीरज चित मोहे वाही नेह फिरावे री
जब देखूँ मोहन लाल दयाल के चरन तब नयन हीं सुहावे री
'मदन रूप' साहब को मिलन अंग अंग मोहे भावे री

श्री गौड़ी

याको रूप दिखावे तार तान सर सैन सूँ
मन माँ निरखत नैन सूँ सरवन बैन सुनावे
लाख लोभूँ ? चित त्यो तिस सूँ सबद सैन बतावे
भेद ब्रिदंग गत 'अली आदिल' सेवक मुर्त्तज़ा निरत नचावे

ब्रिदंग <मृदंग ।

भैरूँ

भैरूँ भेद भन जात सो महा सुन्दर गौर वरन घनसार
तिरलोचन चन्द्र सीस मुकट मध गंगा सरप सिंगार
एक हस्त मुंड नर, तिरसूल जुगल कर तीजें सुमरन चतर संखाधार
आसन गज **प्रतीष्ट** ? व्याग्रम चर्म रचित बरनित मन्दिर बिरदंग बजावत नार

अड़ाना

हट छाड़ दे चित तें मेरे मोहन लाड़ले
सब निस रूठे रूँठे फिरत है प्यारी सूँ पेम काड़ ले
हौं मनाऊँ तू नाहीं माने येतो रिस मन में गाडले
काहे कूँ कहो 'मदन रूप' साहेब सम्मुख आँचर की आड़ ले

गोंड मलार

भीजी-रीझी माई पीतपाल दयाल रसाल के संग
तन तें दूर भयो तपत दिन दिन बढ्यो उमंग

प्यारे को पेम भेद रह्यो मोहे सब अंग
मेटो न जाये चित तें 'मदन रूप' साहेब को रंग

यमन

बने बने बने आये बालम बाले कूँ रिझाऊँ
वह तो अनजाने जाने नहीं लागे ही खिजाऊँ
झुक झुक रहे मन में कोप ताप तन दे छिजाऊँ
अब यह बिनती सुनों 'मदन रूप' वह मानें तुम्हें समझाऊँ

रामकली

(सुहेला)

आज राज है, राज है, राज है, साँई घर राज है
सखियाँ सहेलियाँ मिल गाओ सुहेला सुहेला काज है
बन आयो सजनी **आवर** ? साजन सज सज साज है
'मदन रूप' नर-नारिन को सिर सिरताज है

पूरबी

जोवत जोत जो ज़ेब दिसे जर-तार के आँचर सीस तिहारे
दिष्ट जो दिष्ट मिलाओ तुहीं मोहे मात करे तो नयन खुमारे
'मदन रूप' कहें अचरिज सूँ देखन तेरे है पान सूँ कारे
ऐसी सुलक्खन नार जो साईं ने चन्द्रक छान के रूप सँवारे

पूरिया

यह बिनती सुनों हो प्यारे
यक पल यक छन मोसूँ हो ना न्यारे
हूँ निरगुन गुन 'मदन रूप' मोहे सँवारे
जब मिल्हना तब पय्याँ लागे रहूँ दया रे

मिल्हना < मिलना।

मलार

पहलें वाही सँग मन अटक्यो री सहेली
तुम जानत नहीं जिया की काहे मोहे हटक्यो री

मन में बस रही प्यारे की सूरत अत चटक्यो री
मो पैं रह्यो न जात 'मदन रूप' छब नैन लटक्यो री !

अत < अति ।

बिलावल

सुन री सखी पीव के हात का प्याला जो पी
मस्त हो मैं पीव कूँ अपने कने खींच ली
प्यारे 'मदन रूप' ने गल सूँ लगाये हैं भई
जीव मेरा इस बदल उस कने रखने कूँ दी

(मूल प्रति के पृ० २३४ का आधा भाग तथा २३५वें पृष्ठ पर लिखे गये अक्षर पूर्णतया मिट गये हैं ।)

अपने कने = अपने पास, इस बदल = इसके बदले, उस कने = उसके पास, रखने कूँ = रखने के लिए ।

विविध

शबरात

(१)

शबरात रात आती याराँ कूँ ख़ुश मनाती
भूकन-कँचन बना कर सब रैन जगमगाती
अबलोच से बचन सब लब के तबक़ भरा कर
लज़्ज़त लगा रसन में चारो पहर जगाती
कस्तूर का दे मलवट सुन्दर फलक पै सारा
महताब का तिलक ला मुक खोल कर दि ाती

अबलोच = मिश्री, रसन = जीभ, कस्तूर = कस्तूरी, मलवट = मिलावट, फलक = पटल, शबरात = एक त्यौहार, याराँ = यार, (मित्र) ब० व०, तबक़ = बड़ा थाल, बड़ा हिस्सा, लज़्ज़त = आनन्द, महताब = सूर्य ।

भूकन < भूषण ।

शेर

(१)

आराम की कइ बास थे ख़ुश बास हो सारे फुब
बादे सबा के मग़्ज़ में परवरदा कर राखे जतन

(२)

छुटी, लटकी लटक देखत अटक रहे पेम ते नैनाँ
हुआ मन बावला तब ते सुन्याँ जब तुज मधुर बैनाँ

(३)

बिरहा पिया के घट मनें जब पैट कर परगट हुआ
मनमत मिनें होर मुज मिनें उस रोज़ लइ खटपट हुआ

रुबाई

सब दीस गया है धन ते लड़ते लड़ते
घट रात गई है पाँवों पड़ते पड़ते
क्या टेक मदन का ऊँच लगता है मुजे
रहे पाँवँ सिड़ी पिरत की चड़ते चड़ते

बादेसबा = प्रातकाल की वायु, मनमत मिनें होर मुज मिनें = कामदेव और मुझ में, लइ = बहुत।

बैनाँ < बैन < बयन < बचन, पैटकर < पैठकर, परगट < प्रकट, मनमत < मन्मथ (कामदेव)।

कबित्त

प्यारे कूँ निरख प्यारी सखी सात बोल
उठे-देखन 'मदन रूप' काम की खटोटी है
भोजराज सम नाहीं वाही के समुज आगें
सरवन तो ऐसे लागें कबि की कसौटी है
करन किरपन भयो बकसीस नित देख लाख
गुपत दान देत हात की हतोटी है
पेखतें सुख पावे मूरत जो चित भावे
ऐसो लाल गुननिध साँच की सचोटी है

करन = राजा कर्ण, बकसीस = पुरस्कार, दान। पेखतें = देखते।

२

पूरे अत पेम के प्यारे कूँ ऐ देख देख
तारिक सो मूरत होय नयन में समाई है

सूझत ना बिन लाल काहू की न बात
कान में बाती कर आप निपट बड़ाई है
धीरज न याके हात छूट गई कुल लाज
बालपन जाय रह्यो तरुनाई आई है
ठौर ठौर बड़े होके फिराई 'मदन रूप'
देह के नगर में जो काम की दुहाई है

तारिक = तारिका, आँख की पुतली। कान में बाती कर = हँसाने के लिए कान के पास मुँह ले जाकर 'काना बाती कुर्र' कहना।

३

हात उचावत पेखन ते तिया नेत्र सूँ लायके आप सिकाई
सोलह कला सहीं सोभित कामिन चन्द की पुत्रिका देखन आई
मानिक देखे तें नख कूँ हृदै में हुलास चाह की दुहाई
ऐसे अनूप सिंगार की नार ले 'मदन रूप' जो चित लगाई

दोहरा

(१)

तन तिहारो चँदना और मुख तिहारो चाँध
नैन हमारे चकोर ज्यूँ रहे पिरित सूँ बाँध

२

मन कपाली तो दरस के नेत्र कचकोल लाय
मया कीजिये साजन दारिद निवार हो जाय

सिकाई = सिखाई, कपाली = कापालिक (सन्यासी)। मया = प्रेम। कचकोल <भिक्षापात्र। मया <माया, चाँध <चाँद, निवार <निवारण।

(३)

पिया बिछुरत मन लूक परे और नयनाँ कूँ सुख नाह
सुभ दिन तब हीं होयगो पिय आवन मुज ठाह

पहेली

मियाने मलाई भीतर रस
आसपास भूत दस

(नारियल)

(यहाँ से मूल प्रति के कुछ पृष्ठ गायब हैं)

ठाह = स्थान, मियाने = अन्दर।

(मूल प्रति के पृ० २३५ के अक्षर मिट गये हैं, अतः इस कविता की कम से कम छः पंक्तियाँ नष्ट हो गई हैं।)

तारीख़

बिना कर्दा अम वक़्ते ख़ुश ईं मकाँ
के दायम दरीं बुर्ज इशरत शवद
बइमदादे शाहे विलायत पनाह
बे जुश्तम चू तारीख़े आँ अज़ ख़िरद
बर आँ शश अदद रा फ़ुज़ूँ कर्द वो गुफ़्त
शरफ़ बुर्ज जाये मुबारक बुअद

अर्थ—मैंने शुभ मुहूर्त में इस भवन का प्रारम्भ कराया था, जिससे सदैव इस मीनार में आनन्द का उपभोग किया जा सके। हज़रत अली की सहायता से बुद्धि पूर्वक मैंने इस भवन के बनाने की तिथि ढूँडी। शरफ़बुर्ज के बनाने (१०७४ हि०) की जो संख्या निकली उस पर छह की संख्या बढ़ाने के लिए बुद्धि ने प्रेरित किया। (सन निकला १०८० हि०) = (१६७० ई०)।

तारीखे बादशाह-महल

पस अज़ हज़ारो समानीनो यक ज़े मेहरे अली
गिरफ़्त ज़ीनतो इक़बाल बादशाह महल
जिला बख़्श मेहरस्त ता माह रा
शरफ़ जी इमारत बुअद जाह रा

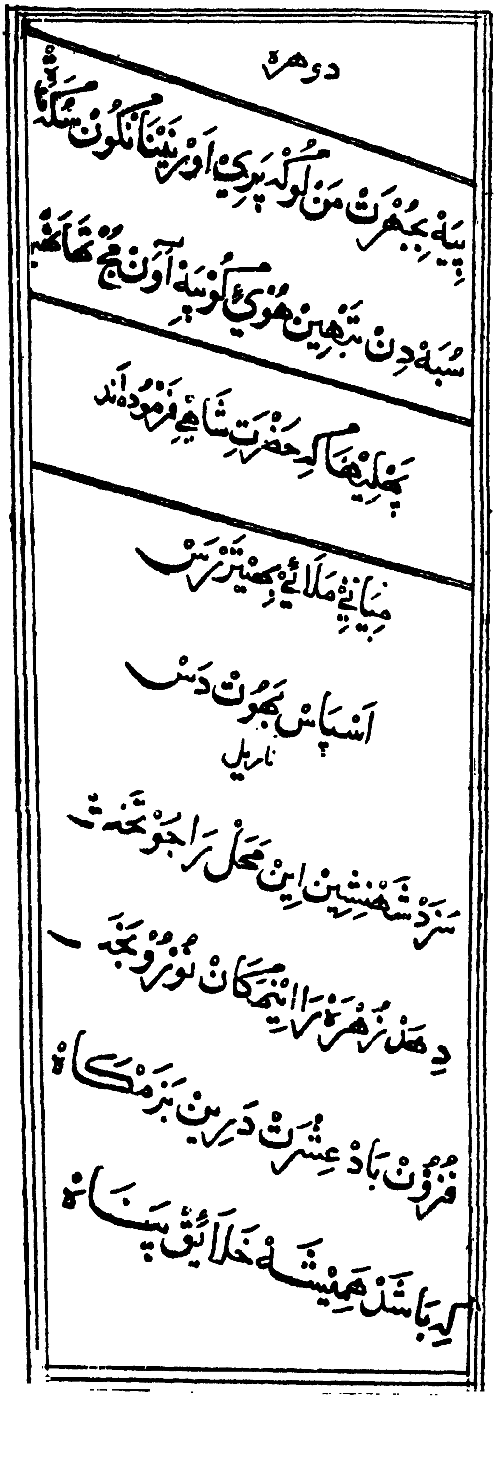
अर्थ—"हज़रत अली की कृपा से १०८१ हि० (१६७१ ई०) में बादशाही महल को ऐश्वर्य और सौभाग्य प्राप्त हुआ।"

"जब तक सूर्य चाँद को प्रकाश का दान देता रहे, इस भवन को प्रतिष्ठा मिले।"

(मूल प्रति के पृष्ठ २४० से पहले का पृष्ठ उपलब्ध नहीं है, अतः निम्नलिखित कविता पूरी नहीं दी जा सकी। पृ० २४० की चार पंक्तियाँ निम्न प्रकार हैं, कविता शाही महल से सम्बन्धित है)।

सज़द शहनशीं ईं महल रा चू तख़्त
देहद जाह रा ईं मकाँ नूर वो बख़्त
फ़ुज़ूँ बाद इशरत दरीं बज़्मगाह
के बाशद हमेशा ख़लायक़ पनाह

अर्थ—"इस महल के उच्च स्थान को राजा का सिंहासन शोभित करता रहे। शुक्र इस भवन को सदैव शोभा और सौभाग्य देता रहे। सभा भवन में सदैव ऐश्वर्य बढ़ता रहे, यहाँ सदैव प्राणियों को शरण मिलती रहे।"


دوہرہ
پیہ بچھڑت من لوک پرے اور نیناں کوں سکھ ناہ
سبھ دن تبہیں ہوئیگو پیہ آون مج ٹھاہ
پہلی ہا کہ حضرت شاہے فرمودہ اند
میانے ملائی بھیتر رس
آس پاس بھوت دس
ناریل
سزد شہنشین این محل را چو تخت
دہد زہرہ را اینمکان نور و بخت
فزون باد عشرت درین بزم گاہ
کہ باشد ہمیشہ خلائق پناہ

दोहरा

पिया बिछुरत मत लूक परे,
और नयनां कूं सुख नाह।
सुभ दिन तबही होयगो,
पिय आवन मुज ठाह।

पहली हा कि हज़रते शाहे
फरमूदा अन्द

मियाने मलाई भीतर रस।
आस पास भूत दस।

(नारियल)

सज़द शहनशीं ई महल, रा चू तख्त।
देहद ज़ोहरा रा ई मकां नूर वो बख्त।
फुज़ूं बाद इशरत दरी बज़्म गाह।
के बाशद हमेशा ख़लायक़ पनाह।

पृ० १०१ और १०२.

शब्दावली

अँग = अंग ६६
अँगन = आँगन ५७
अँगिया = आंगी ३३
अंगे = आगे ५१, ६५, ७३, ६०
अँगेठी = अँगीठी ४१
अँजल = अंजलि ६६
अँजू = आँसू ८५
अँपडना = प्राप्त होना ५४
अंब = आम ५४
अंबर = आकाश ५०
अगर = एक सुगन्धित पदार्थ ५७
अगल = आगे ४८, ७८, ६१
अगला = अधिक ३६
अचपल = चंचल ५३
अचल = पर्वत ५०
अचना = पृथ्वी ४२
अचुक = अव्यर्थ ७७
अछंबा = अचंभा, आश्चर्य ५६
अछना = रहना, होना २२, २४, २६ ३६, ७७
अजूँ = अभी, आज भी २७
अत = अति, बहुत ४५, ८७, ६६
अतगत = अधिक ६६
अथा = था ५७
अथारा = अपार ५७
अधर = होंट २६, ५६, ७०
अनपान = अन्नजल ७१, ८५
अने = आइना, दर्पण ६३
अपछर = अप्सरा ४३
अपड़ना = प्राप्त होना ५६
अपरूप = अपना रूप ७६
अपस = स्वयं, अपना २८, ५६
अपारा = अपार ६८
अपें = आप ही, स्वयं २२, ५२
अबरू = भौंह ७१
अबलोच = मिश्री ६६
अबोला = मूक ८१
अमन = पवित्र २५
अमरित = फलविशेष ५४
अमास = अमावस्या ५६
अमोली = बहुमूल्य ५६
अरत = अर्थ, तात्पर्य ५७, ८०
अरसी = आरसी, दर्पण २७
अर्दंग = अर्धांग ६६
अलक = बाल ६६
अवल = अव्वल, पहले, प्रथम २४
अवारा = विनष्ट ५७
असमान = आसमान ४१

आ

आँजू = आँसू ४२
आरंब = प्रारंभ ७०
आलिग = आलिगन ३३
अली = सहेली ५७
आव = अन्दाज ५१

इ

इंछ्या = इच्छा ७४
इता = इतना २४, ५६
इसते = इससे ७८

ई

ईताल = तत्काल

उ

उचाना = उठाना ४३, ६१, ६२, ६१
उटना = उठना ७३
उडगन = नक्षत्र समूह ५३, ८७
उडी मारना = तैरने के लिए पानी में विशेष प्रकार से कूदना ४२
उदक = पानी २७
उलाल = उत्साह ३५

ए

एकंग = एकाकी ४५

ऐ

ऐंचना = खींचना ५३

ओ

ओटना = थामना ७०

औ

औकल = निरंतर, बेचैनी ७५
औगत = अविगत ८०
औघान = स्मृति ८५
औसान = साहस ३७

क

कंचुक = चोली ६६
कंटमाल = गले का अभूषण विशेष ८०
कँवल = कोमल ७६
कईं = कहीं ४२
कइ = बहुत ७४
कजल = काजल ५२
कताँ = स्वर्ण खंड (ब. व.) ५७
कता हूँ = कहता हूँ २४
कतारा = पंक्ति ५७
कदम = कदम्ब (वृक्ष) ५७
कधीं = कभी ४२, ७१
कन = पास ५६, ६०
कने = निकट, पास ५३, ६६
कपाली = कापालिक १००
कमी = कम, त्रुटि ५२
कमुद = कुमुद ६२
करतार = ईश्वर ३७, ३६, ४६,
करन = कान ६६
कल = मशीन ४८
कलप = कल्प ३६
कलाल = सुराविक्रेता ३३
कवाना = कटाना ६५
कस = शक्ति, सार ३१, ३६, ६४, ७७, ६२,
कसना = कसना, परीक्षा लेना २२
कहूँ कहूँ = कहीं कहीं ६४, ६५
काँद = दीवार ५१
काँसे = कहाँ से २७
काकड़ा = ग्रंथि, बिनोला ४६
काड़ी = तृण ४३
काम = कामदेव ५३
कामगार = कार्यरत ६१
कारे = काले ६३
किते = कहाँ, कितन २२
किदर = कहाँ ७३
किसन = कृष्ण ६५
कीता = किया ३८, ५४
कीवाड़ = किवाड़ २३
कीली = ताली ५६
कुँदन = सोना ४१, ५७, ७०
कुँआ = कूप २६
कुच = कुछ ७२
कुच = स्तन ६६
कुड़ाना = चिढ़ाना ८१
कुबल = निर्बल, क्षीण ५२, ५६
कुमल = कोमल २४
कुलाल = कल्लोल २८
कूतना = जाँचना २२
केती = कितनी ३५
केतुक = कितना २८
केतुक = केतकी (पुष्प) ५३
केरी = की ७१
केरे = के ६३

कैना = कहना ६३
कोलस = कोयला ४४
को है = कौन है ८२
कौन्तेय = अर्जुन ४४

ख

खँदक = खंदक, खाई ६३
खड़ग = तलवार ४२, ६०, ६२
खड़बड़ = ऊबड़ खाबड़ ४३
खन = चोली का वस्त्र विशेष ३६
खन = कहना २८, ४८
खपना = नष्ट होना ८३
खबाले = घुँघराले ७५
खमरक = फल विशेष ५४
खया = कहा ७६
खला = हाला, वृत्त २७
खवल = गड़बड़ ४६
खिसना = खिसकना ३०, ७३

ग

गँवाना = खोना ५६
गज = हाथी ५०
गड़गड़ाना = गरजना १, ४२
गत = चाल, गति ६६, ८०
गलसरी = गले का आभूषण विशेष ७०
गवन = गमन २४
गाट = गाँठ ७२
गात = शरीर ७१
गिलाव = पुताव ५१
गुंजफल = गुंजाफल, गुमची ७८
गुसाईं = स्वामी ३३
गोटाला = घोटाला, गड़बड़ ८५
गोडमन्दा = इद्रधनुष ७७
गोड बंगाला = घोल मथोल, जादू ७८

घ

घट = शरीर, हृदय २४, ३६, ४०
घट = दृढ़, सख्त ३५, ६३
घड़ना = घटित होना, बनाना ४१, ५८
घन = बादल ६४
घुट = घूँट ५८

च

चँचल = चंचल २७
चंदर = चाँद ८०
च = ही ३२
चक = आँख २३, ६६, ७५, ७६, ८५, ६३
चकपक = बकवास, गर्वभरी बात ४४
चकरबान = एक आतिशबाजी ६६
चकल = चौड़ा ५२
चड़ना = चढ़ना ४४
चातिक = चातक ३६
चाव = उत्साह, उमंग, रुचित ३३
चितर = चित्र ५३
चितारा = सावधान करने वाला ६१
चितारा = चित्रकार ५४
चितारे = चित्रित किये ५३
चौधर = चारों ओर ५३
चौसार = चतुर

छ

छंद = छल, आडम्बर, उपाय ५६, ८४
छकना = तृप्त होना ७६, ६४
छके = तृप्त २८
छजा = छज्जा २४
छतियाँ = स्तन ३३, ३४
छपना = छिपना ३६, ५६
छब = छवि ६८
छला = छाला ६६
छाँव = छाया ६६
छिज = छीज, विगलन ३३, ३४
छिजना = क्षीण होना ३८, ५२
छिया = स्पर्श किया ३६
छीजना = क्षीण होना ३४

ज

जड़ = जड, मूल ८१

जड़त = जड़ाव, नग ५७
जती = यति, संन्यासी ३२
जनाना = प्रकट करना २६
जम = स्थायी, जमशीद ५७
जमजम = स्थायी २५
जस = यश ६३
जाँ = जहाँ ६१
जाइ = जाति (पुष्प) ५३
जाड़ना = जड़ना ६३
जाना = जन्म देना, प्रसव करना ३३
जिते = जितने ४०, ४३
जिदर = जिधर ७३
जिने = जिसने ४६
जिया = प्राण, जीव ३४, ३६
जुग = दो ६३
जुगुत = युक्ति ८१
जुवी = जूही (पुष्प) ५२
जूँ = ज्यों, जिस तरह ५७, ६४
जूई = जूही (पुष्प) ५३
जूवी = जूही (पुष्प) ५२
जेती = जितनी ५७
जेते = जितने ४०, ४७
जोग = योग्य ५०
जोबन = यौवन, स्तन ३३, ३५ ३७, ७०
जो लगों = जब तक ५५
जोसी = ज्योतिषी ३३
ज्यूं = जिस तरह २२

झ

झकारा = झकोला ५५
झजर = सुराही ५०, ५७
झलका = चमक २२
झाँ = जहाँ ६४
झाज = जहाज ६३
झाड़ फर = पेड़ और फल २५
झिला = चमक ५०

ट

टीक = टीका, सिर का आभूषण विशेष ४८
टीका = टीका ,, ,, ७३

ठ

ठसा = ठप्पा ३६
ठाड़ा = खड़ा ३६
ठार = जगह ६४

ड

डसना = साँप काटना ४२
डोंगर = पर्वत ४३
डोंबाना = डुबाना ८१
डोरा = डोरा (आँख) ७८

त

तइँ = प्रति ३१, ६१, ७८
तगट = विस्तर, फर्श २७
तड़कना = गरजना ५६
तड़खना = दरकना ३०
तड़तड़ाना = तड़तड़ की ध्वनि करना ४२
तदाँ = तब, वहाँ ३१, ३८, ५२ ७८
तन = शरीर २४
तलक = तक ५०, ६०
तल सिर होना = सिर नीचा करना ४६
तले = नीचे ६४
ताल = ताल (संगीत) ७५
तास = घंटा ७६
तितने = उतने ६१
तितें = वहाँ ६५
तिय = स्त्री ७६
तिया = स्त्री ६५
तिरजग = तीन लोक २६, ६०
तिरलोक = तीन लोक ७४
तिरिया = स्त्री ६५
तिल = क्षण ७४, ७४
तिल = शरीर का श्याम चिह्न ६८
तिस = उस ३६, ४०, ५१

तिसकर = उसका ४१
तीजा = तीसरा ४६
तीर छानना = तीर बरसाना ६९
तीलक = तिलक ७७
तुटना = टूटना ६४
तुमना = तुम्हें ८२
तुरँग = घोड़ा ४३, ५९
तुलँग = इच्छा ४२
ते = से २४, ३५, ५२, ७४
तैसी = जैसी, समान ५६

थ

थाँबा = स्तंभ ५१
थाकना = थकना ९३
थाल = थाली ५२
थाला = थाली ७८
थोका = नाज ४३
थें = से ४२

द

दंड = भुजा ९३
दंडी = डंडी (तराजू) ७८
दंद = शत्रुता ८४
दंदा = शत्रु ३७, ४३, ६३
दड़ना = घुसना, छिपना ४२, ४४
दड़ाना = डाटना ५९
दरपन = आइना ७४
दरियाव = समुद्र ४२
दरूना = तरोना ७६
दसन = दाँत २३, ७८, ९४
दागना = जलाना ८६
दाटना = डाटना ६२
दाट्या = डाटा ८६
दाड़िम = अनार २८
दालना = डालना ८१
दिगर = दूसरा ६३
दिपाना = चमकाना ८१
दिया = ३६
दिरग = दृष्टि ७४
दिबाल = भित्ति ६४
दिसना = दिखाई देना ३८, ४८ ६२
दिसाना = दिखाना २३
दिस्या = दिखाई दिया ३१
दिष्ट = दृष्टि ४७
दीठना = दिखाई देना ५०
दीस = दिवस ५१, ५२
दुगल = दुगना ५१
दुर = दो २२, ७५, ७६
दुराई = बड़प्पन, बड़ाई ३४
दूतिन = सौतें ५७, ८१, ८४
दूतिया = सौत ३३, ३३
दोल = झूला, पालना, चाल २६, ३४
दोल = पुष्प विशेष ५३

ध

धँडोरा = ढिंढोरा ७२
धँसना = घुसना ९३
धड़धड़ाना = घबराना, चटचटाना ४१
धड़ी = मिस्सी की परत ७८
धन = युवती ६९
धमकना = दौड़ना, पहुँचना ७७
धरत = धरती, पृथ्वी ४७, ५०, ९१
धरतिया = पृथ्वी ४०
धसना = घुसना ६८
धाक = आतंक ४७
धात = भाँति, प्रकार ७०, ७९, ८४
धाया = दौड़ा ३३
धुँड़ना = ढूंढ़ना ७५
धुजना = काँपना २४
धूजना = काँपना ४३
धूर = श्रेष्ठ ६५, ९०
धूरी = धूल ८१

न

नक = नख ७०

नजीक = निकट ५६
ननकी = छोटी ५७
नन्हा = छोटा ४८
नमन = नरमी ७६
नरमी = कोमलता ६२
नवल = नया, नवीन ५५
नवा = नवीन ५६
नवाना = झुकाना ३०
नाचक = (?) ७७
निछल = स्वच्छ, निर्मल २५, ५४
निझल = पवित्र, स्वच्छ ४८
निपाना = उत्पन्न करना, उपजाना २५, ३०, ६१
निपाया = निपजाया, उपजाया २६
निबल = निर्बल ३२
निरवाला = निराला ७८
निस = रात ५३
नोठुर = निष्ठुर ७२
नेह = स्नेह ८३

प

पंक = कीचड़ २७
पंखी = पक्षी २८
पखेरू = पक्षी ३८
पठाना = भेजना ३०, ६२
पड़ना = पढ़ना ४५
पत = प्रतिष्ठा ३२
पताँ = पताकाएँ ५७
पत्तर = पत्ता ८१
पदमिनी = पदमिनी ७७
पन = किन्तु ६३
पनवाना = बदनाम होना ७४
पय्याँ = पाँव ६५
परकाट = चोट, तलवार का घाव ४५
परकास = प्रकाश ७५
परगट = प्रकट ६६
परताब = प्रताप ७७
परधान = प्रधान ४०
परना = पड़ना ५४
परमल = सुगन्धि, सुगन्धित ५३, ५४, ७५
परस = पारस ३६, ८४
परान = प्राण ७०
परिमल = सुगन्धि ५१
पल = क्षण ४७
पलख = पलक ३६, ६६
पलाना = चीखना, चिल्लाना, बुरी तरह गाना ५७
पागना = पग रखना ८६
पाँच = पंचरत्न (स्वर्ण, हीरा, लीलम, लाल मोती) ५४
पाच = हीरा, पंचरत्न („) २५, ८७
पाट = दरवाजा ६३
पाड़ना = डालना २५
पात = पत्ता ५०, ५४, ७८
पाता = पत्ता २८
पान = पत्ता ३४
पाया = नींव ५०
पारंबी = वटवृक्ष की जटा ८१
पावक = आग ४१
पिंजना = धुनना ७५
पिई = पी ३५
पिन = ? २८
पिन्हाना = पहराना ६०
पिरत = प्रीति ६८, ७१
पीतपाल ∴ प्रेमी ६५
पीर = पीड़ा ८५
पीव = प्रिय ३७
पुरी = नगरी ३३
पूर = बाढ़ ४४
पूरना = भरना ३४
पेखना = देखना ६३
पेड़िया = वृक्ष ३७
पैनना = पहनना ५२, ७७

फ

फंद = फंदा, जाल ८४

फटाखा = पटाका ६५
फतर = पत्थर ४६
फलक = पटल ६८
फाँक = पंखड़ी (फूल) ५३
फाँज = ? ६१
फुयारा = फुहार ५७
फूंद = फूंदा ६३

ब

बँद = बंधन ३३
बँदना = बंधना ८३
बँदी = बाँधी ३१
बक = बगुला ६४
बचन = वचन ६५
बट = बाट ५२, ७०
बढ़ावा = वृद्धि ५२
बधावा = मंगलगीत, बधाई का गीत २५, ५७
बरन = रंग २२, २५
बसंदर = अग्नि ४४
बहाँ = बाँह ५७
बाँचना = बचना ३१
बाज = बिना ८३, ८५, ८६
बाट = रास्ता ६२, ८६
बारिक = पतला ७३
बाल = युवा २८
बालेवाल = पूरी तरह ८८
बाव = हवा २४, ४३
बास = गंध २८
बिकल = बेचैन ५६
बिछोहाकारी = वियोगकारी ८६
बिरस्पत = बृहस्पति ८०
बिस = विष ७१
बिसरना = भूलना ४४
बुड़ बुड़ा = बुदबुदा (पानी) ४२
बुद = बुद्धि २८, ४०
बूज = बूझ ६२
बेकल = बेचैन ७४
बेकस = निःशक्त ४२
बेदर = ? ७८
बैन = वाणी ६३
बिदंग = मृदंग ६६

भ

भँवर = भौंरा २७
भड़कल = दुर्गद्वार ५८
भया = भय ३६
भया = भ्राता ३६
भरम = भ्रम, रहस्य ४१
भाँत = प्रकार ३६, ६८, ७४
भागीरती = भागीरथी, गंगा ७६
भान = सूर्य ७०
भाना = डालना ३१, ८०
भाना = अच्छा लगना ८३
भार = बहार, शोभा ६५
भारी = बोझल ६३
भाल = माथा ७७
भाव = ढंग, अदा ६६
भिनी = भीनी, सुगन्धित ७३
भिबूती = भस्म ८१
भुइँ = पृथ्वी ५४
भुरू = भौंह ८१
भूकन = आभूषण ७२
भूनाग = शेषनाग ४४
भूम = भूमि ४४
भूमिया = भूमि ३७
भेक = वेश ८१, ६५
भेतर = श्रेष्ठ ४६
भोगिया = भोगी ३४
भौंर = भौंरा ४१
भौ = बहुत ७४

म

माँग = माँग (सिर की) ७६
माग = मार्ग ५६
मानिक = माणिक २५

माती = मस्त ३५, ५६
मान = घमंड ३८
मान = आदर ७४
माला = गलेका एक आभूषण ७८
मिठाई = मिठास २६
मिरगिया = मृग ३६
मिल्हना = मिलना ६६
मुंजल = सेंधीका फल ५४
मुक = मुख ६०
मुकड़ा = आकृति ३३
मुकुत = मोती ६४
मुज = मुझ ८१
मुया = मृत ३०
मुरझना = मुरझाना ४१
मूँ = मुंह ६२
मेग = मेघ, बादल ६३
मेहरे करतार = ईश्वर की दया ६०
मोसूँ = मुझ से ६३
मोहन = प्रिय ६५, ६६
मोहन = प्रेमिका ७५
मोहिया = मुग्ध करने वाला ३४
म्याने = में २८, ३४

य

यकंग = अकेला ६२
यता = इतना ७०, ७४
यथी = इतनी ५७
यूँ = इस तरह २७
यू = यह २२
येती = इतनी २७

र

रँग रँग = रंग बिरंगा ४६
रँभा = रंभा (अपसरा) ५७
रगत = रक्त ४४
रज = राज्य ४४
रसत = पंक्ति २३
रसन = जीभ २३, ३३, ३६, ६६
रसाल = सरस, मधुर ६५
राय = राजा ३७
रावत = वीर ४०
रीज = प्रेम ७२
रीत = रीति, ढंग ८०
रूँ = रोम ७४
रूँ रूँ = रोम रोम ४६
रेंवती = रेवती (पुष्प) ५३
रेका = रेखा ८१

ल

लइ = बहुत ७७, ८१
लकड़ = लकड़ बग्घा (?) ६४
लख = लाख ८४
लग = तक २४, ३१, ३३
लगन = लग्न, मुहूर्त २७
लाग = चोर मार्ग, मकान पर चढ़ने का लगाव ५८
लाज = लज्जा ५१, ८६
लाजना = शरमाना ५२
लाल = प्रिय ७३
लालन = प्रिय ८६
लावक = लगाव, प्रेम ८१, ६०
लिकना = लिखना ७२
लेखना = देखना ५०, ६३
लोभिया = लोभी ३८
ल्हऊ = रक्त ८४

व

वई = वही ३१
वझन = ओझल ५१, ५६
वते = उतने ४४
वरक = वर्षा २६
वस = वश ४१
विरद = यश ४८, ५७
विरह = वियोग ४१
वाँ = वहाँ २४, ७६, ८०
वेधन = वेदना ८५

स

सँगात = साथ २४, ८४
सँवरना = सजना ५२, ७२, ७८
सँवार्या = सजाया २४
सकल = सब २५, ८२
सकला = संपूर्ण ३८
सकली = सब २३
सगरी = संपूर्ण ६४
सचा = सच्चा ३४
सटना = डालना, पटकना, रखना २५, ३५, ४३, ५७, ६१, ८५
सरना = पूरा पड़ना, बीतना ८३
सरीका = समान ८६
सभू = प्रातः ३१
सभों को = सबको ३३
सम = समान ५०
समदुर = समुद्र ८१
समदूर = समुद्र ६७
समुद्र = समुद्र ८१
सरग = स्वर्ग २४
सरन = शरण २६, ६६,
सराया = प्रशंसित ३३
सलकना = सरकना ४६, ७६,
सहाबी = हज़रत मुहम्मद के साथी, प्रभुत्व ६०
साँई = मालिक ३८
साईं = मालिक २६, ३६
साजना = सजना ४६
सात = साथ ६८
सामिया = स्वामी ३६
सारका = समान ४५, ५४, ६६
सार होना = सवार होना ४३
सारे = सर्वत्र ६३
सिंगी = शृंगी ८१
सिकाना = सिखाना १००
सितराना = इतराना ५६
सिना = छाती ५७
सिरीजन = प्रिय ७३
सिस = शीश ७१
सिलफूल = सिरका आभूषण ६६
सुद = शुद्ध, स्वच्छ ७८, ८१
सुद = याद, चेतना ४५, ७१
सुधन = युवती ६६, ७०
सुरंग = सुन्दर ७८, ७६
सुरपाल = दिक्पाल ४२
सुरिज = सूर्य ७६
सुरीजन = प्रेम ८०
सुहाना = शोभित ४७
सुहानी = सुन्दर ७५
सूका = काजल का चिह्न (आँख में) ७५, ७८
सूर = शूर ३६, ४६
सूरिज = सूर्य ७०
सूरिया = सूर्य ६८
सेंती = से २६
सेती = से ३३, ४३
सेते = से ६३
सेवकी = दासी ७२
सेस = शेष नाग ५४
सैन = इशारा ६८
सोंदल = चंदन ५६
सोंहार = संहार, नाश ३७
सोहना = शोभित होना ७८, ६३
सौं = सौगंध ८१
सौत = सपत्नी ७४
स्यारे = सब २८

ह

हँस = हंस ३४
हक़ = ईश्वर, सचाई ६५
हकारा = आकार ५६
हट = जिद ३५, ७२
हड़बड़ाना = भयभीत होना, घबराना ४२, ४३, ४५

हत = हाथ ४६, ७७
हमन पर = हम पर ५६
हमना = हमें ८२
हरन = मृग ३५
हलद = हल्दी २७
हवाई = एक आतिशबाजी ६५
हाँस = हँसली (गले की हड्डी) २७
हात = हाथ ८०
हात चड़ना = मिलना ४२
हावे = कारण ७४
हित = प्रेम ७४
हिया = हृदय २८, ३७, ७१
हैहात = हाय हाय ८३
होर = और ४१
होलर = प्रिय ५२
हौंसना = प्रोत्साहित होना ६५

अरबी और फ़ारसी
(तत्सम तथा तद्भव)

अ

अंगुश्त = उँगली २६
अंजाम = परिणाम ८६
अंजुमन = सभा २५, ७३
अंबरी = अंबर नामक सुगंधित पदार्थ की सुगन्धि वाला ६१
अंबिया = सन्त ३७
अग़निया = धनी ३६
अज़ल = युगादि २६, ३६, ६०, ६४, ७४
अज़ा = लड़ाई ५६
अज़ार = पीडा ५६
अतक़िया = परहेज़गार, धर्मात्मा ३८, ३६
अता = प्रदान ३६
अतारिद = बुध ५५
अत्तारख़ाना = गंधी की दूकान ७५
अदल = न्याय ३३
अदालत = न्याय ३८
अदू = शत्रु ३२, ३६, ३८, ४३
अनवर = प्रकाशमान ५७
अनासिर = महाभूत २४
अफ़ज़ल = श्रेष्ठ ४६, ५४
अफ़ज़ूँ = अधिक ३२
अफ़सर = बड़ा, मुकुट ८२
अफ़सूँ = जादू ४४
अफ़सूँगर = जादूगर ४४
अबद = अनंत ३६
अब्र = बादल २७, ६०
अमल = आचरण ८६
अयाँ = प्रकट ६०
अरबाबे दवल = धनी लोग ५१
अरूसी = वधू ४८, ५२
अरायश = शोभा सजावट २७, ५७
अलम = ध्वजा ३८, ६०, ६१
अवल = पहले, प्रथम ६७
असरार = भेद ४०
असल = शहद ४४
असा = दण्ड ४४
अस्पंद = नज़र उतारने के लिए प्रयुक्त होने वाला राई जैसा दाना ४१, ८१
अस्प = घोड़ा ४३
अस्फ़िया = पवित्र व्यक्ति ३७
अश्क़िया = बुरे लोग ३७
अहकाम = आदेश ३१
अहमद = हज़रत मुहम्मद २६
अहले सुख़न = कवि ६२

आ

आग़ाज़ = प्रारंभ ८६
आतिश = आग २५, ४३
आफ़ताब = सूर्य ६०
आफ़रीं = प्रशंसा
आब = पानी २४
आबरू = प्रतिष्ठा ६७
आरिफ़ = ईश्वरज्ञ ८८
आल = बेटी की सन्तान ८८
आलम = संसार २६, ५८, ६०, ६४
आला = श्रेष्ठ ३०, ६१
आसाँ = सरल ४१, ४५, ६४

कुहन = पुराना २२
कूजा = प्याला ५४
कोकस = मेमार ५७

ख

ख़ंजर = एक प्रकार की कटार ४४
ख़जिल = लज्जित ५३
ख़तर = ख़तरा ५१
ख़म = झुका हुआ ३८, ५७
ख़लल = बाधा ५२
ख़ाक = मिट्टी २५
ख़ाब = स्वप्न, नींद ४३
ख़ासोआम = बड़े छोटे (लोग) ८६
ख़िदमत = सेवा ४०
ख़िलवत = एकांत २४
ख़ुमख़ाना = मदिरालय २४
ख़ुमार = नशा ३५
ख़ुम्मार = शराबी ४२
ख़ुसूसन = विशेष रूप से ५३, ५८
ख़ुशअदा = नाज नखरा करने वाला ५८
ख़ुशक़द = अच्छे क़द का ५१
ख़ुशतर = अच्छा ८२
ख़ुशनवीस = अच्छे अक्षर लिखने वाला ६२
ख़ुशनुमा = शोभास्पद ८६
ख़ुशमग्ज़ = प्रसन्न २८
ख़ुशवज़न = अच्छे छन्द वाली (कविता) ८७
ख़ूब = विशेष ८०
ख़ूबी = विशेषता ७६
ख़ोय = पसीना ७५, ७७
ख़ोशे = गुच्छे ५४

ग

ग़नीमत = लूट का माल ६४
गर = यदि ४१
गरचे = यद्यपि ४१
गर्द = धूल ४३
ग़ल्तान = सुधबुध खोया हुआ, लोटता हुआ ४२
ग़व्वास = गोताखोर ४२
गिरह = गाँठ ४२, ६०
ग़ुंचा = कली ८१
गुनाह = अपराध ५८
गुमराह = पथभ्रष्ट २६, ५०
गुमान = घमंड ५६, ६४
गुल = फूल, गुलाब का फूल ४१, ५७, ७६, ७५, ७८
गुलज़ार = चमन, उद्यान ७५
गुहर = मोती ४७
गोया = मानो ४६
गौहर = मोती ८७

च

चंद = थोड़ा २४
चमन = वाटिका ५४
चश्मा = स्रोत ७०
चारुमी = चतुर्थ ४७
चिला = प्रत्यंचा ७७
चंगल = पंजा ७७

ज

जंग = युद्ध ६१
जदवल = चित्र का हाशिया ५०
ज़फ़र = विजय ६०
ज़बाँ = जीभ ८७
जम = जमशीद नामक बादशाह, स्थायी टिकाऊ ५७
ज़र = स्वर्ण ४७, ७१
ज़रहल = स्वर्ण द्रव ५०, ५४
ज़री = ज़रदार, सुनहरा २७, ५७
ज़रीना = सुनहरापन ५२
ज़रीना = गहना ५४
ज़र्द = पीला ४६
ज़र्फ़ = पात्र, बर्तन ५४
जलालत = शान ४२
जश्न = उत्सव २७
जहन्नम = नरक ६२

जहादे अकबर = धर्मवीर ६१
जहाँ = संसार ३८
ज़ात = व्यक्तित्व ३८, ८२
ज़ाते बाबरकात = शुभ व्यक्तित्व वाला ८७
जाम = सुरा, प्याला ५०, ६५, ७८, ८८
ज़ाहिर = प्रकट ५४
ज़ाहिरी = बाहरी, दिखावटी ६०
जामाँ = वेश ५७
जिया = प्रकाश ३५
जिरह = कवच ६०
जिस्म = शरीर ५१
ज़ुबाँ = जीभ ६४
ज़ुल मिलन = ईश्वर ४
ज़ुल्फ़ = बालों की लट ७१
ज़ुल्फ़ेकार = अली की तलवार का नाम ६०
ज़ुल्मात = अन्धकार ४०
ज़ुहरा = शुक्र (ग्रह) ५४
ज़ुहल = शनि (ग्रह) ५५
ज़ेबा = सुन्दर ८८
ज़ेह = देहली (घर की) ५०
ज़ोरावर = शक्तिशाली ४४
ज़ोरे जंग = युद्ध का जोर ६१
ज़ौक = प्रसन्नता २६, ४८

त

तक़सीर = परिणाम, जादू ३६, ७८
तख़्त = सिंहासन ६५
तग़ाफ़ुल = उपेक्षा ४५
तजामुल = सुन्दर, शानदार ५२
तनबी = खिड़की ५१
तबक़ = स्तर २४
तबक़ = बड़ा थाल ६३
तबला = डिबिया २३
तबा = स्वभाव २२, ४१, ४५, ४६, ७४
तमाम = पूर्ण ५५ ५६
तवल्लुद = जन्म ३०
तशबीह = उपमा १४
तशरीफ़ = वेश २७
तहवील = अधिकृत ५१
तहसीन = प्रशंसा ४६
ता = जिससे ५५
ताक = कमान (धर) ५०
ताज = मुकुट ६६, ७०
ताजी तर्ज़ = नई शैली २२, ८२
ताब लाना = धैर्य रखना ४३
तारीफ़ = प्रशंसा ४५
ताल मँदल = ताल और मँदला (वाद्य) ५५
तालीम = शिक्षा ४७
तावीज = ताबीज ४६
तासीर = गुण ४४
तासीरे सीमिया = परकायप्रवेश की विद्या ३५
तुर्क ताज = वीर ६१
तूतिया = सुरमा ३४
तूबा – स्वर्ग लोक का वृक्ष विशेष ५१
तेग = तलवार ३७
तोहफ़ा = भेंट ३०

द

दप = ढप २८
दबीर = लिपिक ५५
दर = द्वार २३
दर्देसर = परेशानी ४४
दर्स = अध्ययन ४५
दस्त = हाथ ७७
दस्तूर = नियम ६०
दह्शत = आतंक ४२, ४४
दह्हुम = दशम ४७
दाम = जाला ७६
दायम = स्थायी, शाश्वत ३६, ४८, ७३
दीन = धर्म २६, ३३, ३७, ४७
दुनिया व दीं = संसार और धर्म
दुरजक = पेटी ५७
दुर्रे अदन = अदन नामक स्थान का मोती २३
दुलदुल = हजरत अली का घोड़ा ४३, ४५

न

नंग = लज्जा ५६
नक़्क़ाश = चित्रकार ४१
नज़ाकत = कोमलता ७५
नज़ारा = दृश्य ७०
नबी = हज़रत मुहम्मद, ईश्वर का सन्देश वाहक ५८
नरगिस = पुष्प विशेष, जो आँख का उपमान है २८
नर्मतर = कोमलतर ७६
नसब = वंश ६१
नसीहत = उपदेश ७२
नह्‌हुम = नवम ४७
नाखुन = नख ४४
नाज़ुक = कोमल ६६
नाबात = मिश्री ७१
नात = हज़रत मुहम्मद की प्रशंसा से संबंधित कविता २६
नादिर = अलभ्य ४०, ४६ ७६
नामदार = प्रसिद्ध ६१
नामवर = सिद्ध ६०
नार = आग ६३
नारंज = नारंगी २८
नाल = घोड़े के पाँव में जड़ा जानेवाला लोहे का उपकरण ४३
नालेन = पाद त्राण, चप्पलें ३१
निगार = प्रेमिका ६६
निदा = आवाज़ ८८
निशाँ = चिह्न, लक्ष्य ७०, ७७
निशान = ध्वजा ६४
निहाल = पेड़ ५७
नीमानीमा = आधा आधा, कच्चा पक्का ५४
नुक़्ता = बिन्दु, गुरु ४४
नुक़्तादाँ = रहस्य का ज्ञाता ४७
नुक़रा = राजत ४७
नुबूवत = नबी का पद ३२
नुमायाँ = स्पष्ट, प्रकट ६६
नूर = प्रकाश २४, ३२, ५१
नौ = नया ८०
नौ तर्ज़ = नई तर्ज़ ७६
नौशो = वर २७, ५२

प

पंजुमी = पंचम ४७
पयंबर = पैगम्बर ३०, ६५
पलंग = चीता ४४
पस = बस, समाप्त ३१, ६८
पा = पाँव ६२
पारा — टुकड़ा ५६
पीर = पूज्य, वृद्ध ५४, ६१
पुरफ़नी = जादूगर ६३

फ

फ़ख़्र = गर्व ६१
फ़तह् = विजय ६४
फ़तहो ज़फ़र = विजय ४४
फ़रंग = तलबार ६२
फरक़ = अंतर ७४
फ़रमान = आदेश ४०
फ़लक = आकाश ३८, ७७
फ़हम = बुद्धि, विवेक २२, ६५
फ़िक्र = चिन्ता २४, ५०
फ़िरदौसे बरीं = ऊपरी स्वर्ग ६१
फ़ुज़ूँ = अधिक ६४
फ़ैज़ = कल्याण ८६

ब

बजुज़ = इसके अतिरिक्त ७४
बज़्म = सभा २७
बदन = शरीर २५, ४१
बनफ़्शा = वनस्पति विशेष २८
बना = वर ५२
बबर = सिंह ४४
बयाँ = वर्णन ५३, ५८

बरतर = श्रेष्ठतर ८२
बरपा करना = पैदा करना ८८
बहर = छंद ५४, ५७
बहरोबर = जल और स्थल ४७, ८२
बहार — वसंत ५४
बहारिस्ताँ = वसंतोद्यान २६
बाज़ = पक्षी विशेष ७७
बाज़ू = भुजा ३१
बाज़े = कुछ, कोई ३५
बातिनी = गुप्त ६०
बादे सबा = प्रातः काल की वायु १००
बार = फल २८
बिरादर = भाई ६२
बिस्मिल = घायल ४५
बुत = मूर्ति ३३
बुलंद = ऊँचा ५७
बुलंदी = ऊँचाई ५०
बुलहवस = झूठी लालसा ४१
बेकैफ = बेनशा ३५
बेखुद = मूर्छित ४०
बेताब = बेचैन ४२
बेदिरंग = निष्प्रभ ६२
बेनियाज़ = निरपेक्ष ८८
बेरिया = निराडंबर ३९
बेशुमार = अगणित ५८, ६८
बेहतर = श्रेष्ठतर ८२
बेहिश्त = स्वर्ग २५
बैत = शेर, उपदेश ५४

म

मंजर = दृश्य ५०
मंज़ूर = स्वीकृत ९०
मकतब = पाठशाला २२
मक़बूल = स्वीकृत ३९, ४६
मख़मूर = मस्त, शराबी ६७
मग़रिब = पश्चिम ३२
मग़रूर = घमंडी ४४, ६७
मग़लूब = पराजित ३६
मग़ज़ = मस्तिष्क २३, ३६
मज़मूँ = विषय २९
मज़मून = विषय ८२
मजहर = केन्द्र २९
मजाज़ = काल्पनिक ९०
मजाज़ी = पार्थिव ८८
मदह = प्रशंसा ८७
मनक़बत = हज़रत मुहम्मद के संबंधियों की प्रशंसा ४६
मय = सुरा ६७, ८८
मरजान = मूँगा २३, ८२
मरदूद = तुच्छ, निष्कासित ४६
मरहमत = कृपा ६५
मर्ग = मृत्यु ४४
मर्ज़ = रोग, बीमारी ४७
मर्तबा = प्रतिष्ठा ८८
मलक = देवदूत ७७, ९०
मशअल = मशाल ५३, ७५
मशारिक़ = पूर्व ३२
मश्क = मशक २७
महज़ूज़ = आनंदित, लाभान्वित ८४, ८८
महफ़ूज़ = सुरक्षित २६
महशर = प्रलय दिवस ३१
माना = अर्थ ५४
मारिफ़त = ईश्वर ज्ञान ९१
माशूक़ = प्रेमिका ४१
माहताब = चाँद ६०
मिम्बर = मस्जिद का वह स्थल जहाँ खड़े-होकर उपदेश देते हैं ४७
मिश्क़ी = कस्तूरी के समान सुगंधित ७१
मिस्तर = रेखांकित कागज विशेष २९
मुअम्मा = पहेली ८४
मुअल्लिम = अध्यापक, विद्वान २२
मुकर्रर = पुनः ४६
मुक़ाबिल = प्रतिद्वन्दी ७१, ७४
मुजमर = अँगीठी ८४

मुजमल = संक्षिप्त ५४
मुतह्हर = पवित्र ३०
मुदाम = शाश्वत ६६
मुनव्वर = प्रकाशमान, दीप्तियुक्त २५, ३०
मुनाजात = हजरत मुहम्मद के उत्तराधिकारियों की प्रशंसा २६
मुबारक = शुभ ३०, ५० ६०
मुबीं = प्रकट ६५
मुर्तजा = हज़रत अली ४०, ८८
मुशक = कस्तूरी ५७
मुशरिक = बहु देवपूजक ४३
मुशाता = श्रृंगार कराने वाली, नाइन २७
मुश्क = कस्तूरी २७
मुश्किलकुशा = कठिनाइयों को दूर करने वाला ३९
मुश्तरी = बृहस्पति (ग्रह) २७, ५४
मुसन्नफ़ = विभाजक ६६
मुस्तजाब = स्वीकृत होना ६०
मुस्तफ़ा = हजरत मुहम्मद ८८
मुहतरिम = आदरणीय ९१
मुहिम = अभियान ५९
मेज = चित्रफलक ५०
मेराज = उच्चपद ५०
मेहन = दुःख १६
मेहर = दया ९०
मौजज़न = तरंगित २५
मौजिज़ा = चमत्कार ३०
मौतबर = विश्वसनीय, प्रतिष्ठित ९०
मौसूफ़ = प्रशंसित ३६
मौहूम = अपवित्र ४४

य

याजदह्हुम = ग्यारहवाँ ४७
यार = मित्र ९८
यारी = प्रेम ७४
यूँ = इस तरह ३३

र

रंगगी = रंगीनी २९
रंजूर = दुःखी ६७
रब = ईश्वर ३०
रम्ज़ = रहस्य, भेद ४७, ८४
रश्क = प्रतिस्पर्धा, ईर्ष्या २७
रसूले खुदा = हज़रत मुहम्मद ६०
रहनुमाँ = मार्ग दर्शक ३८
राज़ = रहस्य २९, ६३
राज़दान = रहस्य का ज्ञाता, रहस्य रखने वाला ३६
रायेज़न = मंत्रदाता २५
रास्त = सीधा ५९
राह = मार्ग २९
राहत = छुटकारा, शान्ति ७४
रिसालत = रसूल का पद ३०
रुतबा = प्रभाव, पद २९
रुसवा = बदनामी ८९
रूँ = रोम ६९
रू = आत्मा ३१
रूरिया = दुविधा, आगा पीछा ३५
रूह = आत्मा २५

ल

लज्ज़त = आनन्द ९८
लब = होठ २३, ३५, ३७, ७०, ७१
लबद = होठ ४८, ६९
लश्कर = सेना ६२
लाफ़ = बड़ाई २९
लाला = पुष्पविशेष २९, ७१, ७८
लुआब = थूक ६०
लुत्फ़ = आनंद ४६

व

वज़ा = ढंग ८४
वतन = देश २३
वर = प्रभावपूर्ण ३१
वली = सिद्ध ३६

वस्ल = मिलन ६१
वाज़ = प्रकट, स्पष्ट ४१
वाला = वस्त्र विशेष, धूपछाँही कपड़ा ८७
वाला = श्रेष्ठ ६१
विर्द = जप ७८
विलायत = वली का पद २९
वीरान = जंगल ४२

स

संग आसिया = चक्की का पत्थर ३६
संदल = चंदन ५०, ५१, ५२
सकलेन = विश्व ४५
सक़फ़ = छत ५०
सखावत = दानशीलता, उदारता ३८, ३९
सज़ावार = अलंकार्य ४९
सदर = अध्यक्ष, अध्यक्ष स्थल ३२
सनअत = चतुराई, अलंकार (साहित्य) ४६, ८५
सनम = मूर्ति ५, ६१
सफ = पंक्ति ४३
सफदर सफ = पंक्ति बद्ध ४०
सफय्या = स्वच्छ २९, ६४
सफा = पंक्ति, स्वच्छ २९, ५०, ५१, ७५, ८७
सफीना = साफ ४१
सबब = कारण ५३
समद = ईश्वर ८२, ६१
समन = चमेली २९
सयाना = चतुर ३३
सर = सिर ४१
सरताज = मुकुट ३९,४१
सरफराज = कृतार्थ ६२
सरबसर = श्रेष्ठता ४७
सरापा = नखशिख २७, ४८
सरो = वृक्ष विशेष जो कद का उपमान है २८
सहन = आँगन २५
साफी = स्वच्छ ८२
साबित कदम = दृढ ४१
साया = छाया २१, २६, ४२, ४६
साहबेजमाँ = युग का अधिष्ठाता ४८
सिजदा = अभिवादन २४
सितारा = नक्षत्र २४
सिद्क़ = सच्चा ६०
सिपर = ढाल ६०, ६३
सिफ्त = विशेषता, गुण ७८, ८०
सिलह = शस्त्र ४४, ६०
सीना = छाती २९, ४०, ४१, ८७
सुखन = बचन २४, ६२
सुखन फहमी — वाक्पटुता २९
सुबहो शाम = प्रातः सायम् २४
सुम = घोड़े के पाँव का निचला भाग ४३
सुरखाब = पक्षी विशेष ७७
सुराही = सुराही २८
सुर्ख़ = लाल ३५
सुर्ख़रू = यशस्वी, सफल, (लाल मुँह वाला) ४४
सुलतान = शासक ४०
सूरत = आकृति ४१
सेरंग = रंगीन पत्थर विशेष ४८
सेर = तृप्त ३८
सेहरा = वर के मुँह पर डाली जाने वाली झालर २७
सैफ = खड्ग विशेष ४५
सोफा = पंक्ति ३१

श

शक़ होना = फटना ६२
शजरे जमर्रुद = पन्ने (रत्न) का पेड़ २८
शफ़क़ = उषा और संध्या की अरुणिमा २७, ३५
शबकुशा = रजनी गन्धा ५३
शमशीर = तलवार ३८, ४३
शमशीरजन = खड्गधारी ३७